Chapter-4

चतुर्थ अध्याय

शब्द-विचार

प्रास्ताविक

प्रस्तुत शोध प्रबंध में डॉ. भगवतीशरण मिश्र के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा पर शोध-अनुसंधानपरक दृष्टि से विचार करने का हमारा उपक्रम है। भाषा की सबसे छोटी इकाई स्वन या ध्वनि है। किन्तु ध्वनि का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता। केवल ध्वनि उच्चारण से कोई भाव या विचार स्पष्ट नहीं होता । यथा क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि । यहाँ कोई कह सकता है कि 'न' कहने से नकारात्मकता का बोध प्रकट होता है परन्तु 'न' भी ध्वनि नहीं अपितु ध्वनि-समष्टि है। उसमें दो ध्वनियाँ है न् + अ। इस प्रकार 'न' ध्वनि नहीं अपितु शब्द है। ध्वनि-समष्टि को शब्द कहते हैं। एकाधिक ध्वनियों के योग से शब्द का निर्माण होता है। परन्तु यहाँ पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि मात्र ध्वनि-समष्टि शब्द नहीं होती। केवल उसी ध्वनि-समष्टि को शब्द की संज्ञा प्राप्त होती है जिसमें कोई अर्थ निहित होता है। उदाहरणतया 'गुलाब' शब्द को लीजिए। इसमें छः ध्वनियाँ है - ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ । अब यहाँ पर इन्हीं ध्वनियों से 'लाबगु' ध्वनि-समष्टि भी बन सकती है किन्तु इस ध्वनि-समष्टि को हम शब्द नहीं कह सकते । क्योंकि कम से कम हमारी भाषा में 'लाबगु' से कोई अर्थ ध्वनित नहीं होता है। हाँ, यह सम्भव है कि संसार की कोई अन्य भाषा में इसका कोई अर्थ निकलता हो वहाँ उसे शब्द कह सकते है। इस प्रकार शब्द की विभावना भी भाषा सापेक्ष है। अतः हम कह सकते है कि सार्थक ध्वनि समष्टि ही शब्द है। शब्द के साथ अर्थ जुड़ा हुआ है। इन दोनों में अद्वैत सम्बन्ध है। इसीलिए हमारे यहाँ शब्द को ब्रह्म कहा गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने शब्द और अर्थ को जल और वीचि का उपमान दिया है। जैसे पानी और लहर एक-दूसरे से भिन्न नहीं हो सकते, ठीक उसी प्रकार शब्द और अर्थ एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते। यदि आध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो अर्थ शब्द का प्राण है। जिस प्रकार प्राण के बिना देह का कोई मतलब नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार अर्थ के बिना ध्वनि-समष्टि मृत देह के समान होती है। प्रस्तुत अध्याय में डॉ. मिश्र की औपन्यासिक भाषा के सन्दर्भ में विचार किया जाएगा। भाषा एक पारम्परिक वस्तु है। हमारी आज की भाषा के निर्माण में सदियों का इतिहास पड़ा हुआ है। यदि हम हिन्दी भाषा पर विचार करे तो उसका उद्भव प्राचीन आर्य भाषा - वैदिक संस्कृत - से हुआ है। वैदिक संस्कृत से संस्कृत, संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से उपभ्रंश और अपभ्रंश से आधुनिक हिन्दी तक की एक सुदीर्घ यात्रा इस भाषा ने तय की है। शौरसेनी अपभ्रंश से हिन्दी का जो उद्भव हुआ, उसे भी लगभग एक हजार वर्ष हो गए हैं। इन हजार वर्षों में भी हिन्दी के स्वरूप में कई परिवर्तन आए हैं। जब हम

उसके शब्दों पर विचार करते हैं तो उसमें कई शब्द मूल संस्कृत के मिलते हैं। जिसे पारिभाषिक शब्दावली में हम तत्सम शब्द कहते हैं, जैसे सूर्य, चन्द्र, नदी, दिन, रवि, कवि आदि। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो संस्कृत से कुछ परिवर्तित होकर अब भाषा में प्रयुक्त होने लगे हैं जैसे - भात, कटारी, साँप, नारंगी, कपड़ा आदि-आदि। ये शब्द क्रमशः संस्कृत के भक्त, कर्तरिका, सर्प, नागरंगीका, कर्पटक आदि शब्दों से व्युत्पन्न हुए है। पारिभाषिक शब्दावली में ऐसे शब्दों को तद्‌भव कहा जाता है। भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं जिनके आदी मूल का पता नहीं है, जो लोकबोलियों और लोकबाणियों से उतर आए हैं ऐसे शब्दों को देशज शब्द कहा जाता है। देशज शब्दों में हम कबड्डी, पेड़, पेठा, चूहा, खादी, घपला, झंझट, धब्बा, थोथा, ठेस, ठेठ आदि शब्दों को ले सकते हैं। इन शब्दों के उत्स का अद्यावधि कोई अता-पता नहीं चला है। किसी वर्ग विशेष या जाति विशेष में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है और फिर ये शब्द किसी भाषा में स्थान प्राप्त कर लेते हैं। इसके अलावा भाषा सतत अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आती है। इसके पीछे ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक कारण भी होते हैं। अतः किसी भी भाषा में विदेशी भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इनको पारिभाषिक शब्दावली में विदेशी शब्द कहा जाता है। हिन्दी भाषा में ऐसे कई शब्द मिलते हैं। जैसे-दर्जा, जुकाम, तरबुज, सब्जी, बादाम, फौज, वकील, अदालत, पाजामा, मकान, दीवार, हजामत (अरबी-फारसी); तोप, तमंचा, गलीचा, बावर्ची, दारोगा, कैंची, लाश, चम्मच, चेचक (तुर्की); अलमारी, कमरा, कप्तान, कर्नल, गोदाम, बाल्टी, तम्बाकू (पुर्तगाली); बस, स्टेशन, ट्रेइन, ट्रक, टेम्पा, स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी, क्लास, ग्लास, पेन, पेन्सिल, कार्बन, हॉकी, क्रिकेट, कोट (अंग्रेजी) आदि-आदि। इनके अतिरिक्त फ्रैंच, चीनी, इरानी, जापानी आदि कई भाषाओं के शब्द हिन्दी में आए हैं। विदेशी भाषाओं के अलावा हिन्दी में भारतीय भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं जैसे - हड़ताल, श्रीखंड, गरबा, कटोकटी (गुजराती); लागू, बाजु (मराठी); रसगुल्ला, चमचम, संदेश, छात्रा (बंगला); छोले, भांगड़ा, कुडमाई, कुलछे (पंजाबी) आदि-आदि।

उपर्युक्त पाँच प्रकार की कोटियों के अतिरिक्त शब्दों की एक अन्य कोटि भी मिलती है जिसे हम नवीन शब्द कह सकते हैं। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक परिस्थितियों के कारण भाषा में नित्य नवीन शब्द आते रहते हैं। जैसे - आयाराम, गयाराम, इंडीकेट, बॉबिटींग, बोफोर्स, कटकी, दलबंदी, विद्यासहायक, सरस्वती सहायक, साथी सहायक, साथिन, चेन्नइ, कर्णावती, बाहुबलीनेता आदि-आदि। वस्तुतः ऐसे नवीन शब्दों के प्रवेश के कारण ही किसी भी भाषा की शब्द-सम्पन्ना में वृद्धि होती है।

प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त शब्द-कोटियों के शब्द जिनका उपयोग डॉ. मिश्र के उपन्यासों में हुआ उनका जिक्र हुआ है। इनके अतिरिक्त अनूदित शब्द वर्ण-मैत्री युक्त शब्द, ध्वन्यात्मक शब्द, दृश्यात्मक शब्द, ध्वनि पुनरावर्तन से युक्त शब्द, युग्म शब्द, भाववाचक संज्ञाएँ, नए उपमान, नए रूपक, नए विशेषण, विशेषण-पदबंध, नवीन क्रियारूप, जैसे शब्दों पर भी विचार किया गया है। व्यक्ति, स्थल, पेड़-पौधे, पुष्प, चीज-वस्तु, पशु-पक्षी, प्राणी तथा आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्दों को भी यहाँ विश्लेषित किया गया हैं। डॉ. मिश्र के उपन्यासों में प्राचीन समय से जुड़े हुए शब्द भी मिल रहे है तो दूसरी तरफ कुछ ऐसे शब्द मिलते हैं जिनसे आधुनिक शब्दों की व्युत्पति पर प्रकाश पड़ता है जिनको हमने विशिष्ट शब्दों के अंतर्गत रखा है। विभिन्न विषयों से जुड़े हुए शब्दों को भी हमने रेखांकित किया है।

संस्कृत-तत्सम शब्द

यह पहले कई बार निर्दिष्ट किया जा चुका है कि डॉ. भगवतीशरण मिश्र की भाषा शैली संस्कृत-बहुल भाषा शैली है। यह भाषा-शैली उनके उपन्यासों में सर्वत्र पाई जाती है। किन्तु उनके पौराणिक उपन्यासों में संस्कृत प्रचुरता का आधिक्य मिलता है। डॉ. मिश्र के उपन्यासों में हजारों की संख्या में संस्कृत शब्द उपलब्ध होते हैं। उन सभी शब्दों को सूची युक्त करना न संभव है न समुचित। अतः यहाँ कुछ शब्दों को कुछ विशिष्ट उपन्यासों से उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। अग्नि प्रदत दिव्यान्न, पर्णपुट, औषधि-बहुल उपत्यका, भारो-त्तोलन, कज्ज्ल-कृष्ण शालिग्राम, शिवांश संभूत, सविता, पाद्य-अर्घ्य, यथाज्ञापयतु भवान्, रसोवै सः, वाग्देवी, दशरश-अजिर, त्रिकालदर्शिनी, पुंजीभूत विग्रह, पुण्यतोया सरयू, पुष्प-संकुल सरोवर, दिवसावसान, पाषाणभूता अहल्या, नीलाभ नेत्र, शाखा-मृग, अक्षमाल शोभित, पाटल पुष्प, पवनात्मज, मार्तण्ड, भूमिजा, वामांगुष्ठ, स्वर्णांगुलीयक, केलि-गृह, राक्षसेन्द्र, राजीव नयन, तृणीर, प्रत्युत्पन्न, मतित्व, बालूका राशि, वानर-वाहिनी, कनक भुद्राकार शरीरा, पातालेखरी भगवती, निखिल ब्रह्माण्डाधीश्वर, विगत श्रम, कामारि शिव, अनुग्रहाश्रित, धूर्जटी (शिव), व्यालिनी, विरूपाक्ष विद्युन्माली;[1] सूर्य तनया जमुना, आसन्न प्रसवा, प्रोद्भासित, दुहिता, सहोदरा, अनुजा, पयोद्, पर्यंक, आसव-अरिष्ट, मरुकान्तार, दुरभि-सन्धि, सूचि-भेद बाण, सूचि-भेद्य अंधकार, राज्यक्ष्मा, रोहिणी-सुत, देवांश-सम्भूत, शस्य श्यामला, कर्षयति, यमलार्जुन वृक्ष, कुन्तल, प्रातरात (कलेवा), मृतिका, तृणदान, आक्षितिज निरभ्र, वृक (भेडिया), वृहत्सानुपुर (बरसाना), नासिकारन्ध्र, भू-लुंठित, दुग्ध-पलित विषधर, वर्तिका, अपूप (पुआ),

उत्कोच (घूस), हविषान्न, इक्ष-दण्ड (ईख), प्रदोत, श्लथ, वेष्टित;[2] सीमन्त-रेखा, प्रत्यूष, मेघ-शावक, जलपूरित, जामाता, पुत्रहन्ता पिता, कृतान्त (यमराज), चाक्षुष साक्षात्कार, द्विरेफ, नासा-पुट, रश्मिपुंज सविता, प्रलय-पयोधि, द्योतिका, मातुल (मामा), सिकता कण, हस्तामलकवत, मातुल हन्ता कृष्ण, वृन्दा विपिन, मस्त केहरी पदक्षेप, लांक्षित, स्वर्ण स्यंदन, सविता स्तवन, शंखग्रीवा, मीनावतार, सारथ्य, कंदुक, कातर्य, रिक्त हस्त, हृदय-प्रान्तर, इच्छाकुवशीय, जामातृ हन्ता, पट्टमहिषी, संदेशप्रेषिका, अंशुमाली, ऐन्द्रजालिक, संकर्षण (बलराम), वृषभानुसुता (राधा), पीयूष वर्षिणी, सागर प्रसूता (लक्ष्मी), भेषज्ञ, शेषशायी (विष्णु), श्लथ, भीमकाय भर्लूक, बद्रीक, अक्षत यौवना, पार्श्ववर्तिनी, उत्पल, पद्मगन्धा पुत्री, श्मश्रु, प्राग्ज्योतिषपुर, लक्ष्यच्युति, घृताहुति, द्यूतक्रीडा, मूषक, राधेय (कर्ण), कौन्तेय, पयस्विनी, स्वेद-सिक्त, हविष गन्ध, तुषारापात, सद्यः प्रसूता, अंकशायिनी;[3] मरुद्यान, रक्तपिपासाग्रस्त धरती, रक्तसनाता, श्रृगाल, प्रतिहारी, षोड्शोपचार, भू-स्खलन, प्रोद्भासित, शंखग्रीवा, जलपूरित श्यामल मेघ, शुक्लपक्षे यथा शशि, मार्तण्ड, सर्पासन, पितृचरणेभ्यो नमः, क्षत्राव्युचित, प्रत्यंचाच्युत, कृष्णोपासिका, अन्तरसलिला, आकण्ठ लवलीन, नीरक्षीर विवेकिनी, चिशांकु, स्वर्णशलाका, क्षत्र (साँप का फन), ज्ञानाश्व, वीरभोग्या वसुंधरा, शाखामृग, वल्गाविहीन अश्व, यौवनासद्यः सज्ञिता अभिसारिका, त्रयोदशवर्षीया, डोलायमान, नतग्रीवा, शय्याशायिनी, दुग्ध धवला मानिनी, पुंश्चली, पादाम्बुज, पीताम्बरा वेष्टित, उच्छिष्ट पुष्प, कुलक्षणा वारांगना, काष्ठपेटिका, वस्त्रपेटिका, श्वसुरालय, गतश्रम आदि-आदि।[4]

तद्भव शब्द

जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है जो शब्द मूल संस्कृत रूप से परिवर्तित हुए है उनको तद्भव शब्द कहा जाता है। भाषा में ऐसे शब्दों की संख्या सबसे ज्यादा है। अतः समस्त तद्भव शब्दों की सूची प्रस्तुत करना न तो संभव होगा न उचित ही। अतः यहाँ कुछेक शब्दों की सूची को प्रस्तुत किया जा रहा है। कोष्ठक में उनके मूल संस्कृत रूप को दिया गया है। यथा-गाँव (ग्राम), लाठी (यष्टि), जीभ (जिह्वा), पांत (पंक्ति), शासतर (शास्त्र), तरेता (त्रेता), लछमन (लक्ष्मण), परमेसर (परमेश्वर), बरस (वर्ष), पत्ता (पत्र), माह (मास);[5] कपड़ा (कर्पटक), चाँद (चन्द्र), गिद्ध (गृध्र), सांच (सत्य), परधान (प्रधान);[6] कोख (कृक्षि), जमाई (जामातृ), पाहुन (प्राघृण), आयरन देवी (आरण्यदेवी);[7] चेरी (चेटिका), पालथी (पर्यस्ति), हट्टा-कट्टा (हृष्ट पृष्ट), लाठी (यष्टि), शौभाग्य (सौभाग्य), परसाद

(प्रसाद);[8] पोथी (पुस्तिका), जीभ (जिह्वा), केसो (केशव), करम (कर्म), जनम (जन्म), पुन्न (पुण्य), गियान (ज्ञान), परकाश (प्रकाश), बेयाख्या (व्याख्या), उपदेस (उपदेश), शुकरबार (शुक्रवार), मंतर (मंत्र), अकाज (अकार्य), गाहक (ग्राहक), नेह (स्नेह), पतिवरता (पतिव्रता), सोहागरात (सौभाग्यरात्रि), शासतारथ (शास्त्रार्थ), पाहन (पाषाण), कपूत (कुपुत्र) सलोक (श्लोक), सबद (शब्द), किरसन (कृष्ण), पूत (पुत्र), साई (स्वामी), परवचन (प्रवचन), करम (क्रम), परयास (प्रयास), लगन (लग्न), आपा (अपनत्व), परलय (प्रलय), पांती (पंक्ति), अछत (अक्षत), काठ (काष्ठ), थाती (स्थाति), भाखा (भाषा), नवका (नौका), मिरत्यु (मृत्यु), निरदोख (निर्दोष), सरग (स्वर्ग), गाड़ी (गंत्री);[9] यतन (यत्न), करम (कर्म) किरपा (कृपा), बरत (व्रत), स्यार (श्रृगाल), निरदोख (निर्दोष), छमा (क्षमा), चरितर (चरित्र), सरधा (श्रद्धा) परवेश (प्रवेश), परणाम (प्रणाम), आरसी (आदर्शिका);[10] मेख (मेष), साला (श्यालक), खाल (खल्लः);[11] गृद्ध (गृध्र), दूध (दुग्ध), पाँत (पंक्ति), मय्या (माता), बरसाना (बृहत्सानुपुर), जौंक (जलौकश्), जमुना (यमुना), ऊख (इक्षु), केहरी (केसरी), करील (करीर), अखाड़ा (अक्षवाट);[12] मूसल (मुषल), पत्ता (पत्र), गुफा (गुहा), चौथ (चतुर्थी), चाँद (चन्द्र), रींछ (ऋक्ष);[13] पतोहू (पुत्रवधू), संकराचारज (शंकराचार्य), किरशन (कृष्ण), भासा (भाषा), सिध (सिद्ध), पोथी (पुस्तिका), भूक्खड़ (बुभुक्षितः);[14] लामा (लम्बकः), कारजालय (कार्यालय), कारजकरम (कार्यक्रम), दुरदसा (दुर्दशा), उधार (उद्धार), बरणन (वर्णन), भाग (भाग्य), कपड़ा (कर्पटक) आदि-आदि।[15]

यहाँ यह ध्यातव्य रहे कि अरबी-फारसी के शब्द भी हमारी भाषा में आए हैं। अरबी-फारसी के उन शब्दों को भी तद्भव शब्दों में रखा जा सकता है जो कुछ परिवर्तित होकर आए हैं। यहाँ शब्दों के साथ कोष्ठक में उनके मूल रूप को भी रखा गया है। यथा-उमर (उम्र), सरम (शर्म) अकल (अक्ल);[16] दरद (दर्द);[17] माफी (मुआफी), मिहनत (मेहनत) आदि-आदि।[18]

देशज शब्द

जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता है ऐसे शब्दों को देशज शब्दों की कोटि में रखा जाता है। डॉ. पूर्णसिंह दबास के शोध-प्रबंध 'हिन्दी में देशज शब्द' में देशज को इस प्रकार परिभाषित किया गया है - ''हिन्दी में प्रचलित उन अज्ञातव्युत्पत्तिक शब्दों का नाम देशज है जिनकी निश्चित व्युत्पत्ति तो अज्ञात है किन्तु

सम्भावना की दृष्टि से जो लोक व्यवहार में अज्ञात अथवा ध्वनि अनुकरण के आधार पर निर्मित, अत्यधिक विकार के कारण संस्कृत शब्दों के ही न पहचाने जाने वाले रूप, प्रारम्भिक प्राकृतों अथवा संस्कृत के ही संस्कृत तथा प्राकृत साहित्य में अप्रयुक्त शब्द तथा आस्ट्रिक एवं द्रविड़ आदि अनार्य भाषाओं से गृहीत हो सकते हैं।''[19]

इस प्रकार देशज शब्द के स्थान पर अज्ञातव्युत्पत्तिक शब्द का प्रयोग करे तो अनुपयुक्त न होगा। यद्यपि ऐसे देशज शब्दों की संख्या तो हजारों की है, तथापि यहाँ डॉ. मिश्र के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ देशज शब्दों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है - भेंस, पचड़ा, मोढ़ा, झिड़की, थोथा, रगड़ा, डफली, चुटकी, भसूर, रफूचक्कर, छिछोरी, धांधली, लड़खड़ाना, टुकुर-टुकुर, सकपकाना, बवंडर, उथल-पुथल, सनक, हड़बड़ाना, अचानक, पोपला, कचूमर, बखेड़ा, भोंपू, लड्डू, पोटली;[20] धक्कम-धक्का, गड़बड़, हुलिया, लट्टू, हल्ला-गुल्ला, चम्पत, पापड़, हड़बड़, घिग्घी, बौड़म;[21] चकमक, टांग, झोली, पेड़, अड़ना;[22] लबालब, टकटकी, डुग्गी, हेकड़ी, ढिंढोरा, तिकड़म, उबड़-खाबड़, लूटपाट, धाक, चुनौती, झाड़-फानूस, डिल-डौल, धोखाधड़ी, धड़ाधड़, ढाढस, डेरा, धड़, धड़ाम, घिग्घी;[23] ठिठौली, माथा-पच्ची, सन्न, रोड़ा, भोंचक्का, हक्का-बक्का, धाक, छिछली, जंजाल, अचकन;[24] चीं-चपड़, बवेला, रांड, झंझट, सकपकाना, पोंगा, हक्का-बक्का, चपड़ा, गुंडा, मुस्टंड, फिसड्डी, भुर्ता, खरी-खोटी, सन्नाटा, हड़बड़ी, बाप, लट्टू, चिरौरी, धौंस, गुत्थम-गुत्थ, झुटपुट, चट्टान, भोंचक्का, टांग, ढाढ़स, डेरा, मुंड़िया;[25] पापड़, ढेला, कौंधना, तितर - बितर, घड़ियाल, टाप, नटखट, मखौल, टांग, ढूह;[26] चकाचौध, थुलथुल, धब्बा, तिलमिलाना, गिड़गिड़ाना, चुहचुहाना;[27] धक्का, हल्ला-गुल्ला, धांधली, खोखला, डुगडुगी, गड़बडी, हठ, टांच-टांच फिस्स, खचाखच, तड़ातड़, झोंकना;[28] टकटकी, सख, तिलमिलाना, धमकी, डींग, रूखड़ा, चुटकी, लात;[29] हड़बड़, धड़ाम, बिलखाना कचूमर, टिमटिमाना, धाक, चुटकी, गुलथुल, डींग आदि-आदि।[30]

हिन्दी के कुछ विद्वान 'चक्कर' शब्द को देशज मानते हैं, परन्तु बहुत सम्भव है। कि यह शब्द संस्कृत के 'चक्र' शब्द से व्युत्पन्न हुआ हो। अड़ना, शब्द को देशज शब्दों में माना गया है । कुछ विद्वान संस्कृत के अलम् से उसकी व्युत्पत्ति मानते हैं परन्तु 'अलम्' का 'अड्ड' होना भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से समुचित नहीं जान पड़ता। प्राकृत में अड्डन शब्द मिलता है जिसका अर्थ ढाल होता है। अतः 'अड्ड' से अड़ना शब्द व्युत्पन्न हुआ हो यह सम्भव है परन्तु उसका संस्कृत रूप नहीं मिलता अतः यहाँ उसकी गणना देशज शब्दों में की गई है। उपर्युक्त सूची से यह तथ्य भी प्रकाशित होता है कि देशज शब्दो में ध्वन्यात्मक क्रियाओं से व्युत्पन्न शब्दों का आधिक्य पाया

जाता है। वस्तुतः देशज शब्दों की समस्या भाषाविदों और भाषा वैज्ञानिकों के लिए सदैव एक चुनौती बनी रहेगी क्योंकि जिन शब्दों की व्युत्पत्ति न मिलने के कारण उनको देशज समझा जाता है, कभी कालांतर में उनकी व्युत्पत्ति मिल जाए तो उनका सुमार तद्भव शब्दों में भी हो सकता है।

अरबी-फारसी या उर्दू शब्द

अरबी-फारसी के शब्द भारतीय भाषाओं में दो स्रोतों से आए हैं। एक तो प्राचीन समय से भारतीय व्यापारियों के अरब राज्यों से व्यावसायिक सम्बन्ध थे, अतःउन व्यापारियों के माध्यम से अरबी-फारसी के कुछ शब्द भारतीय भाषाओं में प्रविष्ट हुए। दूसरे, भारत में जब मुसलमानों का शासन विधिवत् स्थापित हुआ तो यहाँ के लोग अरबी-फारसी के परिचय में आए और इन भाषाओं के शब्द, भारतीय भाषाओं में प्रविष्ट हुए। मुस्लीम और मुगल समय में लम्बे अरसे तक फारसी भाषा राज्य भाषा (State language) के रूप में प्रयुक्त होती रही। अतः हिन्दी में उनके शब्दों का आना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। मुगल समय में अरबी-फारसी और हिन्दी के मेल से एक नवीन भाषा का उद्भव हुआ जिसे हम उर्दू कहते हैं। उर्दू में अरबी-फारसी के शब्दों की बहुतायत पाई जाती है। हिन्दी में अरबी-फारसी या उर्दू के शब्द आदिकाल में अमीर खुसरो के समय से पाए जाते हैं। अमीर खुसरो ने तो अरबी, फारसी, तुर्क और हिन्दी को लेकर एक बहुभाषी पर्याय कोश का निर्माण भी किया था।[31] अमीर खुसरों के दो सखून, पहेलियाँ तथा मुकरियों में ब्रज भाषा के शब्दों के साथ-साथ कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द भी मिलते हैं। अमीर खुसरो की हिन्दवी आधुनिक खड़ी बोली हिन्दी का पूर्व रूप है। अमीर खुसरो ने तो भाषा को लेकर कई प्रकार के प्रयोग किए थे। उन्होंने ऐसे काव्यों की रचना भी की थी जिनमें पूर्व पद अरबी-फारसी का हो तो उत्तर पद ब्रज भाषा का। यथा-

''हाल मिस की मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ।
किताबे हिज्राँ नदारम एमां न लेहु काहे लगाय छतियाँ।।''[32]

भक्तिकाल तथा रीतिकाल के कवियों ने भी कहीं कहीं अरबी-फारसी या उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया है। बिहारी के निम्नलिखित दोहे में इजाफा (वृद्धि) शब्द का प्रयोग बड़े करीने से किया गया है।

''अपने अंग के जानि के जोबन नृपति प्रवीण।
स्तनमननैननितम्ब को बड़ो इजाफा किन।।''[33]

आधुनिक काल में जब खड़ी बोली गद्य का विकास हुआ तो उनके प्रारम्भिक उन्नायकों में लल्लुलाल गुजराती, मुन्शी इंशाअल्ला खाँ तथा राजा शिवप्रसादसितारे हिन्द खड़ी बोली की उस गद्य शैली के हिमायती थे जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों की प्रधानता हो। ध्यान रहे महात्मा गांधी भी हिन्दी हिन्दुस्तानी के पक्षघर थे जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों को भी लिया जाय। मुन्शी प्रेमचंद, पांडेय बेचेनशर्मा उग्र, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि कई लेखकों में हमें अरबी-फारसी या उर्दू के शब्द मिलते हैं। यद्यपि डॉ. भगवतीशरण मिश्र की गद्य शैली संस्कृत तत्सम शब्दावली से युक्त पाई जाती है, तथापि यथास्थान उन्होनें अरबी-फारसी या उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया है। ऐसे शब्द उनके पौराणिक उपन्यासों में तो नहीं मिलते, और यह स्वाभाविक तथा यथार्थ भी है। बल्कि यदि होते तो उसे काल विरुद्ध दोष माना जाता। किन्तु उनके सामाजिक और ऐति हासिक उपन्यासों में ऐसे शब्द उपलब्ध होते हैं। इन उपन्यासों में 'पहला सूरज', 'देख कबीरा रोया', 'का के लागूं पांव', 'गोबिन्द गाथा', 'एक और अहल्या', 'नदी नहीं मुड़ती', 'लक्ष्मण-रेखा', 'सूरज के आने तक' आदि-आदि हैं। यहाँ उक्त उपन्यासों से अरबी-फारसी और उर्दू के कुछेक शब्दों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

पहला सूरज

पहला सूरज छत्रपति शिवाजी के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है। उनके समय में दक्षिण में कुछ मुसलमानी राज्य थे और केन्द्र में मुगल बादशाह औरंगजेब की सत्ता थी। शिवाजी का संघर्ष इन्हीं सत्ताओं से था, अतः उपन्यास में प्रसंगानुरूप और पात्रानुरूप अरबी-फारसी के शब्दो का आना स्वाभाविक कहा जाएगा। यथा-मुहाल, निज़ाम, नाबालिग, नेस्तोनाबूद, काहिल, पैगाम, सुभानअल्लाह, बूतपरस्त, तिज़ारत, हुक्म-उदूली, माजरा, आफ़ताब, गद्दार, आगाह, गर्दिश, मुनासिब, बेगमसाहिबा, बा-इज्ज़त, नेकनियती, सिज़दा, शुक्रगुज़ार, खामख्वाह, नमाज़, एहसान-फरोस, हुजूरे-आला, शमा, तशरीफ, ख़ौफनाक, चश्मदीद गवाह, नज़ाकत, मुगल-ए-आज़म, दरबार-ए-आम, जहाँपनाह, दरबार-ए-खास, बेमरव्वौत, तहखाना, आलमगीर, गुस्ताख-निगाहें, तख्तपोशी, नासाद, खिलअत, बादशाहियत, लाजवाब, जानलेवा, वजीरे-आलम, हुजूरे आला, तहकीकात, परिन्दा, फरिश्ता, बेमिसाल आदि-आदि।[34]

देख कबीरा रोया

प्रस्तुत उपन्यास भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रखर क्रान्तिकारी कवि कबीर पर आधारित है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। अतः उपन्यास में अरबी-फारसी के शब्दों का पाया जाना लाज़मी ही कहा जाएगा। यथा-इल्हामी मुहब्बत, इबादत, हिमाकत, रूह, खालिस, जिस्मानी लहू, ज़िबह, नायाब, खुदाई रहमत, काफिर, मजहबी तकादें, सियासी खेल, खुदाई मुहब्बत, गर्द-गुब्बार, अहले-सुबह, महरुम, अल्लाह-ताला, मसीहा-पैगम्बर, हमजोली, मिसाल, तौहीन, औलिया, अजूबा, बुजुर्गवार, बेजा हरकत, तकादा, खुदाई नियामत, खुराफात, परवरदिगार, अहम मकसद, फज़ीहत, रहमो करम, आफ़ताब, मजलिस, खारिज, आलम, दखलअंदाज़ी, दकियानूसी, इजहार, रजामंदी, बर्खुरदार, दरिया-दिल, आवारागर्दी, जायज़, काबिलेबर्दाश्त, हिदायत, मज़ार, मुस्सलम इमान, बादशाहे-हिन्द, बगावत, दाद, हकीकत बयानी, तज़वीज़, गुस्ल, नाचीज़, मजहबपरस्ती, अल्फाज़, परहेज आदि-आदि।[35]

का के लागूं पांव

प्रस्तुत उपन्यास सिक्खों के नौवं गुरु गुरु तेगबहादुर के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है। उनके समय में भी दिल्ली के तख्त पर मुगलों का शासन था। अतः प्रस्तुत उपन्यास में भी अनेक अरबी-फारसी या उर्दू के शब्द आए हैं, जो इस प्रकार है - खता, बियाबान, महरूम, ज़ज़िया, काहिल, शागिर्द, दीदार, इल्हाम, अल्लाहताला, इल्हामी ताकात, आरजू-मिन्नत, इबादत, तसल्ली, मज़हबी कायदे, मुरीद, खुदाई नूर, सलीब, खुशकिस्मत, कदमंबोसी, मुस्तैदी, तलब, बुतपरस्त, नज़र, मुखातिब, हुक्म-उदूली, रूबरू, आमाद्रा, किफायतदारी, रहनुमा, हुक्मनामा, दहलीज, आदमजाद, बाअदब, बामुलाहिजा, बेततीब, तकाज़ा, तवज्जह, इज़्ज़त-अफ़जाइ, अहमियत, शख्सियत, ज़नाज़ा, शानो-शौकत, बेरुखी, जाहिल, जमीन बोसी, दिलोजान, नजर-अन्दाज, शुक्रगुजार,[6] खून-खराबा, हाज़िर जवाबी, आगाह, मुँहताज, जार-बेजार, नफासत, तिलस्म, काबिले-तारीख, इल्हामी करामात, माज़रा, इन्साफ पसन्द, तामिल, इल्म, अहलेकरम, तख्ते-ताऊस, खतामुआफ, शमशीर, इस्लामपरस्त, कलमा, रहनुमाई, तंगदिल, आदि-आदि।[36]

गोबिन्दगाथा

'गोबिन्दगाथा' सिक्खों के दसवें गुरु तथा गुरु तेगबहादुर के पुत्र गोविन्दसिंह के

जीवन पर आधारित ऐतिहासिक या जीवनीमूलक उपन्यास है। उनका समय भी मुगल सम्राट आलमगीर औरंगजेब का समय है और उनका सीधा संघर्ष भी उनसे रहा है। फलतः यहाँ भी अरबी-फारसी के शब्द पुष्कल परिमाण में उपलब्ध हुए हैं। जिनमें से कुछ का उल्लेख हम नीचे करने जा रहे हैं - शहादत, मुखातिब नाकामयाब, दरअसल, नब्ज़, बेमिसाल, इन्सानी मुहब्बत, तख्ते-ताऊस, औकात, बागी, रकाब, खिदमत, खुराफात, गुस्ताख, फरमान, हया, काबिले बर्दाश्त, बे-अक्ल, सजाए मौत, एशो-आराम, आलमगीर, कदमबोसी, सैलाब, गुस्सैल, बावजूद, बर्खास्तगी, खुफिया, नायाब, नौबत, मकसद, जिगरी दोस्त, अल्फाज, काबिज, गद्दीनसीन, अब्बाजान, नाबालिग, नाजायज, बेतजुर्बेकार, अदीब, हिकायतें, परहेज, जिरह, एकरारनामा, शिकस्त, जायजा, मकबरा, मां-बदौलत, मुहय्या, आलमपनाह, जिहाद, तैनात, साहबजादा, सिपहसालार, शाही फरमान, हुक्मनामा, फरार बागी, रुहाई, तकाज़े, आस्तीन, कारवाँ, हम-मजहब, ओहदा, आगोश, दोजख, बेखौफ, मुशाविरा, चोबेदार, मक्कार आदि-आदि।[37]

शान्तिदूत

'शान्तिदूत' उपन्यास महात्मा गाँधी के जीवन पर आधारित है। महात्मा गाँधी के समय तक तो हिन्दी में धड़ल्ले से अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग होने लगा था। और स्वयं गांधीजी भी ऐसी हिन्दी के हिमायती थे जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों का भरपूर प्रयोग होता हो। अतः प्रस्तुत उपन्यास में भी अरबी-फारसी के अनेक शब्द आए हैं जिनको सूचीस्थ करने का हमारा उपक्रम है। यथा-नमकहरामी, मसीहा, काबिले-मुआफ सलामी, मुलाज़िम, आलम, कयामत, काबिलेगौर, मुखातिब, दीवानगिरी, गनीमत, अर्जीदावा, मुवक्किल, नौबत, बेशुमार, मुकदमा, उसूल, सिफारिश, मुआवजा, एलान, तशरीफ, जद्दोजहद, मनहूस, रियासत, रहनुमाई, नागवार, कहर, मवेशी, जुर्माना, जिरह, कैद, हुक्मरानो, असबाब, अलविदा, फहरिस्त, बेमिसाल, नजरबंद, खिलाफत, कायदेआजम, जंजीर, पेशोपेश, मकसद आदि-आदि।[38]

एक और अहल्या

'एक और अहल्या' मिश्रजी का सामाजिक उपन्यास है और सामाजिक उपन्यासों में प्रायः आमफहम की भाषा का प्रयोग होता है इसलिए यहाँ अरबी-

फारसी के कतिपय शब्द हमें मिलते हैं। यथा-इजाजत, मनहूस, गुलदस्ता, इशारा, बकाया, मुश्त, मजाक, बेमिसाल, शायद, आसान, मुवक्किल, लिहाजा, एहसास, लावारिस, सिलसिला, आलम, बेवकूफ, गनीमत, संजीदगी, गुस्ताखी, बालिग, माज़रा, सट्टाबाजी, सौदाबाजी, अक्सर, बेतुका, मुखातिब, वारिश, शिकवा, महज, तसल्ली, नुमाइश, करिश्मे, जायका, काफूर, शक्ल आदि-आदि।[39]

नदी नहीं मुड़ती

'नदी नहीं मुड़ती' भी मिश्रजी का एक सामाजिक उपन्यास है अतः उसमें भी कहीं कहीं अरबी-फारसी के शब्द पाए जाते हैं। यथा मुस्कान, जज्बात, सैलाब, आगोश, विरासत, तख्त, हिदायत, सौदा, शोहरत, गवाह, नाज़नीन, मासूम, दिलचस्प, हरम, अदद, खामख्वाह, नेस्तनाबूद, हर्ज़, हाज़िरी, मंज़िल, नापाक, बेदाग, दरअसल, दामन, गर्क, महफिल, मिजाज, हमउम्र, अंदाज, सबूत आदि-आदि।[40]

सूरज के आने तक

'सूरज के आने तक' उपन्यास भी एक सामाजिक उपन्यास है और उसमें अब्दुल सत्तार नामक एक मुस्लीम किरदार भी पाया जाता है लिहाजा इसमें अरबी-फारसी के शब्द बहुतायत से मिलते हैं। यथा हाकिम, फर्श, जारी, दफा, खैर, इलाका, तकलीफ, लिबास, हाल, तमाशा, ज़रा, मसाला, फसल, मर्ज़, कानून, औरत, अलावा, गज़ब, अव्वल, खुमारी, नजारे, मकबरा, मुखतार, हुजूर, फौजी, अर्ज़, तैनात, मुंसफी , मशगूल, महकमा, गनीमत, मवाद, तौबा, ज़लील, अदना, कायल, नसीहत, तकरार, वाकई, हज़म, मियादी, मकान,गलतफहमी, मात, खलल, वकील, कागज़ात, गायब, गुलाम, अखबार, तावीज़, जमीन, जहर, जोर, बाज़ार, बियाबान, नाज़, कमबख्त, दाग, दरीन्दा, शीशा, खैर, ताज़ा, बेहूदा, गिरह, सीना, निहाल, बाज़ी, मुर्दा, नमक, जख्मी, जवाब, गन्दगी, गर्दन आदि-आदि ।[41]

अंग्रेजी शब्द

अंग्रेजोंकी लगभग ढाइसौ साल तक भारत पर हकूमत रही है और दो सौ से ज्यादा वर्षों से अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का प्रचलन भी हमारे यहाँ रहा है तथा अंग्रेजी हकूमत के दरम्यान अंग्रेजी राज-काज की भी भाषा रही है। बल्कि अभी तक

आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे देश का उच्च स्तरीय शासकीय कार्य अंग्रेजी मेंही होता है। अतः हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक ही समझा जाएगा। फलतः मिश्रजी के सामाजिक उपन्यासों तथा अंग्रेजो के आगमन तक के ऐतिहासिक उपन्यासों में कहीं कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हमें मिलता है जिनको नीचे सूचीस्थ किया गया है।

सूरज के आने तक

ट्रेनिंग, ब्लॉक, बी.डी.ओ., कंट्रोल, बूथ कैप्चर, कैम्प, क्राइस्ट, स्टॉक, माइक, जेल, क्लास, एम.ए., ब्लाउज, टेबल, रिपोर्ट, सीनियर, आनर्स, किलोमीटर, रेलवे लाइन, मलेरिया, स्कूल, फॉर्वर्ड, पास, बी.ए., कट, सींक, कैलेन्डर, होर्न, कॉलर, सुपरवाइजर, जीप, ड्राइवर, स्टार्ट, अरेस्ट, पैंट, नर्स, प्लास्टर, पैन (बाउल), ग्लास, स्टिच, फ्रेक्चर, डॉक्टर, स्टूल, ब्लड़, स्टीम, बालकोनी, बस, कम्पनी, ट्राफिक, एलोपैथी,कोर्ट, एस.डी.ओ., फुट, बूट, टेन्ट, दैट, मन्की, पैंट-सूट, बेसिक ट्रेनिंग, ट्रेन, स्टेशन, रिक्शा, जेलर, कोट, पोस्ट ओफिस, क्रॉसिंग, ग्रैंड, कॉड, कॉलेज, एक्स-रे, आलपिन, माइक्रोस्कोप, सिग्नल, गार्ड, रेड़ियो, टेलिपैथी, टेलिविजन, वार्डन, सीमेंट, हाफ पैंट, पॉकेट, नोट (रुपए का), ट्रक, टैक्सी, सर्किल ऑफिस, एकाउन्टेंट, सुपरिंटेडेंट, बेंच, कालका मेल, ट्यूब्स, पावर, लाउड-स्पीकर, बस स्टैंड, ग्लेशियर, पार्क, ईथर, बॉस, कलक्टर, चैम्बर, सिक्स्थ सेन्स, डेवलप, कोम्बिनेशन, पोजीशन, गेजेटेड़ ऑफिसर, स्टेशनरी, फर्नीचर, कोन्वैन्ट, बी.एस.सी., केस, प्राइवेट, मील, थर्ट पावर, प्रेयर पावर, फुटबॉल, राइफल, स्टैंडर्ड एसेम्बली पार्लियामेन्ट, वोट, ओयसिस, मूड़, फाइल आदि-आदि।[42]

नदी नहीं मुड़ती

'नदी नहीं मुड़ती' की नायिका आधुनिक शिक्षा संपन्न महिला है अतः इस उपन्यास में भी अनेक अंग्रेजी के शब्द पाए जाते हैं। यहाँ एक तथ्य ध्यातव्य है कि अंग्रेजी के जो शब्द पूर्व-उल्लेखित उपन्यास में आ गए हैं उनको यथा सम्भव छोड़ने का प्रयत्न हमने किया है। दूसरी एक बात जो उल्लेखनीय है वह यह है कि शब्दों के सन्दर्भ में सन्दर्भानुक्रम में जो पृष्ठ संख्या हमने दी है उसमें प्रति शब्द एक ही पृष्ठ संख्या दी है, यद्यपि कई शब्द अनेक पृष्ठों पर पाए गए हैं। प्रस्तुत उपन्यास के अंग्रेजी शब्द इस प्रकार है - रिसर्च, मिसेज, विमेन्स होस्टेल, बैड, पेंटिंग्स, हारमुनियम,

ट्रान्जिस्टर, स्विच ऑन, टूर, प्रैक्टिस, मैट्रिक, गैस-पेपर, आई.ए., प्रोफेसर, ऑपरेशन, अपटूडेट, हैट, इंजीनियर, ऑडर्ली, पॉवर हाउस, सिक्स्थ सेन्स, एक्सेप्शन, प्रेसीडेंट, एक्सिडेंट, फिजिक्स, एटम, एलेक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रोन, एनर्जी, सेकुलर इन्टयूशन, एस.पी., बी.एल., ट्यूशन, कोचिंग, पार्टी, सैशन, एम.एल.ए., एम.पी., कार्ड, लॉन, जूनियर, युनिवर्सिटी, रिज़ल्ट, जज, की-बोर्ड, बाथरूम, पोर्टिको, ग्रेजुएट, डॉलर, पाउन्ड, समथिंग, नथिंग, रिऐक्शन, स्टडीरूम, डिस्टिंक्शन, माइक्रोस्कोप, रिकार्ड कीपर, डबल स्टैंडर्ड, वाइसचान्सलर, डी.लिट्, मुगल गार्डेन, रोज गार्डेन, आदि-आदि।[43]

एक और अहल्या

'एक और अहल्या' भी सामाजिक उपन्यास है उसका भी परिवेश भी आधुनिक है। उपन्यास का नायक मनीष एक आई.ए.एस.ऑफिसर है। अतः यहाँ भी अंग्रेजी के कई शब्द पाए जाते हैं। शब्दों के पुनरावर्तन को यथासम्भव टाला गया है। प्रस्तुत उपन्यास में हमें अंग्रेजी के निम्नलिखित शब्द उपलब्ध होते हैं। चाइनीज वाल, पुअर स्टुडेंट्स्, सस्पेंडेड, न्यु इयर्स डे, हार्डिज पार्क, जू, जूलजिकल गार्डेन, गंगा ब्रिज, रेक्सिन, किचन, पिक्चर, सिनेमा, सरप्राइज, एम.बी.बी.एस., क्लिनिक, ग्लैमर, इडियट बॉक्स, चैनल, इलेक्ट्रोनिक, हीरोइन, फूल पैंट, साइको सोमेटिक, सोमा, जनरल नॉलेज, ब्लैक एण्ड व्हाइट टी.वी.,वी.डि.ओ. सेट, एयरकूल्ड, मारुति जिप्सी, रौल्स रॉयस, रॉक एण्ड रॉल, एम्बेसडर कार, युकलिपटस, रेडियोग्राम, कैरम बोर्ड, पर्वर्सन, विमेन्सलिब, डॉक्टरेट, थीसिस, डिमांस्ट्रेटर, एम.फील., हार्ट एटैक, कैप्सूल, इन्सुलिन, मार्निंग वाक, प्रोग्रेसिव, ओक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, हेरोइन, रजिस्टर्ड मैरिज, डायवोर्स, कॉल गर्ल, फेयरवेल, कार्डीगन, चीपनेस, आदि-आदि।[44]

लक्ष्मण रेखा

'लक्ष्मण रेखा' उपन्यास पर्यावरण के विषय पर आधारित उपन्यास होने के कारण उसमें अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होना स्वाभाविक है। यहाँ कुछ शब्दों को दिया जा रहा है। फिलोमिना अंटिबायोटिक्स, क्रोमीन, पोलिथिन, हनीमून, आफ्टर-शेव, नाइट सूट, लीप-रीडर, ट्रे, चाइना पीक, डेंटिस्ट, कंपीटिशन, किंगमेकर्स, ब्रानिया, नेम-प्लेट, लेन्स, आइलैन्ड, डिस्फिगर्ड, हेड लाइन, पामिस्ट्री, कीरो, सेन्ट फ्रांसिस, इन्साइक्लोपिड़िया, डबल हेड लाइन, टू इन वन, आर्गूमिन्ट, ओपियम, आईडियोलोजी,

प्रोलेटेरिएट, ब्रेन-वोश, रूममेट, आइ.एफ.सी., आइ.ए.एस., आइ.पी.एस., एलायड, एयर कंडीशंड, सेक्रेटरीज, कैबिनेट मिनिस्टर, डायनामाइट, पारासाइट, स्मोक, टॉरपीडो, कन्फेसन्स, लाइसेन्स, वीसा, पासपोर्ट, ऑक्सीजन, कार्बनडाइओक्साइड, नाइट्रोजन, थियेटर आदि-आदि।[45]

बंधक आत्माएँ

'बंधक आत्माएँ' डॉ. मिश्र का एक चमत्कार पूर्ण उपन्यास है। इसे हम आत्मकथनात्मक उपन्यास की कोटि में भी रख सकते हैं। लेखक स्वयं एक आइ.ए.एस. ऑफिसर है और बिहार सरकार तथा भारत सरकार के अनेक महत्वपूर्ण विभागों में उच्च अधिकारी की भूमिका निभा चुके हैं। डॉ. मिश्र एक आस्तिक प्रकृति के व्यक्ति है और देवी-देवताओं और मन्दिरो में उनकी आस्था है। तंत्र-मंत्र और आध्यात्मिक चमत्कारों में भी वे विश्वास करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने ओमकाली बाबा नामक एक चमत्कारी सिद्ध पुरुष के साथ के चमत्कारपूर्ण अनुभवों का वर्णन किया है। लेखक एक उच्च अधिकारी है अतः उनसे वर्तुलित मित्र-मण्डल आदि भी शिक्षित है, अतः अनेक स्थानों पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग यहाँ भी हुआ है। यथा स्मार्ट, एडिशनल चार्ज, पेकेट, एकाउन्टण्ट, हेल्थ ऑफिसर, वाटर वर्कस, सिविल इंजीनियर, एण्टी चैम्बर, ड्राइंग रूम, मार्निंग शो, पोर्टिको, टी.टी.इ., आउट हाउस स्मगलर, डिस्ट्रीक्ट मेजिस्ट्रेट, कॉलगेट, कैप्सटन सिगरेट, ब्राण्ड, टार्च, लाइटर, टाउन हॉल, फिंगर प्रिन्ट्स, सर्किट हाउस, इन्डस्ट्रीयल गेस्ट हाउस, इन लाइटर वेन, क्लाथ मार्केट, कोटिंग, केश-मेमो, मेगेजीन एडिटर आदि-आदि।[46]

पहला सूरज

'पहला सूरज' महाराज छत्रपति शिवाजी के जीवन पर आद्धृत ऐतिहासिक उपन्यास है। शिवाजी के समय से पहले ईसाई मिशनरी धर्म प्रचारकों का भारत में आगमन शुरु हो गया था। शिवाजी के पितामह मालोजी की भेंट ऐसे ही एक मिशनरी फादर रेवरण्ड स्मिथ से हुई थी। फादर स्मिथ कई बार मालोजी, दादा कोंडदेव तथा शिवाजी से मिलते हैं। अतः उपन्यास में कई स्थानों पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिलता है। यथा-गारन्टी, रि-राइटींग, फिक्शन, सेकुलर, मिशनरी वर्कर, फिल्ड़ इरिगेट, रिस्पेक्ट, क्लाउड़, ग्रेट सेंट, फालोड, चेप्टर, रीलिजियस, प्रेयर, फार्चुनेट, प्रिस्ट, कन्ट्रीमेन, मन्की गॉड (हनुमान) इम्पोज़, बोल्डर्स, डेडिकेशन,

प्रिचर्स, रेसलर्स, कन्वर्जन केम्पेइन, ह्यूमेनिटी, डायाबिटिस, स्लेवरी, डोमिसाइल, फर्टिलाइजर, प्लन्डर, इरिगेशन, सीड़, लेंड रेवन्यू, एक्सप्लायटेशन, रिवाल्यूशन, सेक्रिफाइज़, एड्वान्टेज, कनफिडंशियल, कन्वर्ट, रेफरन्स, मैरिड लाइफ, कांग्रेचुलेशन, लीगल राइट, वेल विशर, पोसिबल, बिलवेड़, प्रोफेसी, अपोजीट, स्टेंजा, इम्मार्टल, रिलीजियस मेन, वर्चुअस, कैण्डिल, ब्लेसींग, डेविल आदि-आदि।[47]

शान्तिदूत

'शान्तिदूत' महात्मा गाँधी के जीवन पर आधारित उपन्यास है। उनके समय को हम निकट अतीत का समय कह सकते हैं। महात्माजी का समग्र जीवन ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ स्वाधीनता का संग्राम खेलने में व्यतीत हुआ है। इसी सबब अनेक अंग्रेज वाइसरोय तथा उच्च अधिकारियों से उनके वार्तालाप और पत्राचार हुए हैं। स्वयं महात्माजी की अंग्रेजी भी बहुत अच्छी थी फलतः यहाँ भी अंग्रेजी के शब्द पुष्कल परिमाण में उपलब्ध होते हैं। यथा - सो व्हाट, गेट डाउन, ब्लैक बास्टर्ड, प्लेटफार्म, लर्न्ट, फूल, ब्लैंकेट, लगेज, हैंड बेग, स्टूपिड, फियर डेथ, होल्डर अरेंज, डैम्ड, डिस्टर्ब, ओब्सटिनेट ब्लैक, पोलिटिकल एजेंट, अपोलोजी अनग्रेटफुल, पनिश, इम्प्रीजेन्ड, जिन्स, बायस्कोप, सिनर, मैट्रिकुलेशन, सी-सिकनेस, बैरिस्टर, पेइंग गेस्ट, लोन्च, सफिशियेंट, ब्रश्ड अप, क्वालिफिकेशन, लिसेन, कैम्ब्रिज, थियोसॉफी, सुपीरियर, ऑब्लाइज, अनरिलायबल, सपोज्ड़, पिपुल्स, ग्रिवान्सेज, नोनसेन्स, टु शो दी डोर, हाइ हैंडेडनेस, माइ फूट, ब्रीफलेस, कन्सीक्केंसेज, ट्रे वेल, हेड-गियर, ब्लडी थिंग, क्वेश्चन, ऐग्रीमेन्ट, वेकन्सी, हैरेस, होल्ड्स, आब्जेक्शन, एसेम्बली, एडवोकेट एसोशियेसन, ग्रीन बुक, पायनियर, स्टेट्समैन, शैड़ोज, इंडियन एम्बुलेन्स, स्ट्रेचर, मेडिसिन, डिसिज, पैसिव रेसिस्टेन्स, एलोपैथिक, डॉक्टर, साइमन कमीशन, टॉल्सटाय-फार्म, इंटेन्सन, नेसेसरी, इन्कवायरी, एलेज्ड, रिसपोंसिबिलिटि, मोशन, रौलट बिल, लेफ्टिनेंट गवर्नर, शिफ्टेड, नोन-कोआपरेशन, नॉट गिलटी, एपेंडिक्स, गोल्डेन हेयर्स, कम्पलिटली शेव्ड, कम्यूनल आवार्ड, रेडियेशन, राशनिंग आदि-आदि।[48]

अंग्रेजी के शब्द परिवर्तित व्याकरणिक रूप में

भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी के शब्द गालिबन तीनसो वर्षों से मिल रहे हैं। ऐसी स्थिति में कुछ शब्द परिवर्तित व्याकरणिक रूपों में भी पाए जाते हैं। भाषा की यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि जब उसमें विदेशी भाषा के शब्द शामिल होने

लगते हैं तब उनके वचन-लिंग-कारक आदि में स्वदेशी भाषाओं के प्रत्यय जुड़ जाते हैं। उदाहरणतया स्कूल और कॉलेज का बहुवचन होगा स्कूल्स् और कॉलेजिस। परन्तु अपने दैनन्दिन व्यवहार में हम कई बार कहते हैं कि आजकल स्कूलों और कॉलेजों के खर्चे बढ़ रहे हैं। परन्तु ऐसा केवल उन शब्दों के साथ घटित होता है जो हमारी भाषा की प्रकृति में सहजतया ढल जाते हैं। उदाहरण स्वरूप अंग्रेजी शब्द गर्ल और बॉय के बहुवचन के रूप गर्लों और बॉयों के रूप में नहीं होगा। यहाँ हमारा उपक्रम कुछ ऐसे शब्दों को रखने का है जिनके साथ यह प्रक्रिया सहजतया हुई है। 'सूरज के आने तक' उपन्यास में ऑफिसरों, जजी, कॉलेजों, बसें, प्रेसिडेंसियों, स्टूलों, ट्रकों, रायफलें, सुपरवाइजरों, प्रोफेसरों, बेंचों, कारें, क्वाटरों, टेक्सियों, स्कूलों आदि शब्द मिलते हैं।[49] 'नदी नहीं मुड़ती' उपन्यास में भी ऐसे कई शब्द मिलते हैं। जैसे-स्वेटरों, सोफासेटो, प्लेटों, कार्डिगनों, बक्सों, हास्टलों, ऑफिसरों आदि-आदि।[50] 'एक और अहल्या' उपन्यास में भी कुछ ऐसे शब्द उपलब्ध होते हैं जैसे स्कूली, होटलों, सिनेमा हालों, शेयरों, नोटों, लोन्जों, टी.वी. सेटों, टाइपिस्टों, कॉपियो, पोस्टरों आदि-आदि।[51] 'शान्तिदूत' उपन्यास में भी यह प्रवृत्ति पाई जाती है। यथा सॉलिसिटरों, बेंचों, मशीनगनों बेरिस्टरी, मिनटों, गाइडों, बेरिस्टरों, स्टेशनों, पार्टियों, ओफिसों, स्ट्रेचरों आदि-आदि।[52]

अंग्रेजी - हिन्दी मिश्रित शब्द

भाषा - गठन और निर्माण की प्रक्रिया में ऐसा अक्सर पाया जाता है कि दो भाषा के शब्द परस्पर मिल जाते हैं। डॉ. मिश्र के उपन्यासों में भी ऐसे कुछ शब्द मिलते हैं। यथा- रेलगाडी, रायफलधारी, पोस्टाचार्य;[53] सरकारी ऑफिसर, कैमरा-चित्र, सिनेमा-घर;[54] हवाई फायर, स्कूली बालिका, डिग्रीधारी, पॉकेट खर्च, परीक्षा-होल;[55] कॉलेज-जीवन, कुली एडवाकेट, कुली बिजनेशमैन, हाटल, प्रबंधक, रेलवे विभाग, जेल-यात्रा, अध्ययन टेबल, कुली - शोप कीपर, पुलीस-अधिक्षक, प्रेस-प्रतिनिधि, रेल कर्मचारि आदि-आदि।[56]

पंजाबी शब्द

डॉ. भगवतीशरण मिश्र वैसे तो बिहार के लेखक है परन्तु उनके दो उपन्यास - 'का के लागूं पांव' और 'गोबिन्द गाथा' - पंजाबी परिवेश लिए हुए है। अतः इन उपन्यासों में पंजाबी शब्दों का मिलना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। यहाँ ऐसे कुछ

शब्दों को सूचीस्थ किया गया है। यथा संगत-पंगत, बारहदरी, असी, कबीला, तिसमो, पुत्तर, बख्शो, जच्चा-बच्चा, तुसी, निहाल, लंगर, पराकरमी, किरपा, जत्था, किरपाण, किशन, जोरु, आखणि (बोलना), मोक (मायका)।[57] सोहिला, यतन, सत सिरी अकाल, अरदास, मंजियों (परगणों), मंजी, मसंद, मीरी, सेहली, मौन बरत, परवचन, उतारा, कारज, पुत्तर, कीरत ध्वज, निरदोख, अंगना (औरत), कृपाण, वाहे गुरु, किरपाल, कीरत, किरपा, पंच पियारो, बाटा, वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतह, कच्छा, परसाद, बोले सो निहाल, सिखी, परसथान, छमा (क्षमा) परगति (प्रगति), रहरास, खेयाती (ख्याति), समरथ, परतिसठा, चरितर, सरधा, असरधा, परवेश, रब्बी फसल, गुरुमता (प्रस्ताव), समरपित, परयापत (पर्याप्त), सकती (शक्ति), ससक्त (सशक्त), सची (सच्ची), जेवा (शोभा) बेदाना, परवीण, परसतुत, परणाम, परमपरा, परतीकातमक आदि-आदि।[58] यह पंजाबी भाषा की प्रकृति है कि उसमें प्रायः संयुक्ताक्षर के स्थान पर पूर्ण वर्ण का प्रयोग होता है। उदाहरण के तौर पर यदि मूल शब्द राजेन्द्र होगा तो पंजाबी में उसका राजेन्दर हो जाएगा। यह प्रवृत्ति हमें उक्त उपन्यासों के यतन, परवचन, पुत्तर, किरपा, परगति, चरितर, सरधा, समरपित, परतीकातमक आदि शब्दों में दृष्टिगोचर हो रही है।

बंगाली शब्द

डॉ. मिश्र बिहार के है और बिहार बंगाल का समीपवर्ती प्रदेश है, दूसरे उनकी पात्र-सृष्टि में कई बंगला चरित्र भी आए हैं, अतः उनके उपन्यासों में कई स्थानों पर हमें बंगला शब्द मिलते हैं। कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे वाक्य बंगला के होते हैं। यहां उनके उपन्यास 'लक्ष्मण रेखा' से कुछ बंगला शब्द उद्धृत किए जा रहे हैं। यथा एखाने, चोख, आमि, बुझते, तोखन, बोललाम, भालो कोरे लिखे आछे, रोकम, प्रोथम, कोतो बार बोलबो, आमार अनेक काज आछे, बोलछि, चालीस टाका, आमि जाबो, के रोके छे, आमार, कांछे, बाकी थाकबे आदि-आदि।[59] मिश्रजी के 'का के लागूं पांव' में एक बंगला चरित्र के द्वारा बंगला भाषा का प्रयोग हुआ है। यथा - "आमि की पोढ़ते पारि? आपनि जे बोलनेन ताई टा पोर्याप्त। खूब भालो लागे ! पुत्रेर जन्म ईश्वरेर महान अनुकम्पा। आपनार बंगभूमि-यात्रा सार्थक होये छे। आमादेर कोटि-कोटि साधुवाद"[60] उसी तरह 'शान्तिदूत' उपन्यास में बंगला पत्रिका के दो सम्पादक महात्मा गाँधी के सन्दर्भ में जो कहते हैं, वह समूचा वार्तालाप लेखक ने बंगला भाषा में दिया है । यथा- "आमि बोलछि जे आपनि जान। ताडातड़ि जान अन्यथा आमि धाक्का दिए आपना बाहिरो कोरबो।"[61] "आपनि के? गांधी के ?

गांधी के? आमि जानि ना गांधी-आंधी। कि कथा आछे?

उनिर सांगे दाखा होबे ना । अनेक काज आछे एउखाने। अफ्रीका तोफ्रीका आमरा जानि ना। आपनि जान। आमि बूझि जे आपनि भोद्र लोक किन्तु ता बोधाय सोत्य नेई । आपना के जे तेई होबे। ए खुनि।''[62]

भोजपुरी शब्द

भोजपुरी बोली का क्षेत्र भी बिहार के निकटवर्ती है। और मिश्रजी की पात्र-सृष्टि में कई भोजपुरी क्षेत्र के पात्र भी आते हैं। अतः उनके उपन्यासों में भोजपुरी बोली और उसके शब्द भी मिलते हैं। यहाँ पर मिश्रजी के 'शान्तिदूत' उपन्यास से दो उद्धरण दिए जा रहे हैं जिनमें भोजपुरी बोली का प्रयोग हुआ है। यथा ''चम्पारण के देहात से आइल बानी, आपने के बहुत नाम सुन-पढ के।

कष्ट के पारावार नइखे । हमनी के मरल या जीयल बराबरे बा। अपने के ही हाथ हमनी के उधार (उद्धार) लिखल बा। चम्पारने के तबाही के कहानी बहुत लामा (लम्बा) बा। उहां चल के खुद देखल जाय। बिना देखले हमनी के कष्ट के रउआ अन्दाज न होई।

चम्पारण, बिहार के एगो जिला ह। मोतीहारी में जिला कारजालय (कार्यालय) बा। नीलहा साहब सब हमनी के जीवन के नरक बना देले बाडन स।''[63]

''हमनी के उधार (उद्धार) करीं। अपने के अलावा हमनी के दुःख दरद (दर्द) कोई ना दूर कर सकी। उहे त हमनीयों के चाहत बानीं, अपने उहां (वहाँ) चल के खुदे सब कुछ देख समझ ली तबे राउर (आपका) हिरदय बरफ के समान पिघल जाई। ई समय कब आई?

से त ठीक बा प जब तक आप वहाँ के कारजकरम बना के आई ब तब तक हमनी के कतना दूरदसा (दुर्दशा) हो जाई, ई हम बरणन (वर्णन) ना कर सकीं।

भाग (भाग्य) बस रउआ (आप) इहां पहुँच गइल बानीं, इहां से चंपारन नजदीके बा। रउआ अब चल चलीं।

कब चलब?

हम त कसम खा ले ले बानी कि जब तक रउआ चले कि तारीखा ना निसचय (निश्चय) करब तब तक हम लौटब ना।''[64]

मिश्रजी के ही 'देख कबीरा रोया' उपन्यास में भोजपुरी के कई शब्द उपलब्ध

होते हैं। जैसे परकाश, संसकार, उपदेस, गाहक, पतिवरता, परवचन, अछत (अक्षत), दिरिस्य, थाती, ठाट पुन्न, गेयान, बेयाखया, पूरब जनम, परताप, अकाज (नुकशान), नेह, वंश वरखा, शासतारथ (शास्त्रार्थ), संसकिरत (संस्कृत), सलोक (श्लोक), सबद, किसन, गिराबे देको, करम (क्रम), मिहनताना, मनाही, परलय, पांति, काठ, मिहनत, खेवाई, बहुरिया, भाखा, खेवनहार आदि-आदि।[65]

मिश्रजी के 'सूरज के आने तक' उपन्यास में भी कुछ भोजपुरी शब्द मिलते हैं। यथा कांख-कूंखकर, थोथा, शासतर, लछमन, तरेता (त्रेता), सुलच्छन, परमेसर, सरम, बरस (वर्ष), माह, बिचौलिए, डीठ, कलमुँहा, टुकुर-टुकुर, आवे, मुआ, भसुर, काहे, तलहथी, खिचडी, सिरहाना, मवाद आदि-आदि।[66]

मिश्रजी के 'बंधक आत्माएँ' के चमत्कारी साधु बाबा भोजपुरी बोली में बोलते हैं। अतः यहाँ भी कई भोजपुरी शब्द आए हैं। यथा - दीही, परसाद, चलब, जाई, ठीक बा, लागल, कवन (कौन), दोसर, अंटना, ढीठ, धनौना, कड़कड़, भाड़, होवे, सकेला, गइल आदि-आदि।[67] प्रस्तुत उपन्यास में बाबा के कथोपकथनों में अनेक स्थानों पर भोजपुरी बोली का प्रयोग हुआ है। अतः उनमें निहित शब्दों को भी भोजपुरी के अंतर्गत रख सकते हैं। यथा - ई लोग के है? हम आपन का परिचय दीहीं? परसाद खाई लोग? ना चलब? त हम जाई? अरे, भूख लागल रहे। आ गइनी। हम अगिनिए हुई। तू के हव। ई का कौनो तमाशा है? यही बतावे कि क्या चाहिए? त नाम रख कवन तेल। ठीक बा। दोसर आ जाई। ई कौनो तमाशा थोड़े है? बोल तब का चाहिं? सेव भी मिल जाई। साड़ी भी आ जाई। कब आई? जब कह। अभी भी आ सकेला। ल साड़ी आ गइल। पर वे जायं या नहीं जाय, जलपा माई ने तो स्वर्ग देखा ही होगा आदि-आदि।[68]

राजस्थानी शब्द

मिश्रजी के उपन्यासों में यथाप्रसंग राजस्थानी शब्दों के प्रयोग भी मिलते हैं। देख कबीरा रोया उपन्यास में यात्रा के दरमियान चंबल नदी के पास कबीरजी की भेंट अजीतसिंह नामक एक राजस्थानी डाकु से होती है। वहाँ जो कथोपकथन प्रयुक्त हुआ है उसमें राजस्थानी शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है। यथा भाखा, रहयो, उगलो, पड्यो, देख्यो, ऊब-यहूब, ठहरयो, रख्यो, मुड़ियो, लगयो, लिख्यो, बिसवास, भय्या, नय्या, होय्यो, विराजमान, नवका (नौका), जय्या, डाकुआन, करय्यो, तय्यार, लोगन, निरदोख, चुकलो, कवनो, केया, अयलौं, घिरणित आदि-आदि।[69] प्रस्तुत

उपन्यास में चम्बल के डाकू अजीतसिंह का जो कथोपकथन है, वह पूरा का पूरा राजस्थानी में है। अतः उन वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों को भी हम राजस्थानी के अंतर्गत रख सकते हैं। यहाँ अजीतसिंह के कथोपकथन से कुछेक वाक्य उद्धृत किए जा रहे हैं। यथा -"किस भाखा में बोले जा रह्यो यह सब? साफ-साफ इधर की भाखा में उगलो जो कुछ कहना है? वर्ना मेरे हाथ में पड्यो इस तलवार को देख्यो, एक क्षण में तुम्हारी गरदन चंबल के पानी में ऊब-यूहुब करत्यो नजर आयो।"[70]........ "तुम, मुंडियों का सरदार लगता है। तुम इन सब अपने चेलों को लेकर हमारा नाव पर चढियो, हम तुम्हें पार लगावेंगे, डरने की कोई बात नहीं - न इस खूंखार नदी से, न हम हथियारबंदो से। इस नदी के पानी को चीरती हमारी नौका तो ऐसे भाग्यो है जैसे नदी के मगरमच्छ।....... चढो भय्या पहले आप मुड़िया विराजमान होय्यो इन नवका पर।"[71]........ "मेरा मकसद तो स्पष्ट। लोगन का हत्या करना हमार काम। धन-माल।धन-माल छिन के चंपत। अब सब तुम मरन को तय्यार हो जा। तोह सबन के काल, जावे के बेरा उपस्थित हो गयलह।"[72]

डॉ. मिश्र द्वारा प्रणीत 'पीतांबरा' उपन्यास तो राजस्थान की मीराबाई के जीवन पर ही आद्धृत उपन्यास है। अतः उसमें राजस्थानी शब्दों का पाया जाना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। निम्नलिखित वाक्य में तो समूचा राजस्थानी का लहजा उतर आया है - "अरे दारी रांड यह कौन को पद है? वह कहा तेरे खसम को मूंड है? जा आज से तेरो मुँह को कभी न देखूंगो।"[73] यह ठेठ राजस्थानी है। राजस्थानी में कई बार किसी स्त्री को सम्बोधित करते हुए दारी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसमें दारी, रांड, मूंड, देखूंगो आदि राजस्थानी शब्द है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में जहाँ-जहाँ मीराबाई के पद आए हैं वहाँ-वहाँ ब्रज भाषा के साथ-साथ राजस्थानी का भी भरपूर प्रयोग हुआ है। यथा बिकानी, म्हारो, त्यूं-त्यूं, पुराणी, दरसण, दिण, सजणी, सुणाया, बोल्या, म्हारी, हांसी, नथली, म्हों, आंगा, नाच्यां, रिझायां, घुंघरया, कुलरा, भरज्यादां, राच्यां, सिंणगारो, म्हें तो, गास्यां, म्हौरा, म्हे जास्यां, चढस्यां, विणा, कांची, करावां, झमकास्यां, भोसागर, वीड़रो, अटकास्यां, थारी, कासूं री, पेठां, कलणां, पड़तां, कलपां, मिलोगो, थाने, निहारो, रसीलड़ी, झूलणीं, अबोलणां, आवण, म्हाणे, चाकर, शखौ, पहण, कुसुम्भी, परण्यां, सुपणा मां, ढिंग, कूंण, माणै, अबोलणां, रावलियारा, सजणी, सनकाणी, लटकाणी, कुलनासी, तण-मण, भीलणी, गिणत आदि-आदि।[74]

उपर्युक्त उदाहरणों से राजस्थानी भाषा की प्रकृति भी स्पष्ट होती है। राजस्थानी में प्रायः 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग होता है जैसे 'पुरानी' के स्थान

पर 'पुराणी', 'रैन' के स्थान पर 'रैण', 'पहन' के स्थान पर 'पहण'। इसी तरह राजस्थानी में सर्वनामों में 'म' के साथ 'ह' को जोड़कर लिखने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है, जैसे-म्हारो (मेरा), म्हे (मैं), म्हाणे (मेरी) आदि-आदि। राजस्थानी भाषा पर गुजराती का भी प्रभाव देखा जाता है। जैसे-मनै (मने), चाकर (चाकर), मोरी (मोरी), रहसूं (रहेशु), लगासूं (लगावीशुं), गासूं (गाईशुं), अबोलणा (अबोला) आदि-आदि।

अवधि के शब्द

आज अवधि की गणना हिन्दी के बोलियों के अंतर्गत होती है किन्तु किसी समय अवधि की गणना समृद्ध साहित्यिक भाषाओं में होती थी। ब्रज भाषा पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत आती है तो अवधि पूरबी हिन्दी के अंतर्गत आती है। बनारस, कानपुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ आदि क्षेत्रों की बोली अवधि है। बिहार के भी कुछ क्षेत्रों में अवधि बोली जाती है। अतः डॉ. मिश्र के औपन्यासिक भाषा-कर्म में अवधि के शब्दों का पाया जाना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। गोस्वामी तुलसीदास डॉ. मिश्र के प्रिय कवियों में से है। उनका उपन्यास 'पवनपुत्र' रामायण की कथा पर आधारित है। यहाँ अनेक स्थानों पर उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास को उद्धृत किया है। अतः इसी सबब अवधि के कई शब्द पाए जाते हैं। यथा-रघुराई, तीरा, नीरा, मोहि, बिसारेउ, कुम्हड़, पतिया, जाहि, बिछोहू, खैचत, बिलोकइ, सहहिं, उतराइ, ढाबर, बिगरहि, कियारि, कबहूँ, निसिचर, निवासा, जुठारि, खेला, उगरहि, निबाहू, जिमि, धावहिं, लावहि, कछु, उजियार, रखबारे, जहाजु, सागरु, समाजू, तीरथराजू, जानब आदि-आदि।[75]

मिश्रजी के उपन्यास 'देख कबीरा रोया' अवधि भाषा के कई शब्द मिलते हैं। यथा-आखर, मसि,कागद, पूजौं, चुनाय, खुदाय, माहीं, नाहीं, करौगी, पैसि, जरै, कहाई, आंखन, पछताहुगे, ब्याहौ, तूरक, सुनति, जाको, सकिहें, कुतवा, सुमिरन, दिसि, साबुत, कंबल, खेवट, बिलइया, दीन्हा, बैठारी, काल्ह, बटोहिया, चोखो, मिरग, परभात, खायकै, सोवणों, खिस्या, जाके,ताके,चदरिया, सीबत, मरिहैं, जिवावनहारा, तामें, सुरति, लंघना, घना, सखियन, छव (छः) गावहुं, भरतार, पाहुना, भांवरि, वांणियां, पालड़े, पतियां, मुसि-मुसि, मिल्या, लुकाठी, रमोले, गैले, लबरा, साधो, गिरंथ, उघाड़िया, सबद, अलख, जीभ, संभारि लै, चाखा, राखा, इत-ऊत, पतियाही, बैसंतर, लेहड़े, चहुंदिसि, नियरै, दुतिया (द्वितीया), आछे-पाछे,

पियाला, मुतिया (मोती), जेबड़ी, जित-तित, काके, काचा (कच्चा), माहुर, देहुलि, ऐठत आदि-आदि।[76]

मिश्रजीके उपन्यास 'बंधक आत्माएँ' में भी कई अवधि के शब्द मिलते हैं। यथा-सिय, कछु, प्रगटि, जनाई, बोलाई, पहुनई, जनवास, कोऊ, करहिं, बखाना, कीजै, अतूपा, पाहुन, बड़ (बड़ा), नेवता, तसि, चाहिअ, जस (जैसा), बड़भागिनी, आपुहि, आजू, समाजू, असकहि, बिलोकि, बिलखाहि आदि-आदि।[77]

मैथिली शब्द

डॉ. भगवतीशरम मिश्र बिहार के लेखक है और मिथिला प्रदेश भी बिहार का ही एक हिस्सा है। अतः उनके उपन्यासों में कहीं कहीं मैथीली भाषा के शब्द भी उपलब्ध होते हैं। उनके उपन्यास 'नदी नही मुड़ती' की नायिका सुषमा मिथिला प्रदेश की ही है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में मैथिली परिवेश के शब्द मिलते हैं। उपन्यास में श्रोत्रीय ब्राह्मण या कुलीन ब्राह्मण का उल्लेख मिलता है। अन्यथा 'कुलीन' शब्द का अर्थ 'खानदानी या ऊँचे कुलवाला' होता है, परन्तु मिथिला प्रदेश के परिवेश में 'कुलीन' शब्द का एक दूसरा ही अर्थ होता है। मिथिला प्रदेश में उच्च वर्णीय ब्राह्मणों में दहेज के रूप में बहुत तिलक देना पड़ता है। ऐसी स्थिति में गरीब ब्राह्मण वर्ग केलोग अपनी बहन-बेंटियों का विवाह ऐसे कुलीन ब्राह्मणो से करते हैं जिससे विवाह का एक ठप्पा लग जाता है और लोग-बाग सामाजिक उत्साह और बदनामी से बच जाते हैं। ये कुलीन ब्राह्मण कई-कई लड़कियों से विवाह करते थे और विवाह के उपरान्त पत्नी को अपने साथ अपने घर न ले जाकर लड़की को उसके माँ-बाप या परिवार में ही छोड़ जाते थे। समय-समय पर वे अपने श्वसुर गृह की मुलाकात लेते रहते थे और जब वे आते थे तब उनकी बड़ी आवभगत होती थी। इसी सन्दर्भ में 'पाहुना' शब्द भी आया है। वैसे 'पाहुना' शब्द का शाब्दिक अर्थ तो 'मेहमान' या 'अतिथि' होता है, परन्तु मिथिला प्रदेश में इस शब्द का अर्थ 'दामाद' या 'जमाई' होता है। मिथिला प्रदेश में एक खास किस्म का मेला लगता है जिसे 'सोराठ-सभा' कहा जाता है। ये मेला कई-कई दिनों तक चलता है। उसमें लोग अपने अविवाहित लड़कों को लेकर जाते हैं। लड़की वाले अपनी-अपनी अविवाहित लड़कियों के लिए सुयोग्य वर की तलाश में इस मेले की मुलाकात करते हैं। इसी उपन्यास में मैथिली के कतिपय शब्द पाए जाते हैं। यथा-टप्पर, जुगाली, छागल (बकरी) पागुर, रतौंधी, पहुना, खांटी (विशुद्ध), भाईजा (भाईसाहब) आदि-आदि।[78] मिश्रजी के 'पीतांबरा'

उपन्यास में विद्यापति के कुछ पद भी आए हैं जिसमें हमे मैथिली के शब्द मिलते हैं। यथा - विहरई, पुलिन, मातल, आयल, विराअेल, हेरायल, गाओल, धैरज, आचिरे, कहब, कतेक, समारल, देखलि, फुलायल, आवथि, करथि, जोवति आदि-आदि।[79]

गुजराती शब्द

यद्यपि डॉ. मिश्र का गुजरात प्रदेश से कोई खास सम्बन्ध नहीं है तथापि उनके उपन्यास 'पवनपुत्र' में गुजरात के कवि गिरिधर कृत 'गिरधर रामायण' के कुछ पद उपलब्ध होते हैं इस तरह से वहाँ कुछ गुजराती शब्द उपलब्ध होते हैं। यथा - चढ्या, कोप्या, आणी, ग्रह्यु, मारी, हांक, गजनुं, ओढ्यु, करे, सर्पनुं, वहेती, केरी, करवा, पोते, विराज्या, रथमा, आव्या, एवुं, जोई, डोल्या, जाणो, मूक्या, थयो, नाठा, ज्यम, त्यम, मांड्यु, पाडे, बोल्या, तुजने, छो (हो), लावो (लाइये), धरता, प्राणतणा, रहेवुं (रहना), जेवु (जैसा), थाशे नहि (होगा नहीं), नाम थकी (नाम से), नासे (भागे), सुणीने (सुनकर), थई (हुई), मन मांहे (मन में) आदि-आदि।[80]

अनूदित शब्द

जिस प्रकार अनूदित रचना होती है, अनूदित उपन्यास, कहानी या नाटक होते है, ठीक उसी प्रकार अनूदित भाषा भी हो सकती है। हिन्दी में अंग्रेजी के प्रभाव के कारण भी ऐसा हुआ है। हिन्दी को राजभाषा का दरज्जा दिया गया है। अतः सरकारी कामकाज में कई बार हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी भाषानुवाद करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में संस्कृत का आधार लेकर हिन्दी में बहुत से शब्द अंग्रेजी शब्दों की अभिव्यक्ति के लिए बनाये या गढ़े गए हैं ऐसे शब्दों को हम अनूदित शब्दों की संज्ञा देते हैं। डॉ. भगवतीशरण मिश्र एक आई.ए.एस. ओफिसर होने के कारण बिहार तथा भारत सरकार की अनेक प्रशासनिक सेवाओं में कार्य कर चुके हैं। राजभाषा के सन्दर्भ में भी उन्होंने काम किया है। ऐसी स्थिति में उनके उपन्यासों में इस प्रकार के शब्दों का पाया जाना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। यहाँ उनके कुछेक उपन्यासों से इस तरह के शब्दों को दिया जा रहा है। यथासंभव कोष्ठक में अंग्रेजी शब्दों को भी देने का प्रयास किया है। यथा - जलशोधन (Water filtration), पत्रकार (Journalist), प्रदूषणशास्त्री (Pollution expert), प्रदूषणग्रस्त (Polluted), राजनीतिक प्रदूषण (Political pollution), शब्द संगठन (Word formation), पत्रकारिता (Journalism), नगरपालिका (Municipality), कार्यालय (office), पर्यावरणशास्त्री (Environmentalist), समाजवाद (So-

cialism), साम्यवाद (Communalism), द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical materialism), नामांकन (Nomination), राजसत्ता (Political power), हस्ताक्षर (Signature), पर्यावरण (Environment), अभयारण्य (Sanctury), आयातित संस्कृति (Imported culture), पर्यावरण दिवस (Environment day), अंतराष्ट्रीय अधिवेशन (International conference), वायु प्रदूषण (Air pollution), जल प्रदूषण (Water pollution), भूमि प्रदूषण (Land pollution), ध्वनि प्रदूषण (Noise pollution), अंतरिक्ष प्रदूषण (Space pollution), परिवहन (Transport), प्राणवायु (Oxygen), परमाणु (Atom), रासायणिक खाद (Chemical fertilizer), ध्वनि विस्तारक यंत्र (Gramophone);[81] परियोजना पदाधिकारी (Project incharge), अस्पताल (Hospital), शीतयुद्ध (Cold war), प्रौढ शिक्षा शिविर (Adult education camp), रात्रि केन्द्र (Night center), रात्रि पाठशाला (Night school), नेत्र-दान यज्ञ (Eye donation camp), प्रौढशिक्षा कार्यक्रम (Adult education programme), उच्च-शिक्षा (Higher education), परियोजना (Project), प्रशिक्षण (Trainning), प्रभार (Charge), पंचवर्षीय योजना (Five year planning), पर्यवेक्षिका (Lady supervisor), पर्यवेक्षक (Supervisor), प्रशिक्षणार्थी (Trainee), पंचायत भवन (Panchayat office), सरकारी पदाधिकारी (Government office-bearer), सरकारी अस्पताल (Government Hospital), प्रौढ-शिक्षा केन्द्र (Adult education center), जिला मुख्यालय (District Head quarter), प्रयोगशाला (Laboratory), परिकल्पना (Concept), सरकारी कर्मचारी (Government servant), सरकारी अधिकारी (Government officer), सरकारी कार्य (Government work), सरकारी नियम (Government rules), त्यागपत्र (Resignation letter), प्रतिनिधि (Representative), राजपत्रित अधिकारी (Gazetted officer), परीक्षा भवन (Examination Hall), जिला पदाधिकारी (District officer), प्रतिलिपि (Zerox copy), श्रमदान (Labour Donation), सेवाकेन्द्र (Service center), मुख्यालय (Head quarter), संचार (Communication), पंचायती चुनाव (Panchayat Election);[82] संचिका (File), स्थानीय समाहरणालय (Local collectrate), निलंबित (Suspended), निलंबन आदेश (Suspention order), अग्रिम (In Advance, Anticipatory),

खाद्य सामग्री (Edible Items), स्थानांतरित (Transfered), चीड़ियाखाना (Zoo), चीड़ियाघर (Zoo), नागरिक-बोध (Civic sense), दायित्वहीनता (Irresponsibility), रेलगाड़ी (Train), कार्यालय अधीक्षक (Office superintendent), दलाल (Broker), क्रय-विक्रय (Purchase & Sale), औपचारिकता (Formality), मितव्ययिता (Frugality), प्रोन्नति (Promotion), उपभोक्ता संस्कृति (Consumer culture), प्रायोजक (Sponsor), आत्म-परीक्षण (Self Introspection), परीक्षक (Examiner), परीक्षा विभाग (Examination Department), पाठ्यपुस्तक (Text book), नवनियुक्त शिक्षक (Newly Appointed Teacher), विश्वविद्यालय (University), महाविद्यालय (College), प्रधान मंत्री (Prime-minister), मुख्यमंत्री (Chief Minister), प्रजातंत्र (Democracy), नियुक्ति-पत्र (Appointment Letter), गैर-सरकारी (Non-Government), शिक्षा-संस्थान (Educational Institution), अनुत्पादक (Non productive), आर्थिक विकास (Economic development), विघटन (Splitting), उद्योगपति (Industrialist), आयात-निर्यात (Import-Export), निर्यातक (Exporter), पर्यटन व्यवसाय (Tourism Business), प्रमाणपत्र (Certificate), दूरभाष (Telephone), मतदान केन्द्र (Polling center), जन प्रतिनिधि (People Representative), विधानसभा (Legislative assembly), मतदाता (Voter), अनाचार (Misconduct), सामाजिक संस्था (Social Institution), सामाजिक समिति (Social Committee), सुरक्षा बल (Security Force);[83] विदेश-व्यापार (Foreign trade), केन्द्रिय हस्तशिल्प बोर्ड (Central handicraft board), सहायक निर्देशक (Associate director), विभागाध्यक्ष (Head of the Department), विश्वविद्यालय (University), अनुदान (Grant), सहकारिता मंत्री (Co-ordinate Minister), निर्वासित (Refugee), सरकारी व्यवस्था (Arrangement provided by government), चुनाव-प्रसार (Election campaigning), रेल मंत्री (Railway Minister), शाखा कार्यालय (Branch office), राष्ट्रपति पुरस्कार (Presidential award), स्थानीय जिला स्कूल (Local district school), निर्माण समिति (Construction committee), मुख्यमंत्री (Chief Minister), अस्थायी व्यवस्था (Temporary arrangement), स्वागत-गान (Welcome song);[84] प्रबन्ध (Arrangement), प्रतिनिधि (Re-presenta-

tive), आयोजित (organised), नामांकन (Nomination), सहयात्री (Co-traveller), कार्य-समिति (Educative committee), अध्यक्ष (President), मनोनीत (Nominated), प्रकाशित (Published), अवधारणा (Concept), प्रदर्शनी (Exhibition), महाप्रदर्शनी (Mega Exhibition), भोजनालय (Dinning hall), आलोचना (Criticism), जलयान (Steamer), विशेषज्ञ (Expert), वरीय वकील (Senior advocate), प्रशिक्षण (Training), स्थानीय वकील (Local advocate), अदालत (Court), संदेशवाहिका (Female Messenger), व्यापार-संस्थान (Commercial Institute), पारिश्रमिक (Royalty), व्यवसायिक (Professional), पत्राचार (Correspondence), प्रथम श्रेणी (First class), अधिकारी (Officer), आचारसंहिता (Code of conduct), कप्तान (Captain), कचहरी (Court), दस्तावेज (Document), टिप्पणी (Note), रूपान्तर (Transformation), कागजात (Papers), वरीय सहयोगी (Senior collegue), अनुवाद (Translation), अनुवादक (Translator), सभा (Meeting), कालाबाजारी (Black Marketing), वयस्क (Aged), आवेदन (Memorandum), समाजसेवा (Social service), मुकद्मा (Case), परामनोवैज्ञानिक (Para psychological), विदाय समारोह (Farewell party), आयोजन (Function), मताधिकार (Right to Vote), पारित (Passed), सम्मान-सभा (Felicitating Meeting), कार्यकारिणी समिति (Executive committee), आपात बैठक (Emergency meeting), अध्यक्षता (to preside), प्रस्तावित (proposed), प्रस्ताव (Preposal),कार्यकर्ता (Worker), निःशुल्क (honorary), हस्ताक्षर (Signature), स्वयंसेवक (Volunteer), प्रतियाँ (copies), अग्रलेख (Editorial), अनुमति पत्र (Permission letter), प्रमाणपत्र (Certificate), उच्च न्यायालय (High court), गिरि प्रवचन (Sermon on the mounts), उपनिवेश मंत्री (Deputy Minister of deposits), शस्त्रास्त्र-संचालन (Operation of artilery), गैर तकनीकी कार्य (Non technical work), अधिवेशन (Conference), शौचालय (Toilet), स्वशासी उपनिवेश (Self Governed colony)), स्थानीय शासक (Local Ruler), परवाना (Permit card), नगरपालिका (Municipality), प्राकृतिक-चिकित्सा (Natural therapy), मिट्टी-चिकित्सा (Mudtherapy), संस्करण (Edition), साक्षर (Literate), संपादन (Editing), समाचार पत्र (News

paper), साप्ताहिक (Weekly), प्रस्तावित कानून (Prepose bill of law), काला कानून (Black act), अनुशंसा (Recommendation), शिष्ट मंडल (Deputation), आंदोलनकारी (Agitators), प्रतिष्ठान (Institution), जुर्माना (Penalty), विधिवत् अध्ययन (Regular study), अध्ययन-अध्यापन (Learning and teaching), क्रियान्वयन (to activate), इंडिया रिलीफ विधेयक (India Relief Bill), गृह प्रशासन (Home-rule), स्वर्णांकित (Written in golden letters), तस्करी (Smuggling), चुंगी-चौकी (check post), पंजिका (Registration file), सचिव (Secretary), अभिभावक (Gaurdian), मान-पत्र (Letter of Honour), इकरारनामा (Written agreement), उच्चाधिकारी (Higher officer), जाँच समिति (Inquiry committee), समिति गठन (To form a committee), साक्ष्य (Evidence), अनुपात (Proportion), धारा (Article), ज़िला-प्रशासन (District administration), सविनय कानून भंग (Civil disobedience), प्रतिज्ञा-पत्र (Letter of oath), आदेश (Order), धारा सभा (Legislative assembly), साक्षात्कार (Interview), प्रतिशत (Percentage), मनोनीत अध्यक्ष (Nominated president), अभियुक्त (Accused person), असहयोग आंदोलन (Non Co-opration movement), अतिथि-गृह (Guest house), विज्ञान संस्थान (Institution of Science), सर्व सम्मत (Unanimous), त्यागपत्र (Resignation), अवैतनिक पद (Honorary post), समझौता पत्र (Letter of agreement), गोलमेज परिषद (Round table conference), गैरकानूनी संस्था (Illegal Institution), राष्ट्रीय संस्था (National Institution), चुनाव क्षेत्र (Constituency), शिक्षण पद्धति (Education System), शिक्षाविद (Educationalist), अनुशासनवद्ध (Disciplined), सर्वोच्च न्यायालय (Supreme court), अध्यादेश (Ordinance), भूतपूर्व प्रधानमंत्री (The then Prime Minister), प्रशासनिक इकाई (Administrative unit), विदेश नीति (Foregin policy), रक्षा प्रबंध (Security arrangement), प्रशासनिक परीक्षा (Administrative Examination), प्रतियोगिता (Competition), संविधान सभा (Constitution committee), संविधान (Constitution), स्थानांतरण (Transfer), सत्ता हस्तांतरित (Transfer of power);[85] पुस्तकालयाध्य (Head librarian), अवक्रमित (Anti Indexical), जिला मुख्यालय (Dis-

trict Head quarter), पेय जल (Drinking water), परमाणु (Atom), उपक्रम (Under taking), नगरपालिका कार्यालय (Municipality office), विकास पदाधिकारी (Development officer), निर्देशानुसार (By order), कुलपति (Vice chancellor), निर्धारित (Fixed), स्वास्थ्य-अधिकारी (Health officer), सरकारी आवास (Government quarters), स्थगित (Postponed), संपादित (Edited), स्नान गृह (Bathroom), दीक्षांत भाषण (Convocation speech), नियुक्त (Appointed), सूत्रपात (Link), उद्योग-विभाग (Department of Industry), उपसचिव (Deputy Secretary), शिक्षा मंत्री (Education Minister), परिशिष्टांक (Number of appendix), संपादकीय कार्यालय (Office of the Editor).[86]

वर्णमैत्री युक्त शब्दः-

एक ही प्रकार के उच्चारण वाले वर्ण या अक्षर जहाँ प्रयुक्त होते हैं, वहाँ उन-उन शब्दों को वर्णमैत्री-युक्त शब्द कहा जाता है। पद्य में उसे वर्णानुप्रास और छेकानुप्रास के अन्तर्गत रखा जाता है। उसके कारण भाषा में एक प्रकार की ध्वन्यात्मकता पैदा होती है जिसके कारण भाषा अधिक प्रभावशाली एवं अलंकृत बनती हैं। उपन्यास के क्षेत्र में जो विशिष्ट प्रकार के शैलीकार होते हैं उनकी भाषा में यह भाषागत चमत्कार दृष्टिगोचर होता है। भाषाशैली की दृष्टि से डॉ. भगवतीशरण मिश्र को हम एक विशिष्ट शैलीकार कह सकते हैं। उनके उपन्यासों में अनेक स्थानों पर ऐसे वर्णमैत्रीयुक्त शब्द पाए जाते हैं जिनमें से कुछ शब्दों को यहाँ उदाहरणतया प्रस्तुत करने का हमारा उपक्रम है। यथा - आदिम आखेटक, प्रभु प्रेमोन्मादी, अनगिनत अनुभव, विप्र-सुत-सखा सुदामा, राठौरी राजपूत, कमनीय कलिका, अमिट अविनाशी, अधिकार का अपहरण, लावव्यमयी लाड़ली पौत्री, सिमटे-सिकुड़े कमल-पुष्प, कमल-कोमल कृष्णगात, प्रेम-पूरित परमेश्वर, अम्बर-व्यापी अम्बार, संयोग का सहारा, पौराणिक परिकल्पना, सुरभित सुमन, स्निग्ध स्मिति, मांगलिक महोत्सव, मस्त मयूरनी, प्रकाण्ड पण्डिता, प्रबल प्रतिपक्षी, स्वच्छ-स्फटिक-सलिल, वीर-भोग्या वसुन्धरा, शस्य श्यामला धरती, अहम् का आखेट, सुन्दर संगमर्मरी मूर्ति, वात्सल्य-वंचित धेनुवत्स, कलेकित कण्ठ, भक्ति की भागीरथी, दीपाधार के दीप, अनजानी अनियंत्रित शक्ति, अश्रुओं का अनन्त प्रवाह, अजेय अस्त्र, अभ्रपूर्ण आकाश, कज्जल-कटार, पार्थिव प्रेम, मृदुल मुसकान, कोमल-मना कृष्णार्पिता,

आसन्न, समीप सरकती घड़ियाँ, विरह विदग्धिनी, अश्रुपूरित आँखें, पवन-पीड़ित पत्तें, वनस्पतियों का विस्तार, पर्वतीय पवन, निष्ठुर नियति, प्रात: कालीन प्रकाश, स्वर्णिम स्वप्न, अप्रत्याशित आपत्ति, आकस्मिक आनन्द, प्रतिकूल प्रभाव, निष्ठुर निर्णय, स्नेह-सिक्त स्वर, आराध्य की अभ्यर्थना, अनुस्ताह के अथाह सागर, मान-मर्दन, अपमान-पूर्ण अनुभूति, कुटनी कामिनी, सलिलसिंचित राजमार्ग, प्राणघाती पश्चाताप, चिकनी-चिपड़ी बातें, बनी-बनाई बात, निद्रा की नाज-भरी देवी, नेत्र निर्निमेष होना, सलिल-पूरित सरोवर, रूपहली रात, अदम्य आकांक्षा, विचित्र विधान, तरुण तपस्वी, अपार अनुकम्पा, पतली पगडंडियाँ, निष्कलुष, नैसर्गिक प्रेम, विशाल वाहिनी;[87] कराला काली, अनोखा-अदेखा रूप,अनाम आलोक की अनन्त आलोड़ित लहरें, अनूठा अनुभव, नृशंसता का नंगा नाच, अमृत वर्षिणी वाणी, अलौकिक आनंद, वर्षा का वरदान, पुरुष-पुरातन, पृथा-पुत्र पार्थ, असीम आस्था, वीर-वनिता, परिधान-परिवर्तन, अनगिनत अभियान, परम-पुनीत आत्मा, सशस्त्र सलामी, बाल-बनिता, अद्‌भुत आभा, अलौकिक आभा, आध्यात्मिक आख्यान, आह्लादजनक अनुभूति, प्रस्फुटित प्रकाश-किरणें, परब्रह्म परमेश्वर, अशुभ आवाज, कृत्रिम कवायद, पहाड़ी पगडंडियाँ, बेबुनियादी बातें, बलिदान का बकरा, बढ़ती बाढ़, असमय अस्ताचलगामी, असीम अनुकम्पा, अपूर्ण अभिलाषा, अकारण अनुग्रह, मगन-मन, दीर्घ दीप-दान, तेजोदीप्त तप:पूत ब्राह्मण, नव-निर्मित स्वर्ण सिंहासन, जीवन-ज्योति, अनुग्रह-प्राप्त आंजनेय, मरणासन्न महाराज;[88] धरा-धाम, नैसर्गिक-निर्गुण प्रेम, अमर-अनश्वर आत्मा, अशरीरी आत्मा, बेकसूर बेगुनाह अबलाएँ, कनक और कामिनी, अद्‌भुत आकर्षण, भगवान भूतभावन विश्वेश्वर, चटखती चिताएँ, आँसू-भरी आँखे, बेबुनियाद बातें, महिमा-मंडित, आत्मकथात्मक आख्यान, रूहानी रोशनी, प्राणघाती प्रतिद्वंद्विता, अज्ञान का अंधकार, आग की आंच, मुख-मंडल, मुख-मुद्रा, मंद-मंद मुसकराना, अकिंचन आँचल, बगावत का बिगुल, अक्खड़ अद्वैतवादी, सर्वतोभावेन समर्पित, मुंडित मस्तक, प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा, अनंत आँखें, पाँव की प्रतिष्ठा, आजन्म अब्याही, गंदे गड्ढे, चरण-चुंबन, विशुद्ध प्रेम-पीयूष, रागात्मक रूझान, अद्‌भुत अनुकंपा, कुलकलंक, लाल लपलपाती जीभें;[89] अनास्था का अंधकार, लहरों का लोल, चन्दन-चर्चित ललाट, आँचल की ओट, मोहक मुस्कान, भिनभिनाती भीड़, अत्यन्त सन्निकट समापन बेला, कमल-कोमल कपोल, ममतापूर्ण मातामही, अप्रतिम आकर्षण, रजत-रश्मियाँ, धरा-धाम का धन्य होना, विवेकहीन विनाश, उद्‌दंडता की उपेक्षा, पवित्रता का पुष्प, मनहूस मौन, भय का भूत, मुगलिया मिजाज, अवांछित अनुभव, सदा-सलिला सतलज नदी, मरूभूमि की मृगमरीचिका, गरिमापूर्ण गति, प्रतीकात्मक प्रतिदान,

वृन्दावन विहारी, निर्बन्ध नर्तन, परिभाषा की परिधि, अगाध अध्ययन, बात का बतंगड़, दारूण दुर्भाग्य, वाराणसी की वारांगनाएँ, पुनीत परम्परा, विध्वंसक विनाशकारी अभिशाप, प्रातः कालीन पुष्प, प्रक्चन-प्रवीण, अपरिभाषित आह्लाद, अनजाने अपराध;[90] अकल्पि आत्मविश्वास, कोमल-गात किशोर, कपोल-कल्पित कहानी, सदा सलिला स्वर्णिम सतलज, चमचमाते चेहरे, स्नेह-सलिल का सिंचन, सर्वतो भावेन समर्पिता पत्नी, सदा-सलिला सरिता, कालिंदी-कूल, अतिरिक्त अनुकंपा, अंदरूनी आँखें, अनुभवी आँखें, गुस्ताख गुरू, शर्मनाक शिकस्त, नायाब नगीना, अन्याय से अनभिज्ञ, सर्वाधिक सनसनीखेज समाचार, प्रबल प्रेरणा-स्तंभ, पथरीला पथ, बचकानी बातें, अनाम और असहाय दीवार, रक्त-रिसते पैर, श्वेत-श्याम मेघ;[91] नित्य नियम, आरंभिक आलम, चरित्र रूपी चंद्रमा, पाप के पत्थर, प्रतिकूल प्रभाव, आवश्यक औपचारिकता, अहिंसा की अवधारणा, आन्तरिक आह्लाद, सुनहले सपनें, भयावह भविष्य, आनन्दमयी अंगडाइयाँ, अपेक्षापूर्ण आँखें, संदेह का सर्प, सहयोग और सहमति, सत्याचारियों की सहायता, आन्तरिक आनन्द, अनुयायियों पर अत्याचार, प्रसन्नता का पारावार, अमानुषिक अत्याचार, प्रामाणिक प्रतिवेदन, पूर्णतया पंगु, सूरजरूपी स्वर्णथाल, अजस्र अश्रुधारा, आस्था का आकांक्षी, आन्दोलन की आग, अत्याचार का आखेट;[92] प्रसव-पीड़ा की पराकाष्ठि, अर्द्धागिनी का आनन, अनाम आभा, अलौकिक आलोक, अवमानना का अनुभव, कोमलमति कंस, परोपकार और प्रेम की दीप्ति, पूत-पवित्र प्रसाद, सारभूत सौन्दर्य, प्रसवकला-प्रवीणा स्त्रियाँ नवल नीलमणि, स्वर्णिम सपनें, सार्वजनिक संपत्ति, विकृति की वेदी, सुन्दर-सलोना बालक, आँधी भेरे आसमान, प्रचण्ड प्राकृतिक ताण्डव, स्वर्ण-मण्डित सिंहोवाली सवत्सा गौएँ, चाँदी का चाँद, सौम्य सुधासिक्त प्रकाश, सर्वमान्य सम्राट, कोमल-गात कन्हैया, दधि का दर्द, कमल-कोमल गात, प्रेम की पयोधि, मंद-मेघ गर्जन, सजी-सँवरी सबल देह-यष्टि, माखन-चोर मण्डली, दुहरा दयित्व, मन-मुकुर, चर्म-चक्षु, कर्णप्रिय कलरव, कज्ञल-काले मटकें, मातृभूमि की ममता, अन्धकार का अवगुंठन, क्रोधान्ध केसरी, कज्ञल-काले कुन्तल, सयानी सखी, धूल-भरा धूसर मार्ग, स्नेह-सने शीशे, शय्या-सह-सखी, मधुर मुलाकात, अप्रतिम अवदान, आन्तरिक आह्वान, आँसुओं का अर्घ्य, मनहूस मृत्यु-ग्रन्थ, महत्वाकांक्षाओं का मोह-जाल, नटखट निष्ठुर, ईश्वरीय इच्छा, दरिद्रा दासी;[93] अपार अहंकार, संत्रासक सन्नाटा, पुत्र-हन्ता पिता, पल्लवित-पुष्पित लताएं, मचलती-मदमाती द्विरेफ पंक्तियाँ, अकल्पनीय-अप्रत्याशित विरह वेदना, स्वर्गिक संगीत, अतिथि की आत्मा, स्वर्ण-स्यंदन, संभावित स्थितियाँ, साहस का सम्बल, आकाशस्पर्शी अट्टालिकाएं, गगन-चुम्बी गरुड़ ध्वज, मन-मन्दिर, सद्गुणों की

सुगन्ध, मारक मुसकान, मिश्री घुला मधु स्वर, अपार्थिव और आत्मिक समर्पण, अयाचित अनागत विराग राग, रोम-राशिहीन, म्लान-मुख, स्वयंवर का स्वांग, सजे-सँवरे सभागार, अनन्त-अछोर भांडार, कमल-कोमल कर, राशि-राशि सलिल संकुल सागर, पृथ्वी पर प्रादुर्भूत परब्रह्म, पर्वतीय प्रपात, उत्कट उपासना, अनजानी-अनचीन्ही गलियाँ, अनन्त का अवतार, संत्रासक साम्राज्य, विक्षिप्ता विरहिणी, भीमकाय भयावह भल्लूक, दुर्भाग्य-दग्धा माता, पदमगन्धा पुत्री, पद्मगंधा पांचाली, अनुनय-भरी आँखें, भगवाधारी भिखारी, विजन-विपिन, असीम आकाश, पाषाणी परिवेश, कुटिल कूटनीतिज्ञ, कुन्ती की कुक्षि, दुर्धर्ष दुर्योधन, सम्भावना का सूत्र, असफलता-जनित अशान्ति, दुर्मति दुयोर्धन, परिस्थितियों की प्रतिकूलता, कृष्ण के कमल-कोमल पैर, पितामह रूपी प्रचंड समस्या, अनन्त अकीर्ति की गाथा, महाभक्षी-महापापी काम, अहंकार के अंकुर, अदम्य आस्था, उच्चतर उपलब्धि, आँखों का अंकुश, असंयमित-अनियंत्रित मन, सनातन सत्ता, विस्मय-विमुग्धकारी घटना, विशाल वपु, विशद विश्लेषण, संन्यास रूपी सर्प, मनमाना मोड़, पराजय की परिकल्पना, पुआल के पुतले कठोर और कुत्सित कार्य, पत्यक्षदर्शी पार्थ, आत्मघाती अविवेकी मुर्ख, अहंकार की अग्नि, आसन्न आगमन, भगवान भास्कर, बाणों की बौछार, अपमान की अग्नि, अमांसल और अपार्थिव प्रेरणा;[94] सलिल-कुंडों का स्फटिक-सा स्वच्छ जल, श्वेत रमश्रुधारी, दीर्घ दन्त युगल, दारूण दग्धता, लम्बे लांगूल, अंशुमाली का अनुग्रह, अंशुमाली की अपार अनुकम्पा, अनाम-अकल्पित-अपरिभाषित-अपार्थिव स्वरूप, कोमल कृश-गात किशोर, दुर्दान्त दैत्य, अछोर आकर्षण, स्वर्गिक स्वर-धारा, विशाल वक्षस्थल, अंकित अविश्वास, अलौकिक-आध्यात्मिक नाता, सलिल-युक्त एक सरोवर, पागल का प्रलाप, अनाम, अपरिभाषित आनन्द लोक, आन्तरिक आहलाद, सामाजिक संतुलन, विश्वयुद्धों की विभीषिका, दुर्दान्त द्रस्यु, पावन पाद-पद्म, शाश्वत शान्ति, पवन-नन्दन पर्वताकार, आकाशव्यापी आकार, अस्थायी अलगाव राक्षस-राज रावण, आराध्य का अनवेषण, लहरों की लपेट, पुण्य सलिला सरयू, अतिरिक्त अनुकम्पा, सन्तानवत् स्नेह, पतित पावनी जाह्नवी, परम पुनीत देवालय, सभ्यता का साम्राज्य, कोरी कल्पना, स्नेहिल स्पर्श, अश्वमेधीय अश्व, अंगार-सी आँखें, विरूपाक्ष विद्युन्माली, अनाड़ी अनुज, प्रताड़ित पक्षिराज;[95] कपोल कल्पित, तर्क की तलवार, अग्निशिखाओं की आँच, शब्दों का सोपान, अर्थहीन अर्जित ज्ञान की अंधेरी गलियाँ, मंद मृदु सुहास, मोती मूंगोंकी मालाएँ पतित पावनी का पवित्र जल, गुलदस्ते में गुलाब, अज्ञान और अंध विश्वास का अंधकार, मूक मानवता;[96] निर्जल कान्तार का किनारा, पीले पात, पहाड़ों के प्राचीर, पंख-थके पक्षी, सर्वगुण सम्पन्न सीता, लोगों की लोलुप

आँखें, किताबी कीड़ा, कमान कमर, खानदानी खेत, कृपा-कटाक्ष, गगनचुम्बी गुम्बद, सुषमा के सदृश समर्पिता साधिका, समुचित समन्वय, अरण्यों में आरण्यक, पारदर्शी प्रकाश, संगीत सागर, महिषासुर मर्दिनी, अस्थिर आँखें, अपरिभाषित और अननुभूत भावलोक, संकोचशीला सुषमा, असत्य-आचरण, सौम्य-स्नेहिल रूप, प्राचीनता का प्रमाण, अकारण आक्रोश, दर्दहीन दीवारें, कोमल कालीन, पुष्पों के पराग, राह का रोड़ा, अशुभ आरम्भ, आग की आहुति, विनाश का वरण, स्थितप्रज्ञता का सिद्धान्त;[97] अवर्णनीय अलौकिकता,आसमान, की अनन्तता, दहेज रूपी दानव, स्वच्छ सलिल, स्मृतियों का सहारा, विषभरी व्यालिनी, निर्मल नैवेद्य , अपार अनुग्रह, संशय का सर्प, सामयिक समझौता, मनीषरूपी मनका, अनायास अभिव्यक्ति, अनजानी-अनभिज्ञ चीज, पुरातन प्रवृत्ति;[98] सुनहली स्मिति, अनछुआ अर्थ, संवेदनात्मक स्थिति, पर्वतीय पवन, सर्वाधिक सुरभित सुमन, प्राचीनत प्राकृतिक अवदान, अनिवार्य आकर्षण, विश्व-विश्रुत, परिपक्व प्रेरणा, अनाम आनंद, प्यार का प्रदूषण, रजत-रश्मियाँ, गुप्त गोदाम, मध्याह्न का मार्तंड, तरकश के तीर, विशुद्ध वर्तमान, अत्यंत अंतरंग बातें, विलक्षण वाग्मिता, कठोर कपाट, निशीथ की निष्ठुरता, आत्मघाती शस्त्र;[99] साफ-सुथरी जगह, संतोष की साँस, अशरीरी आत्मा, चमत्कारों का चक्कर, पक्का प्रमाण, दिव्य दृश्य, अतुलनीय अतिथि, पूर्ववर्ती पुराणकार आदि-आदि।[100]

ध्वन्यात्मक शब्द

ध्वनि या आवाज से सम्बद्ध शब्दों और क्रियाओं को हम ध्वन्यात्मक शब्दों के अन्तर्गत रख सकते हैं। ऐसे कतिपय शब्दों और क्रियाओं का हमने यहाँ उल्लेख किया है जो डॉ. मिश्र के उपन्यासों में दृष्टिगोचर हुए हैं। यथा लपलपाती तलवार, अट्टहास, गुर्राना, फुसफुसाहट, ठुमुक-ठुमुक, चरमरा देना, हिचकियाँ, बड़बड़ाना, धड़ाम, चख-चख, टिप-टिप, झर्र-झर्र, चिहुँक-चिहुँककर, झनझनाता, खनखनाहट, हिनहिनाहट, बलबलाहट, कड़कती आवाज, फुफकार, रूनझुन, थू-थू, गुर्राहट, हल्ला, गद्‌गद्, टुनटुनाना, गट-गट, खन-खना आना, थपथपाना, खट्-खट्, फफक पड़ना;[101] लहलहाना, धुआंधार, भक्-भक् दहाड़, झुनझुन, उहापोह, तड़ातड़, धड़ाधड़, हुआं-हुआं, खट-पट, ठोक-पीट, चिल्लाहट, फुसफुसाहट, खों खों खों खां खां खां, ठक-ठक, खटखटाना;[102] चटखती चिताएँ, केहां-केहां, भांय-भांय, छल-छल, भों-भों, खटर-पटर, गुनगुनाना, टहोका, खटखटाना, कल-कल;[103] बड़बड़ाना, झक-झक, डुर्र-डुर्र, फोडते-फोड़ते, घट-घट, टप्-टप्-टप्, टन्-टन्, फड़फड़ाना, रिमिझिम, थपथपाना, फुफकारना, डुगडुगी;[104] घरघराहट, गुर्राहट, छपाक, खड़खड़ाहट;[105]

किटकिटाना, धड़ाम, तड़ाम, सी-सी, पटक-पटककर, में! में! में!, फुसफुसाना, तड़ातड़, बड़बड़ाना, खटखटाना, धू-धू, हिनहिनाना;[106] हा! हा! हा!, बुदबुदाना, रून-झुन, फुर्र, ठुनकना, ताता-थैया, ठुमक-ठुमककर, भाँय-भाँय, खीं-खीं, घड़घड़ाहट, छन-छनकर, सरसराहट, सिसकारियाँ, गों-गों, फुत्कार, झर-झर, काँव-काँव, धुर्र-धुर्र;[107] छिः छिः, गुनगुनाना, टपक-टपक, गड़गड़ाहट, खनकना, चीं-चीं, समसनाता तीर, खटखट, कांप-कांप, सर्-सर्, चट्-चट्;[108] धू-धू, डिम्-डिम्-डिम्, डिग-डिग, छिन्-छिन्-छिन्, पी.पी.पी;[109] टुनटुनाना, चहकना, भोपूं, चिंग्धाडना, धुकधुकी, बक-बक, टर्र-टर्र, खचाखच, टन् टन् टन्;[110] खिलखिलाना, टप्पर, टुन-टुन, तड़ तड़ तड़, दनादन, ऊब-चुब, लड़खड़ाना, हड़बड़;[111] भांय-भांय, किर्र-किर्र, गड़गड़ाडाहट, धक्-धक्, फफक्कर (रोना), थपथपाना, आह-ओह, खट, चट-पट, गड़बड़, फूट-फूट कर (रोना), सुबक-सुबक कर रोना, क्रन्दन, छिः, धक्, गुनगुनाना;[112] गिट-पिट, खिलखिलाना, खट-खट, काट-काट आदि-आदि।[113]

दृश्यात्मक शब्द

ध्वन्यात्मक शब्दों के मूल में ध्वनि होती है, परन्तु कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका एहसास हमें देखने से ही होता है। जैसे एक शब्द है 'छिन्न-भिन्न' तो 'छिन्न भिन्न' क्या है उसे हम देखकर ही समझ सकते हैं ऐसे शब्दों को 'दृश्यात्मक शब्द' की संज्ञा दी जा सकती है। यहाँ पर हमने डॉ. मिश्र के उपन्यासों से कुछ दृश्यात्मक शब्दों को उद्धृत किया है। यथा टुकुर-टुकुर, धप-धप सूट, थरथराना;[114] धक्कम-धक्का, उबड़-खाबड़, खींच-तान, टिमटिमाती बत्तियाँ, तोड़-मरोड़कर;[115] टुक-टुक (देखना), गुपचुप, बजबजाती नालियाँ, टूटी-फूटी, लुक-छिपकर, भीड़-भाड़, चकाचौंध;[116] गुदगुदाहट, ऊबड़-खाबड़, खिलखिलाहट, नोक-झोंक, लड़खड़ाना, डगमगाना, अचकचाना, घुट-घुटकर, चूर-चूर, चकमक;[117] हिचकिचाहट, फुरहरी, फुसफुसाहट, छिन्न-भिन्न, भोंचक्का, तार-तार, हक्का-बक्का, लबालब, पोर-पोर, घिसी-पिटी, हौले-हौले;[118] झुंझलाहट, झूम-झूमकर, छटपटाकर, कड़कड़ाता स्वर, थपथपाना, धक्कम-धक्की;[119] हौले-हौले, धुआंधार, लबालब, खलबली, झुनझुन, चकमक, भगदड़, धक्कम-धक्की, थर्रा जाना, कड़कड़ाता स्वर, गुदगुदी, बजबजाती (भीड़) धपधप, दिप-दिप , झल्लाकर, गुत्थम-गुत्थ, चमचमाना;[120] झिलमिलाना, डबडबाना, भिनभिनाना, डगमगाना, भड़काना, थर-थर, छलछलाना, धँसी-धँसी (आँखें);[121] छककर, तार-तार, थुलथुल, झिलमिल, खलबली, गिड़गिड़ाना, बौखलाहट, तमतमाना, चुह-चुहा आना, ऊबड़-खाबड़;[122] थरथराना, तमतमाना, हल्ला-गुल्ला,

कड़कड़ाती (ठंड);[123] टकटकी, अचकचाकर, झटककर, चहककर, तुनककर, टाँग-टूँगकर;[124] झल्लाहट, खिलखिलाना, सकपकाहट, गड्म-गड्;[125] सिहर-सिहर जाना, किलकारियाँ, झनझना आना (शिराएँ), धमा-चौकड़ी, किलकिलाहट आदि-आदि।[126]

क्रियाएँ

'क्रिया' वाक्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। क्रिया के अभाव में वाक्य की रचना हो ही नहीं सकती। वाक्य शब्द समूह को कहते हैं किन्तु वाक्य का सबसे छोटा रूप एक शब्द का भी हो सकता है और जब ऐसा वाक्य होगा तो शब्द के दूसरे रूप उसमें हो न हो, क्रिया तो होती ही है, जैसे, लो, गा, खाओ, चलो, बोलो आदि-आदि । कहने का अभिप्राय यह कि जिस प्रकार बिना प्राण के शरीर का कोई मतलब नहीं होता ठीक उसी प्रकार बिना क्रिया के वाक्य नहीं होता। भाषा में क्रियावाची शब्दों की संख्या तो लाखों की होती हैं अत: डॉ.मिश्र के उपन्यासों में जिन क्रियावाची शब्दों का प्रयोग हुआ है वे भी असंख्य है। अतः उन सबका उल्लेख नहीं किया जा सकता। फलस्वरूप हमने कुछ अलग-सी प्रतीत होनेवाली, विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं को ही यहाँ पर उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। यथा-बिदकना, अंटना, पटवाना, बिलबिलाना, चुगना, उमेठना, चुहचुहा आना, इठलाना, उकेरना, रिझाना, दुलारना, ठनना, उबारना, झुंझलाना, खनखनाना, कोंचना, गल-पथ जाना,कचोटना, थामना, झल्लाना, सकपकाना, गिड़गिड़ाना, तमकना, इतराना, गुनगुनाना, छटपटाना, मचलना, बिलखना, सलटना, तमतमाना, झकझोरना, गम-गम करना, अटना (समाना), बिफरना, दहाड़ना, चहलकदमी करना, सधना, तिलमिलाना, फुफकारना, कुंद होना, टटोलना, लुढ़कना, थिरकना, बतियाना, टेरना;[127] छिजना, चू पड़ना (अश्रु), धर दबोचना, फर्माना, दृष्टि गड़ाना, कचोटना, ऐंठना, खेत होना (शहीद होना), भिड़ना, झल्लाना, रंभाना;[128] थर्रा जाना, फुसलाना, चटखना (चिताएँ चटखना), पनपना, गुर्राना, हकलाना, कड़कड़ाना, बजबजाना (बजबजाती भीड़) दर्शन बघारना, अंटाना (लोगों को अंटाना) पाटना, तिलमिलाना, चकराना;[129] डबडबाना (आँखें डबडबाना), बुदबुदाना, भुनभुनाना, खेई जाना (नौका खेई गई है।), सवारी करना, शौक चर्राना, सिसक पड़ना, मनवाना, मंज आना, छलछला आना, समेटना, फुदकना, तरशवाना, बरगलाना;[130] पट जाना, कतराना, भाजना (तलवार भाजना), सलटना, दुम डुलाना;[131] तमतमाना, चुहचुहा आना, किटकिटाना (दांत किटकिटाना), गुर्राना, बिफरना, खिजाना, रंभाना (गौएँ रंभा उठना), बदना (किस्मत में नहीं बदा था);[132] बिदकना, टेरना, दुबकना, छलछला आना, शिराए

झनझनाना, बखानना, जारना (लंका को जारा), चौंधियाना, छिजना, कौंधना, चकराना, सँवारना, पुतवाना, उबाना;[133] बिछ-बिछ आना, कड़कना, ढुकना, टसकना, सिटपिटा जाना, खुँस जाना;[134] आंतें कुलबुला जाना, भांजना, अचकचाना, निहारना, कान उमेठना, कुरेदना, दहला देना;[135] टुनटुनाना, चहकना, सकपकाना, रुआँसा, अलापना, बुदबुदाना, गदगद होना, उचट जाना, डुलाना, चिहुँकना, पखारना, पीराना , तरासना, पसरना, थिरकना, ठिठकना, लपकना, मह-मह करना, लहलहाना, अकड़ना;[136] भिड़काना, घुड़कना, गड़ाना, तुनकना;[137] कुलबुलाना, पाटना, छनना, खरोचना, सलटना, सधना;[138] गुदगुदाना, फुसफुसाना, लुढ़कना, झोंकना, अचकचाना, सिर नवाना (सिर नवाया), मुँह बिचकाना, उकसाना, मजा किरकिरा होना, सिर नवाना (सिर नवाया), मुँह बिचकाना, उकसाना, मजा किरकिरा होना, लोकना आदि-आदि।[139]

नामधातु क्रिया

यह तो एक सर्वविदित तथ्य है कि धातुमूलक भाषाओं में लगभग 77.77 प्रतिशत क्रियाएँ धातु से निर्मित होती हैं। क्रिया के सबसे छोटे रूप को धातुरूप कहते हैं और हिन्दी में धातु के बाद 'ना' लगाने से क्रियारूप बनता है, जैसे 'लिख' धातु से लिखना, 'बोल' से बोलना, 'पढ' से पढ़ना, 'खा' से खाना आदि-आदि। परन्तु जैसे-जैसे भाषा का विकास होता जाता है जिसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अनुकरणवाची शब्दों आदि से भी क्रियारूपों का निर्माण होता है ऐसी क्रियाओं को नामधातु क्रिया कहते हैं। जैसे 'लात' से लतियाना, 'बात' से बतियाना और 'साठ' से सठियाना आदि-आदि। डॉ. मिश्र के उपन्यासों में भी ऐसी कई नामधातु क्रियाएँ मिलती हैं जिनमें से कुछेक उपन्यासों से ही हम उन क्रियाओं उद्धृत कर रहे हैं। यथा - टुनटुनाना, डगमगाना, थरथराना, सकपकाना, बुदबुदाना, लहलहाना;[140] खिलखिलाना, चहकना, टिमटिमाना, लड़खड़ाना, डबडबाना, बड़बड़ाना;[141] थपथपाना, फफककर रोना, हड़बड़ाना, गुनगुनाना;[142] हिचकिचाना, फुसफुसाना, चरमराना, खनखनाना, चिहुँकना, झनझनाना, हिनहिनाना, छटपटाना, झुंझलाना, तिलमिलाना, बतियाना;[143] खटखटाना, हकलाना, गिड़गिड़ाना, झल्लाना;[144] कड़कड़ाना, बजबजाना, टरटराना, फसलाना, तिलमिलाना;[145] झिलमिलाना, डबडबाना, बड़बड़ाना, भिनभिनाना, छलछलाना, फड़फड़ाना, थपथपाना, बरगलाना आदि-आदि।[146]

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ पर क्रिया किसी की प्रेरणा से हो रही हो ऐसा भाव विद्यमान होता है वहाँ उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे 'लिखना' मूल क्रिया है उसकी प्रेरणार्थक क्रियाएँ होंगी लिखाना और लिखवाना। यहाँ पर 'लिखाना' को हम प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और 'लिखवाना' को द्वितीय प्रेरणार्थक कहेंगे। यहाँ पर डॉ. मिश्र के उपन्यासों से इस प्रकार की कुछ क्रियाओं को उद्धृत किया जा रहा है। यथा-हिलाना, (प्रथम प्रेरणा), डुलाना (प्रथम प्रेरणा), सजाना (प्रथम प्रेरणा), सँवारना (प्रथम प्रेरणा), पिटाना (प्रथम प्रेरणा), पटवाना (द्वितीय प्रेरणा), खनखनाना (प्रथम प्रेरणा), रिझाना (प्रथम प्रेरणा), जुटाना (प्रथम प्रेरणा);[147] कराना (प्रथम प्रेरणा), उठाना (प्रथम प्रेरणा), गिराना (प्रथम प्रेरणा), बुलाना (प्रथम प्रेरणा), पढ़ाना (प्रथम प्रेरणा), दिलवाना (द्वितीय प्रेरणा), तोड़ना (प्रथम प्रेरणा);[148] गड़ाना (प्रथम प्रेरणा), दिखाना (प्रथम प्रेरणा), खोलना (प्रथम प्रेरणा), झुकाना (प्रथम प्रेरणा), सिखाना (प्रथम प्रेरणा), बुलवाना (द्वितीय प्रेरणा), नहवाना (द्वितीय प्रेरणा), करवाना (द्वितीय प्रेरणा), उगलवाना (द्वितीय प्रेरणा);[149] छुड़ाना (प्रथम प्रेरणा), फोड़ना (प्रथम प्रेरणा), बरसाना (प्रथम प्रेरणा), बनाना (प्रथम प्रेरणा), उठाना (प्रथम प्रेरणा), मनवाना (द्वितीय प्रेरणा), लगाना (प्रथम प्रेरणा), चढ़ाना (प्रथम प्रेरणा), कराना (प्रथम प्रेरणा), तरशवाना (द्वितीय प्रेरणा), उतरवाना (द्वितीय प्रेरणा);[150] खिजाना (प्रथम प्रेरणा), उड़ाना (प्रथम प्रेरणा), छापना (प्रथम प्रेरणा), थमाना (प्रथम प्रेरणा), बजाना (प्रथम प्रेरणा), सुनाना (प्रथम प्रेरणा), उतराना (प्रथम प्रेरणा), दिखाना (प्रथम प्रेरणा), उतारना (प्रथम प्रेरणा);[151] उबाना (प्रथम प्रेरणा), (प्रथम प्रेरणा)उधम मचाना (प्रथम प्रेरणा), उठाना (प्रथम प्रेरणा), घूमाना (प्रथम प्रेरणा), बढाना (प्रथम प्रेरणा), मिलाना (प्रथम प्रेरणा), कहलवाना (द्वितीय प्रेरणा), ढालना (प्रथम प्रेरणा), हिलाना (प्रथम प्रेरणा), सम्हालना (प्रथम प्रेरणा);[152] भिजवाना (द्वितीय प्रेरणा), पालना (प्रथम प्रेरणा), दिखलाना (द्वितीय प्रेरणा), दिलाना (प्रथम प्रेरणा), बांधना (प्रथम प्रेरणा), मोड़वाना (द्वितीय प्रेरणा), दहलना (प्रथम प्रेरणा);[153] भिड़ाना (प्रथम प्रेरणा), उतारना (प्रथम प्रेरणा), पकड़ाना (प्रथम प्रेरणा), ढुकाना (प्रथम प्रेरणा), खिलाना (प्रथम प्रेरणा), बजाना (प्रथम प्रेरणा), गढ़ाना (प्रथम प्रेरणा), डुलाना (प्रथम प्रेरणा), पीराना (प्रथम प्रेरणा);[154] गलाना (प्रथम प्रेरणा), पचाना (प्रथम प्रेरणा), बिछाना (प्रथम प्रेरणा), जोड़ना (प्रथम प्रेरणा) आदि-आदि।[155]

भाववाचक संज्ञा

भाववाचक संज्ञा, संज्ञा का एक प्रकार है। व्यक्ति वाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा आदि दृश्यमान है। परन्तु भाववाचक संज्ञा अमूर्तहोती है क्योंकि उसके मूल में कोई भाव होता है और भाव अमूर्त होता है। जैसे उदाहरण के तौर पर हम कहे कि 'यह लड़की सुन्दर है' तो यहाँ पर 'सुन्दर' विशेषण होगा। इसी 'सुन्दर' से 'सुन्दरता' या 'सौन्दर्य' जैसे शब्द हम बनाते हैं तो उन शब्दों को 'भाववाचक संज्ञा' कहा जाता है। कुछ संज्ञाएं मूल रूप से भाववाचक होती हैं, जैसे सत्य, क्षमा, सुख आदि, परन्तु कुछ अन्य शब्दों से बनाई जाती हैं। जैसे वीर से वीरता, दौड़ना से दौड़ आदि। इस प्रकार की भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण संज्ञाओं सर्वनामों, विशेषणो, अव्ययों और धातुओं से होता है। प्रायः 'ता', 'त', 'पन', 'हट' आदि प्रत्यय भाववाचक संज्ञा में आते हैं। यहाँ डॉ. मिश्र के कुछेक उपन्यासों से ऐसे कुछ शब्दों को हमने कोटिबद्ध किया है। यथा आजादी, कमजोरी, विवशता, बेहोशी, खुमारी, जिम्मेदारी, प्राचीनता, बौनापन;[156] अहल्यापन, मेहमानबाजी, छिछोरापन, पागलपन, दीर्घसूत्रता, मितव्ययिता, सौदाबाजी, सट्टाबाजी, नजाकत, नादानी;[157] गुदगुदाहट, खिलखिलाहट, मतित्व, शैतानी, अकेलापन, एकाकीपन, बदनामी, छटपटाहट, अमरत्व;[158] फुसफुसाहट, झुंझलाहट, घड़घड़ाहट, सरसराहट, वैधव्य;[159] सकपकाहट, झल्लाहट, वाचालता, देवत्व, ईश्वरत्व, अकुलाहट, गुर्राहट, गड़गड़ाहट, मुस्कराहट, लड़कपन;[160] खिलखिलाहट, कवित्व, निराशावादिता, निस्संगता, सतीत्व, उतावलापन, भोलापन, किलकिलाहट, अमरत्व, स्निग्धता, विनोदप्रियता;[161] हिचकिचाहट, चाटुकारिता, अभिभवाकत्व, खुलापन, खालीपन, घबराहट, पिछड़ापन, थपथपाहट;[162] चिल्लाहट, खैरियत, हैसियत, इन्सानियत, जरूरत, मासूमियत, बर्बादी, कामयाबी, बादशाहियत;[163] बेदर्दी, लड़कपन, ईमानदारी, मुँहफटपन, अक्खड़पन, मेहमानबाजी, काहिलपन, हकूमत, बगावत, काबिलियत;[164] मनमानेपन, शैतानी, गुस्ताखी, गुलामी, अटकलबाजी, चरमराहट, बन्धुत्व, मनमौजीपन, अहमियत, बेबसी, बेरुखी, कालापन, पीलापन, खनखनाहट;[165] गुर्राहट, हिदायत, खैरियत, हिकायत, खिदमत, नज़ाकत, रुख्सत, शख्सियत;[166] अक्खड़पन, उत्सुकता, असलियत, बदलाव, मतित्व, छिड़काव, मनमानापन आदि-आदि।[167]

ध्वनि पुनरावर्तन वाले शब्द

भाषा में स्वाभाविकता लाने के लिए कई बार शब्दों को पुनरावर्तित किया

जाता है। कई बार दो क्रियाओं को एक साथ रख देते हैं तो कई बार दो संज्ञाओं को साथ में रखा जाता है। इनमें ऐसे शब्द भी होते हैं कि जिनमें पुनरावर्तित शब्दों से भी अर्थ निष्पन्न होते हैं परन्तु कई बार पुनरावर्तित शब्दों में ऐसे शब्द भी आते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता या प्रथम शब्द के परिप्रेक्ष्य में वे शब्द निरर्थक से लगते हैं, जैसे - 'हलाते-डुलाते','चलती-फिरती', 'देखभाल', जैसे शब्दों में तो दोनों शब्दों के अर्थ निकलते हैं परन्तु 'गाना-साना' या 'रोटी-सोटी' जैसे शब्दों में द्वितीय शब्द निरर्थक सा प्रतीत होता है यहाँ हमने डॉ. मिश्र के उपन्यासों से कुछ इस प्रकार के शब्दों को श्रेणीबद्ध किया है। यथा - लड़ने - कटने, हिलाते - डुलाते, अता-पता, आमने - सामने, ओर-छोर, रूंड-मुंड, मार-काट, पढ़ाई-खिलाई, गिने-चुने, रोते-बिलखते, खान-पान, ढूंढ-ढांढ, भोज-भात, रेल-पेल, गाजे-बाजे, चलती-फिरती, टेढ़े-मेढ़े, इर्द-गिर्द, देख-भाल, नंग-धडंग, ना-नुकुर, ढूढते-ढांढते, लड़ाई-भिड़ाई, टूटे-फूटे, समझाने-बुझाने, घिसी-पिटी, ऐसा-वैसा, बची-खुची, नोच-खचोट, ठाठ-बाट, चिकनी-चुपड़ी, तेज-तर्रार, उमड़ते-घुमड़ते, अगल-बगल, थकी-हारी, लोटती-पोटती;[168] भूले-भटके, लोटते-पोटते, हट्टे-कट्टे, लेखा-जोखा, तोड़-फोड़, पोथी-पतरा, ऊबड़-खाबड़, घेर-घार, देख-रेख, छिट-पुट, पूछ-ताछ, लूट-खसोट, तहस-नहस, डील-डौल, दूर-दराज, ठाठ-बाट;[169] चीं-चपड़, चोट-ओट, ऐरे-गैरे, ऐसा-वैसा, बेच-बाचकर, उथल-पुथल, खटर-पटर, ठीक-ठाक, काम-धाम, तोड़-मरोड़, हल्का-फुल्का, आम-फाम, बारा-न्यारा, ऊब-चूब, जाति-पांति, ताक-झांक, लूट-पाट, चाल-ढाल, घूमते-घामते, हट्टे-कट्टे, बचा-खुचा, झाड़ी-झंखाड़, शूकर-कूकर;[170] भीड़-भाड़, अलग-थलग, कभी-कभार, गुल-थुल, श्रान्त-क्लान्त, हरित-भरित, टूटी-फूटी, गोरे-चिट्टे, पूछना-पाछना, नोक-झोंक, उलटते-पुलटते, डील-डौल, अड़ोसी-पड़ोसी, सूझ-बूझ[171], तड़क-भड़क, मेल-जोल, सांठ-गांठ, तहस-नहस, छेड़-छाड़, कटे-फटे, चेहरा-मोहरा, दौड़-धूप[172], धड़ाम-तड़ाम, गप्प-शप्प, घास-फूस, लुंज-पुंज, सड़ी-गली, खींच-खाच, सजे-धजे, रख-रखाव, बूंदा-बांदी, तितर-बितर, ढीला-ढाला, नामी-गिरामी, डेरा-डंडा, खून-खराबा, फोड़े-फुसी, माल-असबाब, कूड़ा-करकट, लोट-पोट, गाली-गलौज, घूम-घामकर[173], गली-कूचे, हक्का-बक्का, रेल-पेल, पच-खप, पलती-पुसती, नोचते-खसोटते, झूमते-झामते, पालथी-ओलथी, आमोद-प्रमोद, भोली-भाली, होशो-हवास, झाड़-झंखाड़, खुसर-फुसर, करने-धरने[174], झूमते-झामते, घूमता-घामता, हल्ला-गुल्ला, चिपकता-ओपकता[175], ओर-छोर, बची-खुची, समझे-बुझे, गड्म-गड्डु, खींच-खांच, बचे-खुचे[176], साफ-सुथरा, टांग-टूंगकर, काली-कलटी, घूम-घामकर[177], घड़ी-घण्टों,

चलने-वलने, रंगाई-पुताई, दंगे-फसाद, बवाल-ओवाल, ऊसर-बंजर, शर्म-वर्म, गाँव-पड़ोस, ट्रेनिंग-फ्रेनिंग, हो-हल्ला, चूल्हा-चौका, शिक्षा-दीक्षा, खेलता-कूदता, छुपते-छपाते, लुक-छिपकर, धो-पौंछकर, डूबने-उतराने, न्हाने-धोने, लाद-लूदकर, लगी-लगाई, रोते-गाते[178], जोर-शोर, मिलती-जुलती, खींच-तान, मैला-कुचैला, नाती-पोते, नौकरी-चाकरी, गिरते-पड़ते, अच्छी-भली, अच्छी-खासी, चलते-चलाते, परिचय-वरिचय, ढोल-झाल, हिल-मिल, ताल-मेल[179], चपड़ा-लत्ता, टूटे-फूटे, चाहता-ओहता, टोक-टाक, जोश-खरोश, सड़ना-गलना, ढोर-डांगर, घुस-पैठ[180], गलाना-पचाना, गिट-पिट, छुई-मुई, रोब-दाब, सूटेड-बूटेड, गुप-चुप, अदला-बदली, नई-नवेली, गांधी-आंधी आदि-आदि।[181]

युग्म शब्द

भाषा में दो शब्द (सार्थक) निश्चित रूप से एक साथ प्रयोग में आयें तो उन्हें 'युग्म' की संज्ञा दी जाती है। इन दोनों पदों में कभी-कभी विपरीत अर्थ वाले शब्द भी होतें हैं, जैसे उतार-चढ़ाव और कभी उसी अर्थवाचक दूसरा अन्य शब्द कपड़ा-लता और कभी मिलते-जुलते या समानार्थी शब्द, जैसे-ओढ़ना-बिछौना, भारी-भरकम आदि। डॉ. मिश्र के कुछेक उपन्यासों से कुछ उदाहरण इस प्रकार है : हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, रात-दिन, सुबह-शाम, जाड़ा-गर्मी, खिलना-झड़ना, लगी-लगाई, लड़ते-कटते[182], रेल-पेल, खींच-तान, दुलार-प्यार, उतार-चढ़ाव, उल्टे-सीधे, आरोह-अवरोह[183], काला-कलूटा, ठिगना-नाटा, झाड़-झंखाड़, बड़ाई-छोटाई, सहेली-सखी, दुबली-पतली, कभी-कभार, टहले-घूमे, अर्चना-आराधना[184], झुग्गी-झोपड़ी, वैध-अवैध, समत्कर्ष-उत्कर्ष, शोध-अन्वेषण, बुभूक्षित-क्षुधापीड़ित, भीतर-बाहर, लोभ-लालच[185], दुलारना-पुचकारना, सहलाना-दुलारना, हाँफना-कराहना, मोटा-तगड़ा, इधर-उधर, साधना-उपासदना, पूत-पवित्र, लता-वल्लरी, कूदते-फांदते, आरोध-अवरोध, करणीय-अकरणीय, छल-प्रपंच[186], रख-रखाव, भागती-दौड़ती, आन्दोलित-आलोड़ित, आकांक्षा-महत्वाकांक्षा, अपमान-उत्पीड़न, उत्थान-उत्कर्ष, श्रान्त-क्लान्त, राजा-महाराजा, आशा-आकांक्षा, समृद्धि-सम्पत्ति, लुका-छिपी, माप-तौल, पाला-पोसा, भारी-भरकम, सजाना-सँवारना, घूमी-फिरी, प्रताड़ित-अपमानित, मीन-मत्स्य, शत-सहस्र, सोच-विचार, भूला-भटका, अवदान-उपदान, कुरूप-विद्रूप, खाई-खन्दक, अणु-परमाणु, अंग-प्रत्यंग, जान-समझ, बन्धु-बान्धव, भाग-दौड़, दौड़ती-भागती, राग-अनुराग, उठना-बैठना, पशु-पक्षी, पेड़-पौधें, दौड़ता-फांदता, गला-पचा, उमड़ते-घुमड़ते, पूत-पुनीत, शुद्ध-विशुद्ध, चिन्तन-

मनन, सम्मान-सत्कार, पालन-पोषण, कर्ता-धर्ता, अस्त्र-शस्त्र, क्षत-विक्षत, संयोग-वियोग, आदान-प्रदान, खिली-अधखिली, चढ़-उतर, लेना-देना, कल्याण-अकल्याण, आगत-अनागत, ताप-शीत, अपने-पराये, फल-कुफल, सफलता-असफलता, प्रिय-अप्रिय, निन्दा-प्रशंसा, अध्ययन-अध्यापन, आसक्ति-अनासक्ति, आत्मा-परमात्मा, जन्म-मरण, तर्क-कुतर्क, प्रगति-अवनति, लोक-परलोक, राग-विराग, अस्ति-नास्ति, जड़-चेतन, कृत्य-कुकृत्य[187], पिता-माता, डूबना-तैरना, स्त्री-पुरुष, शोभन-अशोभन, चर-अचर, देवी-देवता, आदेश-निदेश, कवि-लेखक, बुरा-भला, नर-नारी, बाल-वृद्ध, ताप-संताप, सिद्ध-साधक, देखना-परखना, बाधा-विपदा, आशीर्वाद-वरदान, ऋषि-मुनि, लालन-पालन, समीप-पास, भूति-विभूषण, जानी-पहचानी, साधना-उपासना, योगी-यति, आरोह-अवरोह, आकुलता-विकलता, आकर्षण-विकर्षण, शौर्य-साहस, सेवा-शूश्रुषा, भूलते-भटकते, झूमता-डोलता, आग्रह-अनुरोध, ध्वनित-प्रतिध्वनित, धूल-मिट्टी, जाति-प्रजाति, घुला-मिला, विस्मय-विमुग्ध, भूत-पिशाच, उपासना-आराधना, साज-शृंगार, धुलाई-सफाई, उत्सव-महोत्सव, दुआ-प्रार्थना, नियामक-नियंत्रक, अक्षय-अजस्र, घाट-सोपान[188], चाहे-अनचाहे, गोप-गोपांगना, सोते-जागते, आवर्तन-प्रत्यावर्तन, आगे-पीछे, मान-अपमान, असली-नकली, समय-असमय, सत्य-असत्य, परिचय-अपरिचय, दिन-रात, सज्जन-दुर्जन, धनी-दरिद्र, उपस्थिति-अनुपस्थिति, हिलाते-डुलाते, रानी-पटरानी, आन्दोलित-उद्वेलित, शादी-ब्याह, रोते-बिलखते, क्वाँरी-अनब्याही, अर्चना-आराधना, पूजा-अर्चना, उछलना-कूदना, सिमटे-सिकुड़े, शोभा-सुषमा, प्रोद्भासित-प्रकाशित, चीखती-चिल्लाती, क्रीडा-कौतुक, अमंगल-अपशकुन, दैन्य-दारिद्रय, चूल्हा-चौकी, साधु-संन्यासी, खेत-खलिहान, सुरभि-सुगन्ध, जादू-टोना, वाद-विवाद, अपमान-अवमानना[189], बर्तन-वासन, अजर-अमर, उछलते-फांदते, शोषक-लुटेरे, सैकडों-सहस्त्रो, कर्ता-धर्ता, उलटते-पलटते, तृष्णा-पिपासा, अमीर-उमराव, शिक्षण-प्रशिक्षण, आदेश-उपदेश, सुलह-सन्धि, जड़-मूल, सलाह-मशविरा, मेल-मिलाप, जड़-चेतन[190], रैन-बसेरा, खरा-खोटा, ऊँच-नीच, सूरज-चाँद, दिवा-रात्रि, संध्या-प्रातः, गति-अगति, विष-अमृत, प्रकाश-अंधकार, जय-पराजय, यश-अपयश, शांति-अशांति, स्पृश्य-अस्पृश्य, कुसंगति-सुसंगति, विचित्रता-विडंबना, लोक-परलोक, साधु-संत, तालाब-पोखर, कृपा-अनुकंपा, उपेक्षित-तिरस्कृत, मौलवी-मौला,पंडित-पुजारी, अभिलाषा-आशा, पतिव्रता-पतिपरायणा, पंडा-पुजारी, पाहन-पाथर, तूफान-झंझावात, इच्छा-अभिलाषा, नियंता-निर्माता, नाज-नखरा, जांच-परख, तन-बदन, विभेद-विभाजन, धन-दौलत, इज्जत-प्रतिष्ठा, वैद्य-हकीम[191], जय-पराजय, चुस्त-दुरुस्त, अच्छाई-बुराई, कोष्ठ-प्रकोष्ठ, पराधीनता-

परतंत्रता, अखंडता-एकता, मंजिल-गन्तव्य, सुलह-सन्धि, सदा-सर्वदा, पुलकित-आहलादित, आलोड़न-प्रत्यालोड़न, प्रताड़ित-पीड़ित, आंधी-तूफान, बाँदियाँ-दासियाँ, संन्यास-वैराग्य, लटकें-झटकें आदि-आदि।[192]

निरर्थक शब्दों तथा ध्वनिमूलक शब्द को लेकर भी युग्म बनाए जाते हैं। यहाँ पर हमने उन शब्दों के पुनरावर्तन को टाला है, क्योंकि ध्वन्यात्मक शब्दों के अन्तर्गत उन शब्दों का उल्लेख हो चुका है। इसी प्रकार एक सार्थक और दूसरा निरर्थक शब्द लेकर भी युग्म बनाए जाते हैं, जैसे-भीड़-भाड़, भोला-भाला, उथल-पुथल आदि उक्त प्रकार के शब्दों का उल्लेख भी हम ध्वनि-पुनरावर्तन वाले शब्दों के अन्तर्गत कर चुके हैं। हमने शब्दों की पुनरावृत्ति को यथासम्भव टाला है, क्योंकि इस प्रकार की शब्दावली काफी व्यापक है।

नए रूपक

भाषा-शैली के आलंकारिक बनाने के लिए लेखक कई बार रूपकों का प्रयोग करता है। वैसे तो हम सामान्य बातचीत में जाने-अनजाने अनेक रूपकों का प्रयोग करते रहते हैं, जैसे जीवन-सागर, या नर-राक्षस, परन्तु यहाँ हमने इस प्रकार के रूपकों को उद्धृत किया है जिनमें कुछ नयापन या विशिष्टता है। यहाँ रूपकों के साथ में ही उपन्यास का नाम तथा पृष्ठ संख्या का निर्देश कर दिया गया है। यथा-

(01) मन-मन्दिर : सूरज के आने तक : पृ.सं. 47।

(02) सपनों की मायावी दुनिया : वही पृ.सं. 65।

(03) भाग्य - आकाश : वही : पृ.सं.69।

(04) तार्किक का गर्म तवा : वही : पृ.सं.96।

(05) आस्था की बूंदे : वही : पृ.सं.96।

(06) तर्कों की खोलः वहीः पृ.सं.96।

(07) शब्दों का भ्रम-जाल : वहीः पृ.सं. 111।

(08) शब्दों का सोपानः वहीः पृ.सं.111।

(09) अर्थहीन अर्जित ज्ञान की अंधेरी गलियाँः वही : पृ.सं. 112।

(10) शब्दों और आख्यानों की बैसाखी : वहीः पृ.सं.112।

(11) साम्प्रदायिकता की आगः वहीः पृ.सं.127।

(12) साधना की ज्वालाः वहीः पृ.सं. 156।

(13) अज्ञान और अन्धविश्वास का अंधकार : वही : पृ.सं. 156।

(14) आत्मविश्वास और स्वावलम्बन का प्रकाश : वही : पृ.सं. 156।

(15) अज्ञान और अनास्था का घोर मरु: वही: पृ.सं. 166।

(16) ज्ञान और आस्था की आशाप्रद ओयसिस: वही: पृ.सं. 166।

(17) ज्ञान और विश्वास का सबल प्रकाश स्तम्भ : वही : पृ.सं. 166।

(18) क्रान्ति की ज्वाला : वही : पृ.सं. 166।

(19) मन की आँखें : वही : पृ.सं. 119।

(20) अनुभव की दुहाई : वही : पृ.सं. 91।

(21) महत्वाकांक्षाओं की दौड़ नदी नहीं मुड़ती : पृ. 6।

(22) महत्वाकांक्षा की आंधी : वही : पृ. 8।

(23) मन पंछी : वही : पृ. 13।

(24) सुझाव की पोटली : वही : पृ. 18।

(25) रूप-गुण की रस्सी : वही : पृ. 24।

(26) गरीबी की पाठशाला : वही : पृ. 39।

(27) आस्था का आलोक : वही : पृ. 66।

(28) सदाचार का दामन : वही : पृ. 83।

(29) संगीत सागर : वही : पृ. 100।

(30) रूप और कंठ की बैसाखी : वही : पृ. 100।

(31) इच्छाओं की वेदी : वही : पृ. 107।

(32) शब्दों की डोर : वही : पृ. 116।

(33) स्नेह-जल : वही : पृ. 127।

(34) आकांक्षा की पतंग : वही : पृ. 132।

(35) रूप और गुण का खजाना : वही : पृ. 156।

(36) प्रतिभा-लता : वही : पृ. 175।

(37) महत्वाकांक्षा का सर्प : वही : पृ. 181।

(38) राजनीति का गलियारा : वही : पृ. 184।

(39) सदाचार की पतंग : वही : पृ. 184।

(40) लेन-देन की दलदल : वही : पृ. 147।

(41) जीवन-आकाशः एक और हत्याः पृ.5।

(42) संशय रूपी तरकशः वही : पृ. 8।

(43) प्रश्न-बाणः वही : पृ. 8।

(44) दहेज रूपी दानव : वही : पृ. 9।

(45) कुलीनता की पट्टी : वही : पृ. 10।

(46) दहेज की खाई : वही : पृ. 10।

(47) जिज्ञासा रूपी सर्प : वही : पृ. 11।

(48) परीक्षा का मनहूस चौखट : वही : पृ. 14।

(49) मिथ्या की दीवार : वही : पृ. 15।

(50) लालच की डोर : वही : पृ. 18।

(51) देश रूपी गाड़ी : वही : पृ. 32।

(52) स्मृतियों के मधु-कटोरे : वही : पृ. 33।

(53) निराशा का भाटा : वही : पृ. 34।

(54) मधुर स्मृतियों की वादियाँ : वही : पृ. 35।

(55) स्मृतियों की वीथियाँ : वही : पृ. 35।

(56) स्मृतियों की वीथियाँ : वही : पृ. 36।

(57) आमदनी रूपी रस : वही : पृ. 42।

(58) प्रतिभा का बिरवा : वही : पृ. 48।

(59) मन के अश्व : वही : पृ. 52।

(60) संकोच की अनावश्यक दीवार : वही : पृ. 56।

(61) आदर्श का हिमालय : वही : पृ. 57।

(62) बन्दूक का साया : वही : पृ. 58।

(63) भविष्य की अट्टालिकाः पृ. 73।

(64) वर्तमान की नींव : पृ. 73।

(65) यौवन की दहलीजः पृ. 79।

(66) मृत्यु-मुँह : वही : पृ. 81।

(67) स्मृतियों का ज्वार : वही : पृ. 87।

(68) मस्तिष्क की देहली : वही : पृ. 87।

(69) टी.वी. और फिल्म तथा नाटक, नृत्य की बैसाखियाँ : वही : पृ. 93।

(70) प्रेम रूपी बिरवा : वही : पृ. 99।

(71) सोच के घोड़े : वही : पृ. 102।

(72) संभावनाओं के कल्पित द्वार : वही : पृ. 103।

(73) स्मृतियों के रश्मिविहीन अश्व : वही : पृ. 107।

(74) पृथा के मन के राजहंस : वही : पृ. 123।

(75) आश्वस्ति, विश्वास और आशा के सुकोमल पुष्प : वही : पृ. 125।

(76) आशंका और अविश्वास की चट्टान : वही : पृ. 125।

(77) अतीत के खंडहर : वही : पृ. 133।

(78) उत्सुकता की आग : वही : पृ. 137।

(79) ज्ञान की गठरी : वही : पृ. 143।

(80) प्रश्न-सर्प : वही : पृ. 150।

(81) अवसर रूपी घोड़े : वही : पृ. 151।

(82) दु:ख के असंख्य अंगारे : वही : पृ. 156।

(83) सुख का प्रकाश : वही : पृ. 156।

(84) संशय की ज्वाला : वही : पृ. 156।

(85) स्मृतियों के डोर : वही : पृ. 157।

(86) गलत सम्बन्धो की डोरी : वही : पृ. 157।

(87) मिथ्या सम्बन्ध की डोर : वही : पृ. 157।

(88) आदर्श का शिखर : वही : पृ. 172।

(89) मन-आकाश : वही : पृ. 175।

(90) एम.ए., एम.एस.सी. की चौखट : वही : पृ. 176।

(91) घर-गृहस्थी की गाड़ी : वही : पृ. 182।

(92) सहानुभूति के धागे : वही : पृ. 182।

(93) आश्वस्ति का दामन : वही : पृ. 196।

(94) निद्रा रूपी स्वर्गिक वरदान : वही : पृ. 212।

(95) साहित्य की सीढ़ी : वही : पृ. 213।

(96) राजनीति का सिंहासन : वही : पृ. 213।

(97) आशाओं का झूला : वही : पृ. 237।

(98) सपनों के गाँव : वही : पृ. 237।

(99) स्मृतियों की वादियाँ : वही : पृ. 241।

(100)नाम-यश की बैसाखी-लक्ष्मण-रेखा : पृ. 7 ।

(101) अंटिबाइटिक्स की बैसाखियाँ : वही : पृ. 14।

(102) संयम का डंडा : वही : पृ. 16।

(103) भावनाओं की वीथियाँ : वही : पृ. 17।

(104) मकानों का जंगल : वही : पृ. 18।

(105)जीवन-क्षितिज : वही : पृ. 20।

(106) विश्वंभर रूपी रवि : वही : पृ. 23।

(107) कानून की ओट : वही : पृ. 38।

(108) प्रगति रूपी अट्टालिका : वही : पृ. 73।

(109) प्रसिद्धि का शिखर : वही : पृ. 109।

(110) समय-समुद्र : वही : पृ. 92।

(111) जीवन रूपी जलयान : वही : पृ. 92।

(112) भ्रष्टाचार रूपी सुरसा : वही : पृ. 94।

(113) राजनीति का ककहरा : वही : पृ. 122।

(114) नारो, आंदोलनों और घेरावों की बैसाखी : वही : पृ. 138।

(115) मन के तरकश के तीर : वही : पृ. 127।

(116) समय की निर्दय शिला : वही : पृ. 133।

(117) मन-कमल : वही : पृ. 137।

(118) जीवन - रथ : वही : पृ. 147।

(119) समय की शिला : वही : पृ. 147।

(120) नवीन रूपी भृंग : वही : पृ. 152।

(121) राजनीति का पंक : वही : पृ. 156।

(122) सेमिनार रूपी अखाड़े : वही : पृ. 164।

(123) पीड़ा का नर्क : वही : पृ. 171।

(124) राजनीति का दलदल : वही : पृ. 157।

(125) आशीर्वाद-कवच : पवनपुत्रः पृ. 12।

(126) ज्ञान-दान-यज्ञ : वही : पृ. 23।

(127) मातृ-स्नेह की रज्जु : वही : पृ. 41।

(128) जीवन-प्रवाह : वही : पृ. 45।

(129) अपरिचय की खाई : वही : पृ. 50।

(130) परिचय का सेतु : वही : पृ. 50।

(131) अनुग्रह-दान : वही : पृ. 53।

(132) सौहार्द की आश्वस्ति : वही : पृ. 55।

(133) ममता-मेघ : वही : पृ. 60।

(134) प्रतिभा-सरिता : वही : पृ. 81।

(135) घृणा और विद्वेष की खाई : वही : पृ. 83।

(136) मृत्यु की वेदी : वही : पृ. 85।

(137) स्नेह-सेतु : वही : पृ. 83।

(138) राजनीतिक दासता की कठोर श्रृंखला : वही : पृ. 85।

(139) प्रलय के बादल : वही : पृ. 86।

(140) मोह-पाश : वही : पृ. : वही : पृ. 92।

(141) कोप की लपटें : वही : पृ. 95।

(142) अवसाद की गहरी वादियाँ : वही : पृ. 125।

(143) अहंकार-नाग : वही : पृ. 130।

(144) वरदान रूपी अभेद्य कवच : वही : पृ. 159।

(145) भक्ति-भाव की गंगा : वही : पृ. 246।

(146) धनुष रूपी जहाज : वही : पृ. 261।

(147) आत्मश्लाघा और अहंकार के झाड़-झंखाड़ : वही : पृ. 265।

(148) बाधा के पहाड़ : वही : पृ. 267।

(149) भगवद्भक्ति और परोपकार के अनमोल पद्म-पुष्प : वही : पृ. 272।

(150) सुख के असंख्य द्वीप : वही : पृ. 272।

(151) अनास्था की रिक्त झोली : वही : पृ. 272।

(152) सत्संग-रूपी प्रयाग : वही : पृ. 309।

(153) चिन्ता-सर्पिणी : वही : पृ. 311।

(154) अन्धकार के पर्दे : वही : पृ. 338।

(155) लंका-रूपी कारागार : वही : पृ. 348।

(156) जीवन-अध्याय : वही : पृ. 350

(157) पुराणों अथवा इतिहासों का अथाह सागर : प्रथम पुरुषः पृ. 8।

(158) विचारों की भूल-भूलैया : वही : पृ. 25।

(159) हँसी के फव्वारें : वही : पृ. 39।

(160) आशाओं की रंगीन डोरी : वही : पृ. 41।

(161) सफलता का गुलाल : वही : पृ. 41।

(162) शत्रु रूपी कंटक : वही : पृ. 57।

(163) विचारों के अश्व : वही : पृ. 63।

(164) सृष्टि का पौधा : वही : पृ. 71।

(165) अहम् का बुलबुला : वही : पृ. 72।

(166) सौन्दर्य-अमृत : वही : पृ. 99।

(167)प्रेम रूपी डोर : वही : पृ. 133।

(168) संकोच की झीनी चादर : वही : पृ. 199।

(169) समस्या की रस्सी : वही : पृ. 201।

(170) मौन की बर्फ : वही : पृ. 213।

(171) लोक-कल्याण रूपी यज्ञाग्नि : वही : पृ. 229।

(172) परिस्थितियों की प्रतिकूलता के थपेड़े : वही : पृ. 237।

(173) समस्या की गेंद : वही : पृ. 239।

(174) क्रोध रूपी नाग-फन : वही : पृ. 266।

(175) अपयश की हवा : वही : पृ. 266।

(176) संवाद का घृत : वही : पृ. 268।

(177) उद्विग्नता के मेघ : वही : पृ. 281।

(178) प्रसन्नता के पवन-झकोरें : वही : पृ. 281।

(179) अश्रुरूपी ओस-बूंदे : वही : पृ. 351।

(180) वचनों की असह्य आँच : पुरुषोत्तम : पृ. 32

(181) प्रसन्नता और उल्लास की लालिमा : वही : पृ. 14।

(182) पलकों-रूपी तट : वही : पृ. 22।

(183) ज्ञान की गठरी : वही : पृ. 37।

(184) प्रतिशोध की अग्नि : वही : पृ. 52।

(185) सत्य की आग : वही : पृ. 50।

(186) बातों के वात्याचक्र : वही : पृ. 68।

(187) सद्गुणों की सुगन्ध : वही : पृ. 68।

(188) शिशुपाल रूपी श्रृगाल : वही : पृ. 70।

(189) बलराम रूपी बाधा : वही : पृ. 78।

(190) राजनीति का चौरस : वही : पृ. 88

(191) संशय का झूला : वही : पृ. 120।

(192) श्वासों की सीढ़ियाँ : वही : पृ. 133।

(193) होठों की कैद : वही : पृ. 133।

(194) अवमानना का अन्धा गर्त : वही : पृ. 134।

(195) भावनाओं के चक्रव्यूह : वही : पृ. 134।

(196) प्रश्नों की दीवारें : वही : पृ. 145।

(197) परब्रह्म रूपी महासागर : वही : पृ. 152।

(198) निराशा का तम : वही : पृ. 167।

(199) समय रूपी बहेलिया : वही : पृ. 295।

(200) आकाश-कुसुम : वही : पृ. 213।

(201) दुर्वचनों की झड़ी : वही : पृ. 221।

(202) महासमर रूपी महासमुद्र : वही : पृ. 253।

(203) आशंका का एक साधारण झोका : वही : पृ. 257।

(204) अमरता का राज-पथ : वही : पृ. 272।

(205) ज्ञान-मोतियों : वही : पृ. 298।

(206) कर्म-योग रूपी यज्ञ : वही : पृ. 310।

(207) ज्ञान रूपी नौका : वही : पृ. 313।

(208) सुख की मृग-मरीचिका : वही : पृ. 327।

(209) आँखों का अंकुश : वही : पृ. 329।

(210) बुद्धि की लगाम : वही : पृ. 337।

(211) प्रश्नों के कई परिन्दें : वही : पृ. 391।

(212) विषय वासना रूपी कोंपलें : वही : पृ. 405।

(213) कर्म रूपी जड़े : वही : पृ. 405।

(214) संसार रूपी वृक्ष : वही : पृ. 405।

(215) असंग रूपी तीक्ष्ण अस्त्र : वही : पृ. 406।

(216) निष्कर्मता रूपी परम सिद्धि : वही : पृ. 421।

(217) कर्ण रूपी साक्षात काल : वही : पृ. 435।

(218) भीष्म रूपी भयावह बाढ़ : वही : पृ. 435।

(219) संदेह के असह्य स्फुलिंग : वही : पृ. 438।

(220) श्रीकृष्ण रूपी पाषाणी तटस्थता : वही : पृ. 445।

(221) पराक्रम रूपी सूर्य : वही : पृ. 468।

(222) अश्वत्थामारूपी आकस्मिक व्यवधान : वही : पृ. 480।

(223) द्रोण रूपी कौरव-ध्वज : वही : पृ. 485।

(224) महाभारत रूपी स्वप्न : वही : पृ. 492।

(225) धर्म का विजय-ध्वज : वही : पृ. 494।

(226) प्रजापालन-यज्ञ : पीतांबरा : पृ. 19।

(227) मृत्यु का द्वार : वही : पृ. 34।

(228) चिन्तन की पतंग : वही : पृ. 21।

(229) मन का मानसरोवर : वही : पृ. 34।

(230) कालुष्य का कीचड़ : वही : पृ. 34।

(231) राजा जोधा रूपी बिड़ाल : वही : पृ. 22।

(232) स्वार्थ की अन्धी दौड़ : वही : पृ. 34।

(233) संकीर्णता की भ्रामक दौड़ : वही : पृ. 34।

(234) प्रेम का निर्झर : वही : पृ. 37।

(235) नैतिक मूल्यों का ध्वज : वही : पृ. 28।

(236) मन का पक्षी : वही : पृ. 37।

(237) तन का पिंजड़ा : वही : पृ. 37।

(238) अवस्थाओं की दहलीज : वही : पृ. 31।

(239) प्रश्न के बबूले : वही : पृ. 51।

(240) वरदानों की झड़ी : वही : पृ. 64।

(241) लाभ-वल्लरी : वही : पृ. 109।

(242) धैर्य का बांध : वही : पृ. 126।

(243) सौभाग्य - सूर्य : वही : पृ. 126।

(244) वात्सल्य की स्रोतस्विनी : वही : पृ. 89।

(245) आशाओं की वल्लरी : वही : पृ. 129।

(246) मातृप्रेम की समाधि : वही : पृ. 129।

(247) कृष्ण-प्रेम की अट्टालिका : वही : पृ. 129।

(248) खतरे के मेघ : वही : पृ. 198।

(249) आक्रामकों के अजगर : वही : पृ. 204।

(250) जयमल रूपी वनाश्व : वही : पृ. 147।

(251) जीवन-वृक्ष : वही : पृ. 148।

(252) शिष्य-शिष्याओं के बिरवे : वही : पृ. 148।

(253) तन-पुष्प : वही : पृ. 230।

(254) भक्ति की भागीरथी : वही : पृ. 230।

(255) ज्ञान-कानन : वही : पृ. 148।

(256) काव्य-चर्चा के अखाड़े : वही : पृ. 149।

(257) किशोरावस्था की देहली : वही : पृ. 237।

(258) विभेद की पक्की दीवार : वही : पृ. 239।

(259) चित्तौड़ की चौकट : वही : पृ. 240।

(260) निष्ठुरता का विषः : वही : पृ. 249।

(261) अनिश्चितता का झूला : वही : पृ. 264।

(262) व्रणों के हस्ताक्षर : वही : पृ. 266।

(263) सांगा रूपी मगरमच्छ : वही : पृ. 271।

(264) सपनों का संगमर्मरी महल : वही : पृ. 280।

(265) भौहों की कज्जल-कटार : वही : पृ. 285।

(266) विद्रोह की चिनगारी : वही : पृ. 289।

(267) प्राण-पंछी : वही : पृ. 292।

(268) भाग्य का कपाट : वही : पृ. 294।

(269) कल्पना-अश्व : वही : पृ. 295।

(270) मौन की अर्गला : वही : पृ. 297।

(271) उपालंभो का नैवेद्य : वही : पृ. 298।

(272) विद्रोह का झंड़ा : वही : पृ. 298।

(273) कल्पना - लता : वही : पृ. 303।

(274) मानवता का भाल : वही : पृ. 398।

(275) दैहिक सम्बन्ध की बैसाखी : वही : पृ. 350।

(276) सुख के विहग : वही : पृ. 377।

(277) पराधीनता की बैड़ियाँ : वही : पृ. 399।

(278) भक्ति-भाव के कमल : वही : पृ. 371।

(279) मन का उपवन : वही : पृ. 414।

(280) हृदय का पुष्पोद्यान : वही : पृ. 396।

(281) पश्चाताप की भारी गठरी : वही : पृ. 427।

(282) अपमान का गरल : वही : पृ. 493।

(283) स्वाभिमान का सर्प : वही : पृ. 494

(284) जीवन रूपी शटक : वही : पृ. 520।

(285) संदेह का घेरा : वही : पृ. 525।

(286) आशंका का अंकुर : वही : पृ. 528।

(287) मन रूपी दर्पण : वही : पृ. 527।

(288) इच्छाओं के सुनहले अश्व : वही : पृ. 542।

(289) अवसर रूपी अश्वः : वही : पृ. 565।

(290) नास्तिकता की पट्टी : वही : पृ. 578।

(291) पीड़ा की बदली : वही : पृ. 600।

(292) प्रभु-प्रेम की डगर : वही : पृ. 606

(293) संकट के बादल : वही : पृ. 622

(294) परतंत्रता की बेडियाँ: पहला सूरज : पृ. 17

(295) जीवन रूपी रथ: वही : पृ. 19

(296) जीवन की चादर : वही : पृ. 37

(297) पर्वतों की पाषाणी छातियाँ : वही : पृ. 52

(298) धर्म की धजा : वही : पृ. 59

(299) समय के पन्ने : वही : पृ. 129

(300) वीरता और चरित्र के अमिट हस्ताक्षर : वही : पृ. 124

(301) इतिहास का आकाश : वही : पृ. 125

(302) सदाचार की शाखा : वही : पृ. 134

(303) पुण्य का फल : वही : पृ. 134

(304) किस्मत का सितारा : वही : पृ. 172

(305) अफजल रूपी राहु : वही : पृ. 192

(306) अफजल रूपी काल : वही : पृ. 193

(307) संदेह के अंकुर : वही : पृ. 225

(308) अपमान की कड़वी घूंट : वही : पृ. 228

(309) दुर्दिन के बादल: वही : पृ. 264

(310) सपनों का शीशमहल : वही : पृ. 332

(311) दुःख के बादल : वही : पृ. 335

(312) प्रेरणा और प्रोत्साहन का प्रदीप : वही : पृ. 336

(313) व्यंग्य-बाण : वही : पृ. 345

(314) अहम् के अंकुर : वही : पृ. 347

(315) संप्रदाय का सर्प : देख कबीरा रोया : पृ. 14

(316) दिल का आइना : वही : पृ. 21

(317) कामिनी रूपी फंदा : वही : पृ. 23

(318) नागिन रूपी नारी : वही : पृ. 23

(319) तर्क रूपी अस्त्र : वही : पृ. 24

(320) रहस्य का आवरण : वही : पृ. 25

(321) काव्य-गगन : वही : पृ. 26

(322) लोभ-लालच का दलदल : वही : पृ. 29

(323) विचार-तरंगे : वही : पृ. 29

(324) लांछन की उंगलियाँ : वही : पृ. 30

(325) पश्चाताप की अग्नि : वही : पृ. 30

(326) कबीर रूपी सूर्य : वही : पृ. 31

(327) चुंबनों की बौछार : वही : पृ. 39

(328) आत्म-कथा की माला : वही : पृ. 41

(329) संकीर्णता की अंधी गलियाँ : वही : पृ. 41

(330) अहिंसा, सहिष्णुता और अपरिग्रह की मिसाल : वही : पृ. 42

(331) निर्गुण-सगुण की दीवार : वही : पृ. 47

(332) उलटवांसियों रूपी मंजूषा : वही : पृ. 48

(333) इन्द्रिय रूपी दस द्वार : वही : पृ. 51

(334) ज्ञान-गंगा : वही : पृ. 53

(335) वात्सल्य का हिमखंड : वही : पृ. 61

(336) असत्य के बिच्छू के डंक : वही : पृ. 62

(337) कांटों की शय्या : वही : पृ. 71

(338) ज्ञान का दीपक : वही : पृ. 71

(339) भावनाओं की लहरें : वही : पृ. 74

(340) भक्ति-भाव रूपी घृत : वही : पृ. 75

(341) साधना रूपी साध्वी : वही : पृ. 75

(342) त्रिगुणों की फांस : वही : पृ. 75

(343) गार्हस्थ्य की अट्टालिका : वही : पृ. 77

(344) झूठ की गंदगी : वही : पृ. 77

(345) माया रूपी दीपक : वही : पृ. 94

(346) सोच के बवंडरः वही : पृ. 101

(347) राम-नाम का रसायन : वही : पृ. 102

(348) अरमानों के धज्जेः वही : पृ. 106

(349) अभिलाषाओं और आशाओं के शीशमहलः वही : पृ. 106

(350) शर्म के पंखः वही : पृ. 107

(351) जीवन-पृष्ठ : वही : पृ. 129

(352) दुर्भाग्य का दलदल : वही : पृ. 135

(353) भय के जंगलः वही : पृ. 138

(354) नारी-सौंदर्य रूपी फूलः वही : पृ. 168

(355) राम-नाम रूपी दौलतः वही : पृ. 182

(356) शील का तालाबः वही : पृ. 185

(357) वासना रूपी विष : वही : पृ. 186

(358) विजय-पताका : वही : पृ. 202

(359) पाप का पंक : वही : पृ. 213

(360) आदमियों का सैलाब : वही : पृ. 226

(361) संप्रदायिकता का दानव : वही : पृ. 233

(362) रेल लाइनों का जाल : वही : पृ. 233

(363) संयम का ठंडा जल : वही : पृ. 244

(364) समय की शिला : वही : पृ. 245

(365) पुरुष रुपी वृक्ष : वही : पृ. 264

(366) विषय वासना की पट्टी : वही : पृ. 272

(367) श्रद्धा का बिरवा : वही : पृ. 273

(368) सुख के मेघ : वही : पृ. 309

(369) दुःख की घटाएँ : वही : पृ. 309

(370) भक्ति की आँच : वही : पृ. 328

(371) आलोचना रूपी आग : वही : पृ. 190

(372) सभ्यता की भूली-भटकी किरण : वही : पृ. 368

(373) संकल्प का दृढ़ चट्टानः का के लागूं पांव : पृ. 36

(374) संदेह का भूत : वही : पृ. 46

(375) भाषा की दीवार : वही : पृ. 57

(376) विषबूझे विचारों के अदृश्य तीर : वही : पृ. 60

(377) यौवन की दहलीज : वही : पृ. 65

(378) विसर्जन की भयावह घाटी : वही : पृ. 66

(379) घृणा, ईर्ष्या और कलह का कूड़ा : वही : पृ. 142

(380) उदासी के दौरे : वही : पृ. 151

(381) शब्दों की कैंची : वही : पृ. 158

(382) कर्म की बैसाखी : वही : पृ. 173

(383) धर्म की ओट : वही : पृ. 192

(384) प्रसन्नता और आह्लाद की लहरें : वही : पृ. 206

(385) वटवृक्ष रूपी सनातन धर्म : वही : पृ. 212

(386) सफलता रूपी अट्टालिका : वही : पृ. 272

(387) सद्विचारों की वर्षा : वही : पृ. 361

(388) स्मृति-मंजूषा : वही : पृ. 451

(389)निर्णय की शिला : वही : पृ. 468

(390) भ्रम की भूल-भूलैया : वही : पृ. 250

(391) अपमान के घूँट : गोबिन्द गाथा : पृ. 61

(392) समय की आंधी : वही : पृ. 104

(393) मायूसी और गम की अंधेरी रात : वही : पृ. 135

(394) हुसैन खां रूपी सैलाब : वही : पृ. 145

(395) आनन्दपुर का आसमान : वही : पृ. 152

(396) विद्रोह की आग : वही : पृ. 158

(397) आनन्दपुर रूपी सूरज : वही : पृ. 167

(398) खालसा का झंडा : वही : पृ. 217

(399) प्रतिशोध की अग्नि : वही : पृ. 221

(400) संधि की ओट : वही : पृ. 238

(401) शत्रु रूपी खूंखार भेड़ियाँ : वही : पृ. 277

(402) परमात्मा रूपी प्यारा मित्र : वही : पृ. 287

(403) विजय का सेहरा : वही : पृ. 307

(404) मृत्यु की दहलीज : वही : पृ. 313

(405) जीवन-पुस्तक : वही : पृ. 313

(406) अपशब्दों की बौछारः शान्तिदूत : पृ. 8

(407) न्याय की तुला : वही : पृ. 11

(408) चरित्र रूपी चंद्रमा : वही : पृ. 21

(409) अवहेलना रूपी बाण : वही : पृ. 25

(410) बैरिस्टरी की बैसाखी : वही : पृ. 33

(411) दलाली की बैशाखी : वही : पृ. 37

(412) स्वाभिमान का सर्प : वही : पृ. 42

(413) आशा का सूर्योदय : वही : पृ. 43

(414) उन्नति का उत्तुंग शिखर : वही : पृ. 88

(415) राष्ट्र-प्रेम रूपी अद्‌भुत झंकार : वही : पृ. 131

(416) सूरजरूपी स्वर्णथाल : वही : पृ. 134

(417) कामना-वासना की लहरें : वही : पृ. 144

(418) विश्वास की सुगन्ध : वही : पृ. 148

(419) असहयोग रूपी यज्ञाग्नि : वही : पृ. 153

(420) आजादी का स्वर्णप्रभात : वही : पृ. 178

(421) गाँधी रूपी दिनमान : वही : पृ. 186

(422) स्वतंत्रता की देवी : वही : पृ. 188

(423) स्वतंत्रता की अधकटी रोटी : वही : पृ. 191

(424) दासता की कठोर लौह कड़ियाँ : वही : पृ. 12

(425) दंगे के घाव : वही : पृ. 193

नए विशेषण

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे सुन्दर लड़की, लाल गाय, गोल टेबल, ठिगना आदमी आदि शब्दों में सुन्दर, लाल, गोल, ठिगना आदि विशेषण है। सामान्य तौर पर हम बात-बात में विशेषणों का प्रयोग करते हैं। विशेषणों का प्रयोग स्पष्टता, निश्चितता तथा प्रभावोत्पादकता के

लिए होता है। कवियों के मूल्यांकन का एक मापदंड यह भी होता है कि वो कैसे और कितने विशेषणों का उपयोग करता है। संस्कृत के कवियों में बाणभट्ट को विशेषणों का कवि (Poet of Adjectives) कहा जाता है, क्योंकि उनके द्वारा प्रणीत 'कादम्बरी' में कई बार एक-एक पृष्ठ तक विशेषणों की हारमाला चलती हैं। यहाँ हमने सामान्य विशेषणों को न लेते हुए कुछ विशिष्ट प्रकार के विशेषणों को लिया है। उदाहरणतया यदि हम काला बादल, सलेटी बादल, छोटा बादल या बड़ा बादल कहते हैं तो उनमें प्रयुक्त विशेषणों को हम सामान्य प्रकार के विशेषण कह सकते हैं। उनसे कोई भाषागत चमत्कार निष्पन्न नहीं होगा परन्तु यदि कोई कहता है आवारा, बादल, यायावरी बादल, यक्षदूत बादल तो इन विशेषणों से एक विशिष्ट प्रकार के भाषागत चमत्कार की सृष्टि होगी। यहाँ पर हमने डॉ. मिश्र के उपन्यासों से कुछ इस प्रकार के नए या विशिष्ट विशेषणों को छाँटकर रखने का प्रयास किया है। डॉ. मिश्र के उपन्यासों के अध्ययन से हमें यह भी ज्ञात होता है कि विशेषणों की तरह लेखक ने अनेक स्थानों पर विशेषण पदबंधों का भी प्रयोग किया है और कुछ विशेषण तो विशेषण विपर्यय अलंकार की सीमा को भी स्पर्श करते हैं। यथा- पुश्तैनी दोस्ती, गीले शब्द, सौन्दर्य पारखी कालिदास, कातिलाना हमला, झाड़ीदार बिरवा, मनहूस शांति, उदास आँखें, तेजमयी आँखें, पंडिताऊ बुद्धि, कठोर यथार्थ, सर्वग्रासी मौत, किताबी ज्ञान, भोंडी नकल, डंकनुमा मूंछे, बूढ़ी कांपती उंगलियाँ, ईश्वरीय उपहार, पाक मुहब्बत, निरक्षर भट्टाचार्य, टटपुंजिया नौकरी, धुआंधार भाषण, मीठी-मीठी भीनी-भीनी गंध[193], उद्देश्यहीन भटकाव, पारदर्शी आँखें, चट्टानी आधार, अजन्मा प्रभात, लड़खड़ाती आवाज, टिमटिमाती बत्तियाँ, चाहे-अनचाहे अतिथि, लोलुप आँखें, ईश्वरीय अनुग्रह, ईश्वरीय प्रेरणा, ईश्वरीय न्याय, पारदर्शी प्रकाश, तटस्थ मुस्कान, तमतमाया चेहरा, अलसाया मन अन्धविश्वासपूर्ण मस्तिष्क, दूधिया प्रकाश, संजयी दिव्यदृष्टि[194], जलता प्रश्न, मधुभीगी स्मृति, अर्थ-दस्यु समाज, मनहूस चौखट, दमघोटू क्षण, ईश्वरीय वरदान, जवाबी तमंचा, अपवित्र दलाली, दुधारू संचिकाएँ, निरामिष बहाने, लिजलिजा सर्पो, कोमल अभिव्यक्ति, बनावटी दर्द, आयातित संस्कृति, नाज़ायज़ पैसे, लोलुप दृष्टियाँ, खोखली प्रतिबद्धता, सुनहली धूप, अनन्त-अनाम गहराइयाँ, अपरिचित गहनता, पाशविक प्रसन्नता, मनचले मजनू, स्वर्णिम वरदान, गुस्ताख जीभ, फूहड़ अभिव्यक्ति, खनकते शब्द[195], आत्मघाती छलांग, स्वर्णस्नाता पहाड़ियाँ, सफेद मुस्कान, पर्वतीय पवन, अपरिभाषित प्रसन्नता, वनैले फूल, बरसाती दिन, इल्हामी मुहर, बेदर्द पहाड़ियाँ, अर्थपूर्ण मुस्कान, सूची भेद्य तम, पुनीत-अमांसल प्रेम, प्रश्नवाचक दृष्टि, निश्चयात्मक स्वर, अभेद अभिन्नता,

कृत्रिम मुस्कान, पुनीत प्रेरणा, वितृष्णापूर्ण दृष्टि, अकाट्य तर्क, दुर्बल शब्द, मरणधर्मा संसार, लंगड़ी भाषा, अनुत्तरित प्यार, विलक्षण वाग्मिता, मनहूस लक्ष्मण-रेखा, सफेद झूठ, मनहूस अध्याय, तीखी गंध, चहेता चाँद, चकमक जीवन, अपूरणीय कटाई, बनैले विषधर[196], अशरीरी अस्तित्व, विनम्र लक्ष्य, मानसिक उधेड़बुन, गम्भीर चेहरे, गोपनीय संचिकाएँ, मादक गन्ध, लम्बे-लम्बे इकहरे पुरुष, मदहोश पानीदार आँखें, सांगोपांग अध्ययन, अतुलनीय अतिथि, अशरीरी आत्माएँ, उत्सुक नजरें[197], गन्धवाही वायु, अलौकिक विलक्षणता, तर्कशील बुद्धि, तपोरता अंजना, सर्वग्रासी भूख, प्रलयकारी आग, दारूण दग्धता, सर्वग्रासी अन्धकार, अन्वेषण बुद्धि, अशरीरी संवाद, पार्श्ववर्ती नदियाँ, प्रकाश प्रदाता आदित्य, चिलचिलाती धूप, अर्थपूर्ण दृष्टि, विगलित स्वर, ईश्वरीय विधान, नर-भक्षी राक्षस, गन्धवाही पवन, अछोर आकर्षण, मौन आकुलता, अबूझ भाषा, कालदर्शी कल्पना, उर्वर मस्तिष्क, कर्णभेदी ध्वनि, निर्णायिका बुद्धि, धवल चरित्र, अकथनीय कथन, आकाशीय चेतना, निरभ्र आकाश, अगाध विश्वास, वनैले महिष, नमकीन गंध, आकाशव्यापी आकार, अन्नत लहरें, कराला राक्षसियाँ, उपेक्षापूर्ण दृष्टि, शूलनुमा नाखून, गुनगुनाती द्विरेफ पंक्तियाँ, गहरी वादियाँ, रक्ताभ आँखें, प्रश्नभरी दृष्टि, प्रत्युत्पन्न मतित्व, सर्वग्रासी अग्नि, अहैतुकी कृपा, मृदु मुस्कान, चमचमाता चाँद, सहज स्नेहिल मन, गौरांग रात्रि, उत्तेजक किलकारियाँ, पुनीत दायित्व, दाशरथि राम, धवल गाथा, वायवीय इच्छा, असीम अनुग्रह, कोरी कल्पना, स्नेहिल स्पर्श, स्नेहिल आँच, लम्बी स्वर्णिम रोमावलियाँ, निराधार लांछना, वेद-पाठी धर्मज्ञ ब्राह्मण, अप्रतिम वरदान, अल्हड़ जड़-प्रपात, पर्वतीय विहग, कोरी उड़ान, अकारण अनुकम्पा[198], सूर्यतनया जमुना, अनाम आभा, शनि-दृष्टि, अमानुषिक आनन्द, बरसाती नदी, बरसाती तूफानी रात, सूची भेद्य अंधकार, सौंधी मीठी गंध, लौह उँगलियाँ, मनमानी उड़ाने, रूपहली चांदनी, गन्धवाही मन्द बयार, आत्मीय मुस्कान, आकाशचारी चन्द्रमा, नेतृत्वहीन मानसिकता, कुटिल मुस्कान, मारक मुस्कराहट, वनैले सूअर, मरणधर्मा धरती[199], संत्रासक सन्नाटा, बूढ़ी आँखें, निष्ठुर हाथ, अनबूझ पहेलिका, अथाह आत्मविश्वास, सौम्य आनन, खड़खड़ाते पत्तें, क्षीण पतली दूरी, खूंखार गगनस्पर्शी लहरें, स्नेहिल स्वरूप, निष्ठुर विवशता, अलमस्त उन्मुक्तता, लुभावनी डोर, गंगा-यमुनी केश, लच्छेदार शब्द, अहैतुकी दया, ईश्वरीय क्रीड़ा, जघन्यतम पराध, इश्वरीय तटस्थता[200], अंधी अभिलाषा, निरीह खिलौना, असूयँपश्या नारियाँ, लुभावनी लालिमा, अछूता सौंदर्य, रेगिस्तानी सूर्य, स्निग्ध स्मिति, बरसाती जल-प्रपात, मस्त मयूरनी, नीर-क्षीर विवेकिनी मीरा, वीर-भोग्या वसुन्धरा, वीर-प्रसूता धरती, शस्य श्यामला धरती, गिद्ध दृष्टि, कूटनीतिक कदम, कूटनीतिक

भूल, सर्वग्रासी पिपासा, मरणधर्मा मनुष्य, खनखनाते स्वर, भोली स्मृतियाँ कोरा सपना, स्वप्निल सौंदर्य, तरल दृष्टि , दमघोंटू सन्नाटा, छलनामयी शान्ति, आत्मीय दृष्टि, रेतीली आंधियाँ, रून्झुन संगीत, सर्वग्रासी लपटें, लड़खड़ाते शब्द, स्वप्निल प्रयास, गुलाबी समय, गुनगुनी धूप, ललचाई दृष्टि[201], नीर-क्षीर विवेकिनी शक्ति, अनोखा-अदेखा रूप, असीम आस्था, अमृतवर्षिणी वाणी, बनावटी क्रोध, उत्सुक आँखें, आदमखोर जानवर, अमिट हस्ताक्षर, कड़कती आवाज, नाजुक मिजाज, नापाक इरादें, मनहूस सवाल, मजहबी इन्सान, विष-बुझे तीर, डगमगाती आस्था, गुस्ताख निगाहें, खुराफाती दिमाग, अहैतुकी कृपा, बोझिल संवाद, ख्याली दुनिया[202], इल्हामी मुहब्बत, वर्णसंकरी भाषा, ईश्वरीय अनुकंपा, खुदाई रहमत, मज़हबी तकादें, खुदाई मुहब्बत, लंगड़े तर्क, लुढ़कता सूरज, पैनी बुद्धि, रूहानी रोशनी, मुसलमानी गंध, अकिंचन आँचल, बजबजाती भीड़, दूरगामी दृष्टि, अकाट्य उत्तर, कोरी नादानी, सूक्ष्मान्वेषिणी दृष्टि, चुभती दृष्टि, बौछारी दिन[203], आहत मुस्कान, प्रशंसात्मक दृष्टि, बगला भगत, पर्वतीय बयार, धर्मपरायण धरती, फौलादी ताकत, इल्हामी ताकत, समुद्री पादप, भुनभुनाती औरतें, बेरहम लहरें, वनैले फूल, सवालिया चिह्न, विवेकहीन विनाश, मनहूस सवाल, मनहूस आवाज, अड़ियल रुख, ललचाई आँखें, स्वर्णाभि पीलापन, चुभती दृष्टि, उपेक्षाजनित पीड़ा, प्रतीकात्मक प्रतिदान, चट्टानी मनोबल, प्रश्न-भरी दृष्टि, ईश्वरीय, इल्हामी प्रेम, मुगलिया नजर, रूहानी प्रतिभा, अपरिभाषित आह्लाद, बहुआयामी प्रतिभा[204], पवित्र पुनीत भाषा, क्वाँरे अरमान, बिल्लीनुमा सिपाही, अंदरुनी आँखें, खुदाई शख्सियतें, इल्हामी ताकत, इन्सानी मुहब्बत, अनुभवी आँखें, गुस्सेल सिपहसालार, बंकिम गलियाँ, नापाक कोशिश, मौन सन्नाटा, रूहाई तकाजें, रेतीली हवाएँ, मरणधर्मा व्यक्ति, प्रश्नवाचक दृष्टि[205] चुभती दृष्टि, झेंपू स्वभाव, कौतूहल-पूर्ण मुसकान, ईश्वरीय अनुकम्पा, रामनामी चादर, स्मित-युक्त चेहरें, खुफिया पुलिस, नरभक्षी सरकार, अस्थायी उत्साह, बेमिसाल बेदर्दी, दुर्भाग्यग्रस्त सौभाग्य, घड़ियाली आँसू, नापाक हाथ, अमिट पृष्ठ आदि-आदि ।[206]

विशेषण पदबंध

(01) सबसे प्रतिष्ठित विद्वान,स्थानीय राधाकृष्ण मन्दिर के पुजारी नूनूबाबा

(02) कंस विदारक, भव-भय नाशक, राधा-वल्लभ कृष्ण

(03) पढ़ा-लिखा विद्वान सम्भ्रान्त पति[207]

(04) उतरती-चढ़ती, सीधी-बंकिम पगडंडी

(05) एक नई,अनजानी और अपरिचित सुषमा

(06) धुरन्धर विद्वान, वेद-पाठी पंडित गोकुल झा

(07) अनाम, अकल्पित आध्यात्मिक गहराईयाँ[208]

(08) पंख फड़फड़ाते औपचारिक शब्द

(09) गेरूआ वस्त्रधारी, लम्बी-लम्बी गंगा-यमुनी दाढी-मूंछ एवं जटाजूटधारी पाखण्डी

(10) मोहक मुस्कान-भरी रंग - बिरंगी तितिलियाँ[209]

(11) पहाड़ियों के क्रोडों में धीरे-धीरे सरकता, क्षण-क्षण पर रंग बदलता किरण विहीन, तेज-रहित गोला

(12) विविध रंगोवाले, उजले, भूरे, चितकबरे, लंबे-छोटे बंदर और लंगूर

(13) मुस्कराता-इठलाता छल-छद्म पूर्ण चाँद

(14) अर्द्ध उन्मीलित, धुंधलका-भरी आँखें[210]

(15) अनाम, अकल्पित, अपरिभाषित, अपार्थिव स्वरूप

(16) मंडलाकार घूमते मांस-लोलुप पक्षी

(17) बालि की मार से भागे, रक्त-स्वेद से आपाद-मस्तक स्नात, पीड़ित प्रताड़ित, भयभीत सुग्रीव

(18) एक-वेणी युक्ता, नत-सिरा, मलिनमुखी, दुर्भाग्य-दग्धा जनक -सुता

(19) चराचरजयी त्रैलोक्यपति लंकेश रावण

(20) विरूपा, दारूण रूप, कराला राक्षसियाँ

(21) देव-दानव जयी त्रैलोक्यपति परमवीर रावण

(22) मद्यपायी, नर मांस-भक्षी,द्यूत-प्रेमी, पर-स्त्री गामी दैत्य

(23) अपार, अकल्पित, अवर्ण्य, अछोर और अमर्यादित शोक

(24) शत-सहस्त्र, प्रेत-पीड़ित, विक्षिप्त-अर्ध - विक्षिप्त व्यक्ति

(25) 'नीलाम्बुज' - श्यामल कोमलांग श्रीराम

(26) गगनव्यापी, कनक-भूधराकार, वपु[211]

(27) मूर्त, पुँजिभूत मधुसिंचित मुसकान

(28) सौम्य, सुधासिक्त प्रकाश-बिम्ब

(29) स्वच्छ सलिल-भरे, कमल-कुमुदिनी-आच्छादित सरोवर

(30) मस्त, मधुगन्धी बयार[212]

(31) पुष्पों पर डोलती, मचलती, मदमाती द्विरेफ-पंक्तियाँ

(32) अकल्पनीय अप्रत्याशित विरह-वेदना

(33) चुभती, गहरी और कजरारी आँखें

(34) बिलखती, विवर्णमुखा, सिन्दु-विहीना विधवाएँ

(35) कायरतापूर्ण, अनर्गल, अर्थहीन प्रलाप

(36) अकल्पनीय, अवर्णनीय, अचिन्तनीय शक्ति

(37) सत्यनिष्ठ, धर्माचारी, बालब्रह्मचारी, तप के साक्षात् विग्रह भीष्म[213]

(38) जाग्रत, प्रेम-प्लावित भक्ति-पूरित हृदय

(39) इठलाती, मचलती अपनी मस्ती में बहतीं नदियाँ

(40) लालची, दम्भी, अज्ञानी पुरोहित

(41) अनपढ़, अशिक्षित और असभ्य आदिवासी

(42) सुन्दर, साकार, जीवन-स्पन्दित विग्रह

(43) रक्त-वर्णा, जिह्वा लपलपाती, खड्गधारिणी काली की मूर्ति

(44) निश्छल, निष्पाप और अबाध प्यार

(45) पीतवस्त्रा, रूक्ष-केशी, अश्रुपूर्ण आँखों वाली, विवर्णमुख कृष्णार्पिता मीरा

(46) पतित-पावनी, उत्तर-वाहिनी गंगा

(47) शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित नारियाँ[214]

(48) यज्ञोपवीतधारी, शिखा-त्रिपुंड्युक्त स्थूलकाय ब्राह्मण

(49) सारी भंगिमाओं, संपूर्ण अवदानों-उपदानों से सज्जित, उल्लसित प्रकृति

(50) पर्वतों की पाषाणी छातियों को रोंदते-तोड़ते, दौड़ते-भागते अठखेलियां करते सरित-प्रवाह

(51) ऊँचाइयों से गिरते, उछलते, फांदते फेनिल जल-प्रपात

(52) सर्वशक्तिमान, सर्व-समर्थ, सर्वव्यापी साक्षात चिन्मय परमेश्वर

(53) विदुषी, धर्मपरायण और दूरदर्शी जननी

(54) हिन्दू-धर्मरक्षक, गो-ब्राह्मण प्रतिपालक, साक्षात् शिव के अवतार शिवाजी[215]

(55) सुलक्षणा, सुंदरी, धर्मपरायणा औरत

(56) अद्‌भुत शांतिदायक, आकर्षक किरणें

(57) अमाप्य, अथाह, अलौकिक स्नेह

(58) दशरथ-सुत, कैकयी प्रताड़ित मानुषी राम[216]

(59) झिलमिलाती, ज्योति लुटाती दीप पंक्तियाँ

(60) श्वेत वस्त्र-श्वेत पुष्पों से सज्जित, केश विन्यास से युक्त सुमुखी बंग महिलाएँ

(61) सनसनाता, नुकीला बाण

(62) मुट्ठीभर बीमार, थकी, अधमरी सेना

(63) मानसिक, भावनात्मक, संवेदनात्मक हिंसा

(64) प्रताड़ित, अपमानित और उत्पीड़ित मानवता

(65) असंख्य मंदिरों, देवालयों और पूजा-स्थलों से पूरित, पवित्र और पावन तीर्थ अयोध्या

(66) सुरभिपूर्ण, इठलाते, खिलते सुन्दर फूल[217]

(67) तीखे नाक-नक्शवाला लंबा छरहरा बदन

(68) उपेक्षित, दलित, प्रताड़ित, शोषित व्यक्ति

(69) ओज-भरी, आम की फांको-सी लंबी आँखें

(70) सदा सलिला स्वर्णिम सतलज

(71) अकाल, अनादि, अविनश्वर अनंत शक्ति

(72) रूपवती, सर्वगुण संपन्न और धर्मपरायण युवती[218]

(73) लक्ष-लक्ष प्रताड़ित, पीड़ित, शोषित, पराजित जन

(74) निराशाजन्य अन्धकारग्रस्त जीवन

(75) घर-बार-विहीन, क्षुधा-तृषा-पीड़ित भारतीय

(76) पददलित, कुंठित, तिरस्कृत, अपमानित, अछूत एवं अशिक्षित व्यक्ति[219]

नए उपमान :

भाषा के अलंकरण के लिए उपमा अलंकार का प्रयोग तो प्राचीन काल से चला आ रहा है। कहा भी गया है 'उपमा कालिदासस्य' अर्थात् उपमा तो कालीदास की ही। उपमा के चार अंग होते हैं - उपमेय, उपमान, साधारण गुणधर्म और वाचक शब्द। कुछ उपमेय और उपमान तो हमारे दैनन्दिन जीवन में बहुत ही सामान्य हो गए हैं; जैसे - सुन्दर स्त्री के आनन को चन्द्रमा की उपमा देना, आत्मा को हंस की उपमा देना, संसार को सागर की उपमा देना आदि-आदि। परन्तु यहाँ हमने कुछ ऐसे

उपमान दिए हैं जिनका प्रयोग सामान्य तौर पर नहीं हुआ है।

	उपमेय	उपमान
1.	रूढ़ियों और गलत मान्यताओं को कलेजे से सटाये रखना	♦बन्दरिया का मरे बच्चे को कलेजे से सटाये रखना
2.	गंजा सिर	♦फूटबॉल का मैदान
3.	राधा	♦ऋषि कण्व की पोषिता वन्य बाला
4.	प्यार	♦ईश्वरीय उपहार[220]
5.	वर्षों का पाला विश्वास छिलना	♦केले के छिलके की परत-दर-परत छिलना
6.	वर्षों से संजोई मान्यताओं और आकांक्षाओं का झरना	♦पेड़ों के पीले पात का एक-एक कर झड़ना
7.	सागर चौधरी	♦सुषमा का जल-पोत
8.	मुरारी पंडित का मन	♦डाल का तोता[221]
9.	पृथा के माता-पिता के होठों पर अनावश्यक शब्द	♦बबूल की कांटो-भरी डाल पर पीले फूल
10.	पृथा के जीवन में मनीष का पूरी तरह होना	♦तन की धमनियों में लहू का होना
11.	पृथा की माँ का अपने प्रश्न को दुहराना	♦किसी अनियन्त्रित अश्व की पीठ पर दूसरी बार जोर का कशाघात करना
12.	पृथा की जिन्दगी	♦सूखी शाखा पर बैठा उल्लू
13.	पृथा	♦कुलीन घर के टेबुल का गुलदस्ता
14.	मनीष का पृथा के चेहरे को देखना	♦बीन की धुन पर सर्प का मुग्ध होना
15.	पृथा मनीष की ओर देखना	♦चक्रवाक का पूनो के चाँद को निहारना
16.	सुषमा की माँ का ग्रीटिंग कार्ड पर ध्यान जमाए बैठना	♦बिल्ली का ध्यान अनायास दिखाई पड़ गए चूहे पर गड़ा रहना
17.	मनीष के सामने किसी वक्ता का नहीं ठहर पाना	♦पूर्णिमा के चांद के सामने सभी तारों की ज्योति क्षीण होना
18.	ऊपरी आमदनी	♦जून महीने की बरसात
19.	आसामी की जेब सिकुड़ जाना	♦डायाबिटिज के मरीज के हाथ में आया रसगुल्ला

		निचुड़ जाना
20.	नारी का पुरूष की प्रकाशित प्रतिभा में चमक भरना	•स्वर्णकार का सोने का मैल उतारकर उसे और चमकदार बनाना
21.	स्मृतियों के ज्वार को अपने मस्तिष्क की देहली पर धक्का देने से भी नहीं रोक सकना	•बाढ़ के पानी को आने से नहीं रोक सकना
22.	मन का बंध जाना	•संध्या के समय में कमल-पुष्प के सम्पुट में भ्रमर का बंध जाना
23.	पृथा की माँ की निर्निमेष दृष्टि ग्रिटिंग कार्ड पर गड़ी रहना	•कृद्ध सर्पिणी का कुंडली मारकर बैठना
24.	पृथा के मुख की उदासी	•शाम की स्याही
25.	पृथा का मन	•अनेकानेक मनकों की एक माला
26.	नगरों की ललनाएँ	•मोहक मुस्कान-भरी रंग-बिरंगी तितलियाँ
27.	संभ्रांत घरों की विवाहित महिलाओं का अपने सीमान्त से सिन्दूरी रेखा को पोंछ देना	•शरीर के किसी अंग में लग आए कालिख को पोंछ देना[222]
28.	नवीन	•पृथा के जीवन-आकाश का धूमकेतु
29.	मन में अदम्य उत्कंठा उठना	•सर्प के फन का उठना
30.	कॉलेज की सभी छात्राओं का नवीन की ओर आकर्षित होना	•लौह-खंडों का चुंबक की ओर खींचना
31.	भविष्य सम्बन्धी कल्पनाओं का ध्वस्त होना	•रेत की दीवारों का ध्वस्त होना[223]
32.	माँ अंजना के हँसने पर दाड़िम के दानों-सी सजी दंतावली का चमकना	•अन्धकार में मुक्ता-मणि की माला का चमकना
33.	क्षण-पूर्व की प्रसन्नता का गायब होना	•पावस की धूप का तिरोहित होना
34.	निरभ्र आकाश में शरतचन्द्र का उदित होना	•प्रवर्षण के शिखर पर श्रीराम का चन्द्रमुख उदित होना
35.	लंका	•पाप-पुरी
36.	सीता का नख-सिख कांपना	•सूखे अश्वत्थ-पत्र का कांपना

37.	रावण का सीता की ओर से निराश हो अकरणीय करने पर उतारू होना	•किसी जुआरी का हारे हुए दाँव को खेलना
38.	लंका	•राक्षसपुरी
39.	लंका	•स्वर्णपुरी
40.	श्रीराम के स्मरण के पश्चात भय और आतंक का नहीं रहना	•अग्नि की उपस्थिति में शीत का अस्तित्व न होना
41.	कुंभकर्ण के तन से रुधिर की धार का बहना	•विशाल कृष्ण पर्वत से रक्त के असंख्य झरनों का फूट पड़ना
42.	मृत्युधाम	•साकेतधाम
43.	सुस्वादु भोजन का संसर्ग पा हनुमान की क्षुधा प्रबल से प्रबलतर होना	•प्रज्वलित अग्नि पर घृत-बूंदे पड़ने पर अग्नि को और तेज कर देना
44.	हनुमान की पूंछ कसने पर शनि का वेदना से तड़पना	•विशाल अजगर द्वारा पूरी तरह आवेष्टित होने पर अन्य जंतु का विवश हो उठना
45.	दीपों से जगमगाता विस्तृत सरोवर	•नक्षत्रों से भरा आकाश खंड[224]
46.	पास-पड़ोस के सभी राज्यों पर कंस की शनि-दृष्टि से असंख्य निरपराधों के रक्त से धरती का रंजित होना	•मगरमच्छ का छोटी-बड़ी मछलियों को बड़ी •आसानी से उदरस्थ करना
47.	कंस का वसुदेव के रथ पर सारथि के रूप में बैठना	•प्रासाद के कंगूरे पर गृद्ध का बैठना
49.	कंस का कड़कता हुआ स्वर	•भारी चट्टान पर हथौड़े का प्रहार
50.	वसुदेव के मुख पर शोक के स्थान पर म्लानता का उभरना	•सुन्दर कमल-पुष्प का शैवाल से ढंक जाना
51.	कंस के सिर के केश	•प्रचंड वायु से प्रताड़ित वन-लताएँ
52.	कंस का टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से भरा कुत्सित विद्रूप आनन	•अभी-अभी कर्षित हुआ किसी कृषक का खेत
53.	देवकी की हर सन्तान की हत्या के पश्चात् कंस की हिंस्र-भावना भड़कना	•आहुति पड़ने पर अग्नि का भड़कना
54.	देवकी का नन्हीं बालिका को आँचल में छुपाकर आँचल को दोनों हाथों से ढँकना	•मादा पक्षी का अपने विशाल डैनों से अपने अंडे को ढँकना

55.	कंस के शरीर का आपादमस्तक ठंडे पसीने से भीग जाना	•वर्षाऋतु में किसी वृक्ष का ऊपर से लेकर मूल तक भीग आना
56.	आशंका एवं भय से पूर्णतया आक्रान्त कंस के मस्तिष्क का किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना	•कमल के पत्ते पर लाख प्रयास के बाद भी जल का नहीं रुकना
57.	पाप-पुण्य के विचारों को मन से निकाल फेंकना	•वृषभ का अपनी पीठ पर पड़ आई जल-बूंदों को झटके से पीठ के बाहर उछाल फेंकना
58.	वृद्धावस्था का पुत्र	•सूखी शाख पर कोंपल फूटना
59.	शिशु-हत्या से पूतना को आनन्द मिलना	•शेर की हत्या करने पर शिकारी का आनन्दित होना
60.	नवजात शिशु के कन्द्रन से पूतना का खींचना	बीन के स्वर से साँप का खींचना
61.	मथुरा के सारे उद्‌भटों का वीर गोपों की किलाबन्दी को अभेद्य पाकर बार बार असफल होकर वापस आना	•ज्वार जगे समुद्र में पड़े काष्ठ-खंड का बार-बार किनारे आने को विवश होना
62.	अपने रूप पर इठलाती, मचलती पूतना का कंस के पास जाना	•नागिन का सौ-सौ बलखाती हुई चलना
63.	पूतना	•निसर्ग सुन्दरी
64.	श्रीधर-पलायन के पश्चात कंस की रातों की नींद उड़ जाना	•मधुछत्रक का मधु चाटकर मधु मक्खियों का उड़ जाना
65.	अपनी सम्पूर्ण शारीरिक शक्ति लगाने पर भी कंस का उस बालक के करों को अपने कण्ठ से मुक्त नहीं करा पाना	•गदले जल में उतर गए पशु का शरीर से चिपट बैठी जौंक का छुड़ाए नहीं छूटना
66.	मद्य की पूरी सुराही का कंस की आँखों की नींद को वापस लाने में असमर्थ रहना	•ठण्डी राख पर पड़ी घृत-बूंदों से ज्वाला नहीं जगा पाना
67.	कंस का क्रोध से उबलना	•किसी विस्फोटक पदार्थ के पड़ते ही अग्नि का धधक उठना
68.	विचारों के अश्वों का विभिन्न दिशाओं में दौड़कर वापस आना	•दिनभर नीड़ों से गायब पक्षियों का अनन्त गगन की ऊँचाइयों को मापने का व्यर्थ प्रयास कर शाम को अपने नीड़ों में वापस आना

69.	सूरज	•असुरों-निशाचरों और चोर-उचक्कों का सदा का शत्रु
70.	अपने शिकार को अपने अधिकार में पाकर लघुकाय का अपने लोभ को कठिनाई से रोक पाना	•मिष्टान्न का थाल सजा देखकर भूखे ब्राह्मण के •मुँह में पानी आना
71.	चक्रवात के गोले से तृणावर्त के विशाल शरीर का उड़ जाना	•मस्त हाथी का अपनी विशाल सूँड में कमल-पुष्प को तोड़कर उछाल देना।
72.	कृष्ण और बलराम का ब्रजवासियों को छोड़कर जाना	•पंख लगते ही नीड़ से पक्षी का फुर्र हो जाना
73.	स्वच्छ आकाश में कार्तिक पूर्णिमा का धवल चन्द्र	•नीलमणि के थाल में चांदी की गेंद
74.	यशोदा के लिए कान्हा	•वृद्धावस्था का अनोखा ईश्वरीय उपहार
75.	दिन में कान्हा की आँखों से नींद का गायब रहना	•हेमन्त में वृक्षों के पत्तों का न रहना
76.	यशोदा का मन	•सावन का मयूर
77.	कान्हा का घर बाहर न निकलना	•गोकुल के आकाश से चाँद का गायब होना
78.	दधि-दूध से आपादमस्तक स्नात कृष्ण के गात को देखकर मैया के मन का क्रोध से उफन आना	•आँच के तेज होने पर गोरस का उफनना
79.	कृष्ण के प्रसन्न मुख को देखकर सभी का आश्वस्त होना	•अपने भूले धन को पाकर कंजूस का प्रसन्न होना
80.	श्रीदामा की माँ का कृष्ण की एक झलक के लिए राह देखना	•स्वाति बूँद के लिए चातक का तरसना
81.	गोकुल की अर्थव्यवस्था का चरमराना	•यमुना जल पर तिरती काष्ठ-नौका का मत्त गजराज के भार से चरमराना
82.	सिद्ध-साधकों के दर्शन से सम्पूर्ण कलुष और सारे पाप-ताप का विनाश होना	•अग्नि के सान्निध्य से शीत का समाप्त होना
83.	चित्रलेखा का कुछ कह नहीं पाना	•पिंजड़े के पंछी का अन्दर-ही-अन्दर फड़फड़ाकर रह जाना

84.	यशोदा की सारी प्रसन्नता निःशेष हो जाना	♦तप्त बालुका राशि पर पड़ी जल-बूंद का अस्तित्वहीन हो जाना
85.	गोकुलवासियों का कारवाँ	♦चींटियों की रेंगती पंक्ति
86.	कंस	♦क्रोधान्ध केसरी
87.	कंस की गरजती आवाज	♦किसी पर्वत से शिखर का टूटना
88.	गुप्तचर की कटी गर्दन से रक्त का उष्ण प्रवाह फूटना	♦पाताल-फोड़ कुएँ से जल का फव्वारा छूटना
89.	यशोदा का राधा को अपने अंक में समेट लेना	♦मादा-पक्षी का अपने नवजात को अंक में समेट लेना
90.	राधा की दृष्टि का कृष्ण के चेहरे से चिपकना	♦चुम्बक से लौह-खण्ड का चिपकना
91.	राधा का मन	♦ज्योत्सना-भरी रात का कुमुदिनी-कुसुम
92.	कंस का हठीला मन	♦अड़ियल अश्व
93.	षड्यन्त्रकारी मन को हर ओर षड्यन्त्र की गन्ध आना	♦शीशमहल में एकाकी खड़े व्यक्ति को चारों ओर ऊपर-नीचे अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ना
94.	सूरज	♦गोलाकार स्वर्ण थाल
95.	राधा की आँखों की पुतलियों का बाहर आना	♦सीप की अधखुले मुख से मोती के दाने का बाहर आना
96.	चर की गर्दन को खड्ग से उड़ा देना	♦कुष्मांड को मूल से काट फेंकना
97.	सम्पूर्ण मथुरा कंस-विरुद्ध एक होकर उसके सर्वनाश पर सन्नद्ध होना	♦बहेलिए के जाल में फँसे कपोत का जाल को लेकर उड़ जाना
98.	कंस का सम्पूर्ण षड्यन्त्र को कुचल देना	♦किसी मत्त गजराज का अपने पैरों तले किसी नरमुण्ड का कचूमर निकाल देना
99.	सारे लोगों का एक होकर कंस के काल-सर्प के अण्डे को सेना	♦काग का मूर्खतावश कोयल के अण्डे को सेना
100.	श्वेत वस्त्र पर जमे हुए रक्त का चमकना	♦बर्फ-ढँके शिखर पर सूरज की डूबती किरणों का चमकना
101.	कंस द्वारा गुप्तचर वध की हत्या हवाओं पर सवार होकर पूरे नगर में फैल जाना	♦किसी दावाग्निग्रसित विपिन में आग की लपटें फैलना

102.	कंस के उद्वेग का कम होना	•उफनते दूध पर शीतल जल के छींटे डालना
103.	प्रजा का अपने सर्वप्रिय सम्राट को देखकर फूल आना	•पूर्ण चाँद के दर्शन से सागर का फूलना
104.	राजद्रोह	•सागर की खूंखार लहरें
105.	कंस का अपने क्रोध को पी जाना	•मरूभूमि पर बरसी जल-बूँदों को प्यासी रेत का क्षण लगते-न-लगते पी जाना
106.	महाद्वार से भीड़ का वापस जाना	•ज्वार के बाद भाटा के साथ सागर की लहरों का वापस जाना
107.	कृष्ण का विद्युतगति से बकासुर की गर्दन पर छलाँग लगाना	•केहरी का गजराज के मस्तक पर छलाँग लगाना
108.	राधा का कृष्ण के हाथ को झटक देना	•कलाई पर चढ़ आए कीट को झटक देना
109.	गोपांगनाओं का यशोदा के आँगन की ओर खींचती चली जाना	•डोर से बँधी हुई पतंग का खींचना
110.	श्रीकृष्ण द्वारा अपने पीताम्बर में राधा के आंसू चून लेना	•झर-झर झरते पारिजात के पुष्पों के बटोरना[225]
111.	अस्ति और प्राप्ति के चरण-स्पर्श से ही उग्रसेन की आँखों का बरस पड़ना	•पयोधर का पर्वत का स्पर्श पाते ही रीता होना
112.	जरासंध की दो पुत्रियों को पालना	•दो सर्पिणियों को पालना
113.	नंद-यशोदा का श्रीकृष्ण को अथाह स्नेह से सिंचित करना	•आँगन के बिरवे को नयन जल से सींच-सींच बड़ा करना।
114.	यशोदा की आँखें	•भाद्रपद की यमुना
115.	यशोदा का अपने गर्दन के गिर्द लिपटी उद्धव की भुजाओं को झटककर पृथक् खड़े होना	•कोई लिजलिजे सर्प को अपने स्कन्धों से झटक फेंकना
116.	प्रेम, स्नेह और वात्सल्य से विवश नन्द	•धार में विवश बहता तिनका
117.	नन्द-गृह की ओर भागती गोपियाँ	•सागर-तट की ओर भागती-दौड़ती किसी आन्दोलित-आलोड़ित सागर की लहरें
118.	प्रश्न के उद्धव के मुख से निकलते-न-निकलते एक गोपी का पूछ बैठना	•जल-स्तर पर उठनेवाले बड़े-से-बड़े बुलबुले का क्षण मात्र में लुप्त हो जाना

119.	उद्धव का मूक, हतप्रभ और हताश होना	• तड़ित का ग्रास कोई वृक्ष
120.	यादव कुमारों का दो-दो पुत्रियों के सुहाग को ग्रस लेना	• दो-दो चन्द्रमाओं का राहु और केतु द्वारा एक साथग्रस लेना
121.	श्रीकृष्ण के आ जाने से कुछ भी अस्पष्ट न रहना	• मेघों के छँटने से आसमान का साफ हो जाना
122.	श्रीकृष्ण के सुदर्शन-चक्र का कालयवन के सैनिकों के मध्य मार्ग बना लेना	• मृगराज का मृगों के झुंड में पथ बना लेना
123.	श्रीकृष्ण की क्रीड़ा से कालयवन का परेशान हो जाना	•बिलाड़ का अपने शिकार के साथ खिलवाड़ कर मार भगाना
124.	श्रीकृष्ण का जरासंध के साथ क्रीड़ा करना	•वनराज का अपने आखेट के साथ खेलना
125.	श्याम की स्मृतियों का धूमिल होना	•स्वच्छ दर्पण पर चिता की राख लपेट कर व्यर्थ कर देना
126.	श्रीकृष्ण-रूक्मिणी के सम्बन्ध को रोकने का प्रयास	•नदी-मुख को मोड़ने की मुर्खता
127.	रुकमी को छोड़कर सारे सैनिकों का भागना	•फल से शून्य वृक्ष को छोड़कर पक्षियों का भागना
128.	श्रीकृष्ण का क्रोध से विक्षिप्त रुक्मी को अपने एक ही हाथ से धर दबोचना	•विशाल अजगर का किसी निरीह पशु को अपनी पकड़ में ले बैठना
129.	मनुष्य अपने चरित्र और कृत्यों को कलंकित होने से बचा लेने पर भी अपनी ही सन्तान द्वारा उसे समाज के समक्ष सर नत करने को बाध्य करना	•सूरज से प्रकाश ग्रहण कर अपने को ज्योतित करनेवाले चाँद का अपने धब्बों को उजाकर करना
130.	सुदामा का मन	•उच्छृंखल अश्व
131.	सुदामा और श्रीकृष्ण की मैत्री	•दो ध्रुवों का मिलन
132.	नाविक का नम्रता से झुकना	•फलों भरी शाखा का धरती तक झुकना
133.	सुदामा की दाढ़ी-मूंछ के केश	•बेतरतीब बढ़ी झाड़ियाँ
134.	श्रीकृष्ण का राधा के पीछे भागना	•चाँदनी में किसी की परछाई का साथ-साथ भागना
135.	तारों से भरा आकाश	•नीलमणि का विस्तृत थाल
136.	खिला हुआ चाँद	•स्वर्ण-कुसुम

137.	चन्द्रमा	•अमृत बरसाता गगनचारी
138.	चौथ का चाँद	•सोने का हांसिया
139.	श्रीकृष्ण पर लगा कलंक	•शशांक पर लगा धब्बा
140.	श्रीकृष्ण की सोचने-समझने की शक्ति कुंठित होना	•सूर्य को ग्रहण लगना
141.	श्रीकृष्ण के दर्शन से जाम्बवती का सम्पूर्ण अस्तित्व गलना	•सूर्य के समक्ष पड़ने पर हिम का गलना
142.	श्रीकृष्ण के अभिनन्दन के लिए सजी द्वारावती नगरी	•नई-नवेली वधू
143.	इन्द्रप्रस्थ	•इन्द्रपुरी अलका
144.	दो ब्राह्मणों के तन से भस्म का झड़ना	•पतझड़ में पेड़ों के पीले पत्तों का झड़ना
145.	शिशुपाल के मुख से झड़नेवाले दुर्वचनों की झड़ी	•बरसाती निर्झर
146.	बलराम का पांडवों से मिलना	•जल से तैल का मिलना
147.	धर्मराज युधिष्ठिर के तेजोदीप्त मुख का म्लान पड़ना	•जगमगाते सूर्य-मंडल को मेघ के भूले-भटके टुकड़े द्वारा आवृत्त करना
148.	कौरवों की सेना	•वर्षा ऋतु में उफनती सरिताएँ
149.	पांडव शिविर में भीमसेन का कर्ण-भेदी स्वर भर जाना	•गिरि-गुहा में केहरी-नाद गुंजित होना
150.	भीष्म	•स्वर्णिम सूर्य
151.	दूर्योधन के लिए अर्जुन	•नुकीला कांटा
152.	पांडव सेना में श्रीकृष्ण	•मुकुट के मयूर-पंख
153.	कर्ण के बिना दुर्योधन	•जल से निकल, सरिता कूल के सिकता-कणों पर तड़पती एक बेबस मछली
154.	चंचल इन्द्रियों के पीछे भागनेवाले मन द्वारा बुद्धि का हरण करना	•जल में नाव को हवा द्वारा वश में कर लेना
155.	श्रीकृष्ण का अर्जुन को समझाना	•पिता का अपने अबोध बालक को सहज स्नेह और उपालम्भ के साथ समझाना
156.	अर्जुन	•अप्रशिक्षित अश्व

157.	अर्जुन का श्रीकृष्ण की एक-एक बात को ग्रहण करना	•आजीवन पिपासित चक्रवाक पक्षी का स्वाति-नक्षत्र की सलिल बूंदों का पान करना
158.	अहंकार का शिकार मूढ़ व्यक्ति का सोचना	•दोनों टांगों को आकाश की ओर उठाकर सोनेवाले पक्षी का सोचना
159.	आत्मा परमात्मा का ही अंश	•समुद्र की लहर समुद्र का ही भाग
160.	काम का मनुष्य के ज्ञान को ढँकना	•धुएँ का अग्नि को ढँकना •धुएँ का दर्पण को ढँकना •जेली का गर्भ को ढँकना
161.	विषयो की ओर इन्द्रियों का भागना	•अनियंत्रित अश्वों का भागना
162.	मनुष्य के लिए शान्ति की एक बूंद	•चातक के लिए स्वाति की एक बूंद
163.	ज्ञान के अन्दर से शान्ति का प्रकट होना	•पुष्प के अन्दर से पराग का प्रकट होना
164.	श्रीकृष्ण का सुबोध होते-होते ही दुर्बोध हो जाना	•हाथ में आता पारा उंगलियों के पोरों की राह से फिसल पड़ना
165.	छोटी-सी बात पर श्रीकृष्ण के होठों पर मुस्कान चिपक आना	•प्रत्यूष होते ही प्राची के क्षितिज पर लालिमा का आ विराजना
166.	मन का किसी एक धारणा या विचार पर स्थिर नहीं रहना	•शाखामृग का एक डाली से दूसरी डाली पर कूदना-फांदना
167.	असंयमित, अनियंत्रित मन का सर्वप्रथम फल की ओर मुड़ना	•अनियंत्रित अश्व का अपने गन्तव्य की चिन्ता छोड़ मार्ग के तृण-पौधों की ओर मुँह मारना
168.	मनुष्य का लोक-परलोक दोनों गँवाकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाना	•मेघ-खंड का वायु की चपेट में पड़ छिन्न-भिन्न हो जाना
169.	श्रीकृष्ण (परमात्मा) रूपी सूत्र में सृष्टि का सबकुछ पिरोया होना	•मणिमाला के सूत्र में सारे मनके का पिरोया होना
170.	पण्डित का विविध स्वादिष्ट व्यंजनों से भरे थाल पर टूटना	•बाज का किसी पक्षी-शावक पर टूटना
171.	आर्यावर्त के टुकड़े	•मणिमाला के विभिन्न मनके
172.	श्रीकृष्ण का राधा की स्मृति को गोपनीय कोने में संजो रखना	•किसी अकिंचन का मूल्यवान मणि को गुदड़ी में छिपाकर रखना
173.	सभी कर्मों का दोषों से युक्त होना	•धुएँ का आगयुक्त होना

174.	दोनों पक्षों के योद्धाओं का गर्जन	•एकाकी विपिन में मस्त हस्ती-दलों का चिंघाड़ना
175.	भीमसेन का धनुष को वृत्ताकार घुमाकर उससे एक ही साथ असंख्य बाण छोड़कर शत्रु पक्ष की सेना को मथ देना	•किसी का मक्खन निकालने के लिए मथानी से दूध को मथना
176.	युधिष्ठिर के आत्मविश्वास का लुढ़कना	•ऊँचे शिखर से हिम-खंड का लुढ़कना
177.	युधिष्ठिर के लिए भीष्म	•एक दुःस्वप्न
178.	युधिष्ठिर का दूसरे दिन रणांगण में उतरने से घबड़ाना	•मृगराज की गन्ध मिलने पर उसी तरफ किसी वन्य जीव का भूलकर भी मुँह नहीं करना
179.	भीष्म और अर्जुन का परस्पर टकराना	•दो पक्ष युक्त पर्वत का एक-दूसरे से भीड़ना
180.	अर्जुन के गांडीव से निकलते बाण	•श्रावण की वर्षा की बौछार
181.	भीष्म के गौर शरीर पर रक्त का बहना	•गेरू पर्वत पर गुलाल की रेखाओं का खिंच आना।
182.	कौरव-वीरों का सहस्त्रों की संख्या में कालकवलित होना	•चक्रवात के चक्कर में पड़कर आम्र-वृक्षों के फल का धरती पर बिछते जाना
183.	क्रोध एवं अपमान से युक्त स्वयं भीष्म	•भयावह अग्नि-पुंज
184.	श्रीकृष्ण का शुभ्र आनन चिन्तासंकुल होना	•चन्द्र पर ग्रहण लगना
185.	सभी प्रमुख वीरों की सम्मिलित शक्ति एक ही केन्द्र-बिन्दु पितामह पर केन्द्रित होना	•सृष्टि का सम्पूर्ण प्रकाश-पुंज एक ही केन्द्र बिन्दु सूर्य में केन्द्रित रहना
186.	धनंजय	•धधकता हुआ अग्निपुंज
187.	मनुष्य	•समय की खूंखार लहरों पर विवश तिनका
188.	समरांगण में रक्त-मज्जा और मांस की नदी में रुंड-मुंड, कटे हाथ-पाँव, अस्त्र-शस्त्र आदि का प्रवाहित होना	•बाढ़-ग्रस्त नदी में मूल-हीन वृक्ष, घास-पत्ते, छप्पर आदि का बहना
189.	नीति, पराक्रम और आत्मविश्वास से हीन व्यक्ति को छोड़कर धर्म का भाग जाना	•अस्त्र-शस्त्र से हीन सेनापति को छोड़कर उसकी सेना का भाग जाना[226]
190.	मंदिर से उठती शंख-ध्वनि से राव दूदा का मन पुलक आना	•बीन की आवाज पर नाग का क्षत्र फैलाकर नाच उठना

191.	राव दूदा का युद्ध से बिदकना	•पानी में पलनेवाली मछली का किनारे की रेत से घबराना
192.	सैनिक के रक्त से ओतप्रोत वस्त्र	•बरसातों से वंचित पृथ्वी की सतह पर पपड़े पर पपड़े पड़ जाना
193.	मल्लू खां के नेतृत्व में यवनों की अपार सेना का मेले पर टूट पड़ना	•टिड्डी-दल का हरित क्षेत्रों पर हमला बोल देना
194.	मनुष्य का इन्द्रियों के वशीभूत हो उनके भोगों की पूर्ति करते-करते जर्जर होना	•श्वान का अपने ही रक्त को पी-पीकर हड्डी चबाने का आनन्द लेना
195.	राव दूदा के अन्तर में भक्ति का प्रवाह उमड़ना	•मरूभूमि की रेतीली धरती को चीरकर सलिल-स्रोत का फूटना
196.	पंचांग पर दक्षिणा न्योछावर किए बिना ग्रह-नक्षत्र का वक्री रहना	•शिवलिंग के मस्तक पर बिल्वपत्र नहीं चढ़ाने पर औघड़दानी पशुपति का प्रसन्न नहीं होना।
197.	एक आवश्यकता पूर्ण होने पर दूसरी आवश्यकता का सिर उठाना	•हरिद्वार की गंगा में आटे की गोली डालने पर उसे लपकने के लिए किसी-न-किसी मछली का सिर जल के बाहर निकलना
198.	रतनसिंह का पिता के चरणों पर बिछकर प्रणिपात करना	•किसी पुष्पित लता का विशाल वृक्ष के मूल में बिछ जाना
199.	द्वार पर स्वच्छ वस्त्र में राव दूदा का खड़ा होना	•श्वेत कमल का सरोवर में, अपने डंठल पर निस्पन्द खड़ा होना
200.	राव दूदा का अपने क्रोध को पी जाना	•कड़वी दवा को गले के नीचे उतारना
201.	रामदास का आशंकित रहना	•प्रकाश के एक टुकड़े मात्र से अन्धकार का दुबकना
202.	मीरा का रामदास को बीच में टोक देना	•जल-प्रवाह में शिला-खण्डों का सिर उठाना
203.	रामदास का क्रोध पर से नियंत्रण खो बैठना	•अश्वारोही का प्रमाद में आ अश्व की वल्गाओं पर अपना हाथ ढीला कर देना
204.	मीरा का राजपुरोहित के अपशब्दों को झेलना	•एकाकी खड़े वृक्ष का मेघों की बौछारों को निरीह भाव से सहना
205.	मीरा की सिसकियाँ	•रेगिस्तानी सर्द हवा
206.	मन का एक छोटे से बहाने के आधार पर अशान्त, उद्वेलित हो उठना	•सागर तल का बार-बार अशान्त हो जाना

207.	नारियों का घर की चहारदिवारियों को अपनी नियति मान लेना	•पिंजडे के पक्षी का पिंजड़े के परिवेश से ही प्रेम कर बैठना
208.	दबी-कुचली प्रतिभा का जग आना	•कुंडलिनी का जग आना
209.	पैरों का बिवाइयों से फटना	•वर्षा नहीं होने से धरती का जगह-जगह से फटना
210.	मीरा का अपनी यात्रा पर अनेक बाधाओं के बावजूद बढ़ते जाना	•पर्वत की छाती को फोड़कर निकलने वाले जलप्रपात का सारे अवरोधों के मध्य मार्ग बनाकर आगे बढ़ना
211.	राणा सांगा के गले में लटकती मौतिक माला का विशाल वक्ष पर उठना-गिरना	•सागर तल पर लहरों का उठना-गिरना
212.	राणा सांगा की भौंहे	•बलशाली धनुर्धर का धनुष
213.	राणा सांगा के फड़कते नथुनों से गर्म फुफकार छूटना	•कुद्ध वृषभ का सांसे लेकर छोड़ना
214.	राणा परिवार का रिश्ता	•पका फल
215.	कुंअरबाई का अन्दर-ही-अन्दर खौलना	•अग्नि पर चढ़ाए जल का खौलना
216.	मीरा के चेहरे पर उदास मुस्कान	•कुहासे भरे रात की चांदनी
217.	सबका प्रसन्नता से खिलना	•शरदारंभ के पारिजात पुष्प का खिलना
218.	राणा का क्रोध	•पिटारी में बन्द कुद्ध करैत
219.	कुंअर भोजराज के मुरझाए मुख पर प्रसन्नता की रेखा उभरकर लुप्त होना	•श्रावण के अभ्रपूर्ण आकाश में दामिनी का दमककर क्षणभर में लुप्त होना
220.	विभिन्न रंगों की बड़ी-बड़ी राजस्थानी पगड़ियों की छटा	•बड़ी क्यारी में दीर्घ-काय सूर्यमुखी पुष्पों का विविध रंगों में खिलना
221.	मीरा के मुख पर आँखों की जलधार के कारण काली रेखाएँ बनना	•गौर चन्द्रमुख को अनेकानेक कृष्ण-सर्पों का घेर लेना
222.	मीरा की जिह्वा का नियंत्रण खोना	•निरभ्र आकाश से वज्रपात होना
223.	मीरा का दिनभर कक्ष में तड़पना	•पिछड़े के पंछी का तड़पना
224.	मीरा	•भीत विहंगिनी
225.	होठों का गायन उड़ जाना	•विहग का फुर्र से उड़ जाना
226.	चित्तोड़ का राजमहल	•षड्यंत्र, राजनीति और कूटनीति का अखाड़ा
227.	राणा सांगा का वचन	•धनुष से छूटा बाण

228. विस्मृति की सारी विपदाओं, आपत्तियों और अप्रसन्नतादायक घटनाओं को कोष से बाहर कर फेंक देना	•किसी गर्द-गुब्बार भरे कक्ष में झाड़ू फेर देना
229. मीरा के कंठ से पद-पर-पद का फूटना	•प्रपात से जल धारें फूटना
230. मीरा	•उन्मुक्त विहंगिनी
231. रणांगन में राणा के हृदय से दया, माया, करूणा, स्नेह, प्रेम सबका गायब होना	•प्रातःकाल में नीड़ों से पखेरू का गायब होना
232. राणा सांगा	•राजपूत शेर
233. मीरा को देखते ही कक्ष के अन्दर और बाहर भीड़ का मध्य से दो भागों में विभक्त हो मार्ग देना	•समुद्र का बीचो-बीच बंट कर पथ प्रदान करना
234. मीरा की लाल आँखें	•जवां-कुसुम
235. किले के चारों ओर एकत्रित जन-समुदाय	•सागर-कूल पर असंख्य उद्वेलित लहरें
236. मीरा का श्रीकृष्ण-भक्ति के अभिमान में सारी मर्यादा तोड़ना	•बरसाती नदी का सारे कूल-किनारों को तोड़ना
237. मीरा के चेहरे का रंग निरंतर बदलना	•संध्याकालीन पश्चिमी आकाश का क्षण-क्षण बदलना
238. मालदेव की सेना का आगे बढ़ना	•वेगवती नदी का बढ़ना[227]
239. शिवाजी	•मराठा कुल दीपक
240. जीजा बाई	•मराठी शेरनी
241. शिवाजी	•मराठा लुटेरा
242. औरंगजेब	•पितृहन्ता
243. सुन्दर चेहरे पर सिर के अस्त-व्यस्त केश का बिखरना	•बादलों के छोटे टुकड़ों का आसमान में उगे चाँद को चारों ओर से घेर लेना
244. शिवाजी का जीजा के कलेजे से सट जाना	•दिनभर जंगलों में भटकने के बाद शाम को गौ-वत्स का माँ के थन से लगना
245. वार्धक्य के कारण जीजा के शरीर का श्वेत रंग से पोत जाना	•वर्षाऋतु की समाप्ति के समय काश-जवास के सफेद फूलों का धरती पर फैल जाना

246.	चेहरे की गहरी झुर्रियाँ	•गहरा जुता मालव-खेत
247.	हवा की हलकी थपकियों पर हरे पौधे का हौले-हौले डोलना	•सागर की नन्हीं ऊर्मियों का पवन के इशारों पर उठना-गिरना
248.	रेवरेंड स्मिथ	•आश्विन की चांदनी की तरह भक् भक् गोरे
249.	जीजा का भवानी की मूर्ति के सामने पड़े चकमक सिक्कों और स्वर्ण-रजत आभूषणों को निहारना	•किसान का अपने खेत निहारना
250.	मराठा ताकत	•समुद्र का ज्वार[228]
251.	गूजरी देवी का सकुचाना	•छुई-मुई के पत्तों का सकुचाना
252.	मोहक मुस्कान का गोविन्द के रक्ताभ होठों से चिपकी रहना	•सुबह के पाटल-पुष्प से ओस बूंदे चिपकी रहना
253.	मनुष्य का जीवन-जगत की समस्याओं से जूझना	•बिना पतवार की नौका में सागर की खूंखार लहरों •से खेलने का प्रयास करना
254.	चक्रधर का महल	•पन्ने के प्याले में सजा बड़ा-सा वैदूर्यमणि
255.	आवश्यकता पड़ने पर भी अहिंसक रहनेवाला धर्म	•नख-दन्तहीन वृद्ध व्याघ्र
256.	रामसिंह	•मुगलों का बिना मोल का गुलाम
257.	रामसिंह का अपने शयन-कक्ष में चहलकदमी करना	•पिंजड़े में बन्द शेर का चहलकदमी करना
258.	मुगलिया सरदार का अपने गुस्से को पी जाना	•तम्बाकू के गुड़गुड़े के कड़वे घूंट को पी जाना
259.	रामसिंह के मुँह का स्वाद बिगड़ जाना	•अनजाने में असम के जंगलों का अखाद्य फल खा लेना
260.	राजपूतों की हेकड़ी	•जली हुई रस्सी की ऐंठन
261.	गुरू पर किले के महल की अटारियों और वातायनों से पुष्पों की पंखुड़ियों की वर्षा होना	•श्रावण के मेघ का जल-बूंदों के बदले फूलों की रिमझिम बरसात पर उतर आना
262.	गुरुग्रन्थ साहब	•एक धार्मिक मधु-कलश
263.	आनन्दपुर के किले में गोविन्द को	•पाटल पुष्प का अपनी पंखुड़ियों के संपुट में

	सुरक्षा देना	सुरभित पराग को सुरभित रखना
264.	गोविन्द के अन्तर का आक्रोश	•अग्नि पर चढ़ा जल
265.	भक्ति के बिना धर्माचरण	•लंगड़े की दौड़
266.	भीड़ का बीच से फट जाना	•गंगा की रेत पर पके तरबूज का फटना
267.	नानकी देवी	•लौह महिला
268.	गोविन्द राय	•सम्पूर्ण राष्ट्र का मुकुटमणि
269.	अन्तर का कोना-कोना प्रफुल्लित और पुलकित होना	•सूरज की प्रथम किरणों का सुखद स्पर्श पाते ही एक-एक कर खुलना
270.	किरपालचन्द का अपने पर किए गए मजाक को झटक फेंकना	•घोड़े की पीठ पर पड़ी पानी की बूंदों को झटक फेंकना
271.	नादान मानव-शिशु के अन्दर उसके भविष्य का छिपकर बैठना	•बीज में वृक्ष के स्वरूप छिपा रहना
272.	गोविन्द द्वारा ज्ञान की एक-एक बूंद को तृप्ति से ग्रहण करना	•सीप का स्वाति जल को ग्रहण करना[229]
273.	मुख	•मन का दर्पण
274.	भीमचन्द	•पहाड़ी सर्प
275.	गोविन्दसिंह	•मानव शेर
276.	गोविन्द सिंह	•नर-केसरी
277.	गोविन्दसिंह का पहाड़ी राजाओं में से कुछ को उदरस्थ कर अपनी शक्ति का विस्तार करना	•सर्प का चूहे को निगल जाना
278.	पहाड़ी राजाओं का अपने सैनिकों के साथ किलों की पाषाण दीवारों और अभेद्य कपाटों को तोड़ने का व्यर्थ प्रयास कर वापस आना	•समुद्री लहरों का किनारों पर ही सिर पटक वापस हो जाना
279.	मन	•शाखामृग
280.	शाहंशाह आलमगीर औरंगजेब	•बूढ़ा वाघ
281.	मानव-जीवन	•डाल पर खिला फूल
282.	केशविहीन सिर	•पानपत का मैदान

283.	गोविन्दसिंह के लिए मित्रता	•सावनी धूप[230]
284.	कोलाहल का पूर्णतया शांत होना	•खौलते तेल पर पानी का एक भरपूर छींटा मारना
285.	स्वामी रामानंद का सिंहनाद करना	•वनराज का कुद्ध होकर गर्जन करना
286.	कबीर को देखकर स्वामी रामानंद का बिदकना	•लाल कपड़े देखने पर सांड का बिदकना
287.	कबीर का मुँह लटकाए जुलाह-टोली की ओर भागना	•गलती से शहर में घुस आए गीदड़ का कुत्तों की भों-भों पर भागना
288.	कबीर को धनिया, कमाल और लोई का घेर लेना	•अकेले आदमी को जंगल के श्रृगाल का चारों ओर से घेरकर उसकी बोटी-बोटी खा जाना
289.	कबीर	•बिना ताज के बादशाह
290.	गुणी व्यक्ति का झुक जाना	•फूलों से लदे वृक्ष का झुक जाना[231]
291.	गाली	बन्दूक की गोली
292.	व्यक्ति विशेष के गुणों का चतुर्दिक फैल जाना	•पुष्प की सुरभि का चतुर्दिक फैल जाना
293.	गांधी के समक्ष समस्या खड़ी होना	•सुरसा का मुँह बाए खड़ी होना
294.	रायफल से निकली गोली लगने पर लोगों का दीवार से जमीन पर गिरना	•पके फल का जमीन पर आ टपकना
295.	अर्द्धमृत और घायल लोगों का मैदान पर तड़पना	•रेत पर पड़ी मछली का तड़पना
296.	महात्मा गाँधी और प्रमुख काँग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी की बात एक कोने से दूसरे कोने तक व्याप्त होना	•दावाग्नि का वन के एक छोर से दूसरे छोर को ग्रस लेना
297.	चर्चिल	•राजनीति के शिखर-पुरुष[232]

विशिष्ट शब्द

विशिष्ट शब्दों के अन्तर्गत हमने उन शब्दों को रखा है जो आज की भाषा में प्रचलित नहीं है या ग्रामीण परिवेश में प्रचलित हैं और जिनके लिए व्याख्या की आवश्यकता रहती है। कुछ संस्कृत शब्द जिनकी लेखक ने खुद व्याख्या की है ऐसे शब्दों को भी लिया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ प्राचीन नगरों के नाम रखे हैं

जिनका पुराना सन्दर्भ ज्ञात नहीं है। उदाहरणस्वरूप हम 'लखनऊ' से तो परिचित हैं परन्तु कईयों को यह ज्ञात नहीं है कि 'लखनऊ' शब्द 'लक्ष्मणपुर' से व्युत्पन्न हुआ है तो इस तरह के शब्दों को हमने रखा है। इसके अलावा हमने यहाँ कुछ ऐसे शब्द भी रखे हैं जिनका प्रयोग आधुनिक हिन्दी में बहुत कम पाया जाता है। उदाहरणतया हम 'यमराज' शब्द से तो परिचित हैं परन्तु 'कृतान्त' शब्द उतना ज्ञात नहीं है। डॉ. मिश्र के उपन्यासों में जहाँ हमें ऐसे शब्द मिले हैं उनको यहाँ उद्धृत करने का हमारा उपक्रम है। कठिनया अप्रचलित शब्दों के अर्थ को शब्द के बाजू में लिखकर दर्शाया गया है।

1. **जोधपुर** : राव दूदा के पिता जोधा के नाम से ही जोधपुर नाम पड़ गया।
2. **मेड़ता** : मीर-ता मीरता है अर्थात् जलाशय युक्त। मीरता का अपभ्रंश रूप ही मेड़ता हो गया है। मेड़ता नगर के आसपास जलाशय ही जलाशय हैं। निश्चय ही इसी नगर की विशेषता के कारण कभी किसी वेदज्ञ संस्कृतज्ञ ने इसका नाम मीरता ही रखा होगा।
3. **दंवरी** : पुआल से धान निकालते बैलों को 'दंवरी' कहते हैं। बीच में एक लकड़ी गाड़ दी जाती है 'मेह'। उसके चारों ओर धान के सूखे पौधे फैला दिए जाते हैं और चार-पाँच बैलों को एक पंक्ति में 'मेह' से आरम्भ कर बिना एक-दूसरे से जोड़े खड़ा कर दिया जाता है। पुआल पर ये बैल 'मेह' के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगते हैं। कोई भागता नहीं, कोई पंक्ति नहीं तोड़ता यद्यपि कोई एक-दूसरे से बंधा नहीं, फिर भी वे सब बंधे होने का अनुभव करते हैं।
4. **मीरा** : मीरा का अर्थ देवभाषा (संस्कृत) में जलाशय होता है। 'मीरा' शब्द के नामकरण के सन्दर्भ में राव दूदा द्वारा लेखक ने बताया है कि मीरा जलाशय के स्वस्छ स्फटिक-से सलिल की तरह है। उसका बहिरंग जितना स्वच्छ है उसका अंतरंग भी, उसका हृदय भी उतना ही आकर्षक, निष्कलुष और स्फटिक सदृश सलिल-सा ही स्वच्छ है।
5. **हांका** : मध्यकाल के राजपूत युग में राजा जब शिकार करने के लिए जाते थे तब वे अपने साथ विश्वस्त आदमियों का दल भी ले जाते थे। इनके द्वारा शिकार को घेरा जाता था उसे ही शिकार में 'हांका करना' कहते हैं।
6. **कृतान्त** : यमराज
7. **मसी** : स्याही

8. **श्रुवा**

9. **असूर्यंपश्या नारियाँ** : जो नारियाँ घर की चार दीवारों से बाहर नहीं निलकती थीं अर्थात् सूर्य की किरणें भी जिनको छू नहीं पाती थी ऐसी स्त्रियों के लिए लेखक ने असूर्यंपश्या नारियाँ शब्द का प्रयोग किया है।

10. **पार्श्ववर्तिनी**

11. **वृक** : भेड़िया

12. **पुंश्चली**

13. **प्रत्युत्पन्न मतित्व**

14. **व्याघ्रिणी**

15. **कच्छप : कछुआ**

16. **दुरभि सन्धि**

17. **नखलिस्तान**[233]

18. **हुंकृति**

19. **नारसिंह** : स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द

20. **विगत-श्रम**

21. **बहंगी** : काँवर

22. **बन्दूकची** : तोपची[234]

23. **लठैत**

24. **'लहरतारा' तालाब** : वाराणसी में, नगर से कुछ दूर उन दिनों एक विशाल तालाब हुआ करता था। आकंठ जल-पूरित। इसमें लहरें, हवा के थपेड़े जो जगाते सो जगाते, आसमान का चाँद उन्हें कुछ अधिक ही जगाता था। पूर्णिमा की रात को तो यह तालाब इस तरह तरंगायित होता कि लहरें आसमान को छूने को आतुर हैं। यही कारण था कि लोगों ने इसका नाम 'लहर तालाब' रख दिया था। यह तालाब अब भी काशी में विराजमान है पर उसका वह रूप नहीं।

25. **प्रतिष्ठानपुर** : (अब झूंसी)

26. **नबियों** : ईश्वर के संदेश-वाहकों[235]

27. **उत्कल** : उड़ीसा

28. **पाटलिपुत्र** : सती के शव को कंधे पर ले विक्षिप्त-से भागते-दौड़ते आशुतोष शिव के इस कृत्य को देख जब विष्णु ने शव के टुकड़े करने आरम्भ किए तो सती के पट (अंगवस्त्र) का एक भाग पाटलिपुत्र में गिरा था। उसी के फलस्वरूप उसका नाम 'पाटलिपुत्र' पड़ा। (पाटलिपुत्र आज का पटना)

29. **गुटिया** : छोटी यात्राओं के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय नौकाएँ थीं, उन्हें 'गुटिया' कहा जाता था। यह पतली-सी नोकदार नौका बड़ी विचित्र थी। इसे किसी पेड़ के तने को 15-16 फूट की लम्बाई में काटकर बीच से खोखला कर बनाया जाता था। ब्रह्मपुत्र की बेरहम लहरों पर गुटिया किसी चंचल मछली की तरह ही किल्लोल करती थी। उसकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि लहरों के थपेड़े खाकर उलट-पटल भले जाए पर यह डूबकर भी नहीं डूबती थी। अगर उलट भी गई तो सीधा होने में भी इसे समय नहीं लगता था। यदि आप लहरों की चपेट में आई गुटिया के किनारे को ठीक से पकड़े रहें तो आप जल में चाहे दो-एक गोते लगा लें पलटकर सीधी हुई गुटिया पुनः आपको अपने पतले पेट में शरण देने में कृपणता नहीं करेगी।

30. **क्वा** : तिब्बत में 'क्वा' चलाते हैं। यह एक चमड़े की नौका है जो धारदार चट्टानों से भी आसानी से निबट लेती है।

31. **ब्रह्मपुत्र नदी** : 'लहित' नदी और 'डि-हांग' नदी मिलकर ब्रह्मपुत्र नदी बन जाती है।

32. **सापरी और माझुली** : ब्रह्मपुत्र की धारा में अनगिनत छोटे-बड़े द्वीप प्रकट होते हैं - छोटे द्वीपों को 'सापरी' कहते हैं और बड़ों को 'माझुली' कहते हैं ।

33. **सोनकोष** : (स्वर्णकोष) नदी का नाम

34. **कुलसी** : (कलसी) नदी का नाम

35. **लखनऊ** : कभी लक्ष्मणपुर के नाम से ख्यात यह नगर, जिसे किंवदन्तियों और मिथकों के अनुसार रामानुज लक्ष्मण ने बसाया था, अब अपने प्राचीन नाम को छोड़कर नया नाम अपना चुका है।

36. **बक-ध्यान**

37. **घड़ियाल** : (मगरमच्छ)

38. **हरकारा** : (पत्रवाहक)

39. **मनस्वी** : 'मनस्वी' शब्द का अर्थ वर्तमान समय में 'अपनी मनमानी करना' या 'आपखुदशाही' के अर्थ में प्रयुक्त होता है, किन्तु डॉ. मिश्र ने अपने अनेक

उपन्यासों में 'स्वतंत्र चेतना विकसित पुरूष' के अर्थ में प्रयोग किया है।[236]

40. **मसंद** : पाँचवे गुरू अर्जुनदेव ने केन्द्रीय शक्ति को पूर्ण समृद्ध एवं सशक्त करने हेतु एक बड़ी ही दूरगामी और सुचारित व्यवस्था को जन्म दिया था। उन्होंने पूरे पंचनद प्रदेश को कई मंजियों (परगनों) में विभक्त कर दिया था। हर मंजी की आध्यात्मिक-प्रशासनिक व्यवस्था जिस व्यक्ति के हाथ में थी उसे मसंद कहा जाता था। गुरू-गद्दी को प्रदान किया जाने वाला प्रत्येक द्वारा आय का दसवाँ हिस्सा वसूल करना इन्हीं मसंदों का दायित्व था।

41. **सेहली** : भुजाली

42. **बंकसुए** : कमरपेटी

43. **भुजदंड** : मूठ

44. **तेग** : खड्ग

45. **अंगना** : औरत

46. **वृषभ** : बैल

47. **गुस्सैल**

48. **पंचपियारे और पंचमुक्ते** : सन् 1699 की वैशाख पूर्णिमा के दिन गुरू गोविन्दसिंह ने परीक्षा की घड़ी की बात कहकर एकत्रित समुदाय को अपने सिर देने का आह्वान किया। दयाराम खत्री, धरमदास जाट, साहिबचन्द, हिम्मतराय और मोहकमचन्द छिम्बा का सिर देने के लिए तैयार होने पर इन पाँचों को अमृत छकाकर खालसा पंथ में दीक्षित किया। इन पाँचों को 'पंचपियारों' की संज्ञा से विभूषित किया। इसके बाद उनके द्वारा अमृत छककर खुद गुरू दीक्षित हुए। उनके बाद अमृत छकने वाले पहले जत्थे को पंचमुक्ते नाम दिया गया। 'पंचमुक्ते' अर्थात् पांच मुक्ति प्राप्त करने वाले व्यक्ति।

49. **पाँच ककार** : सिक्ख धर्म में खालसी पंथ में दीक्षित व्यक्ति को अपने शरीर पर केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और कृपाण को धारण करना आवश्यक है। जिसे पाँच ककार कहा जाता है।

50. **क्वांरा डोला** : बीबी साहिबा देवां गुरू के साथ विवाह करना चाहती थी, अतः गोविन्दसिंह ने साहिबां देवां के लिए 'क्वांरा डोला' का प्रस्ताव रखा। अर्थात् वे दोनों सांसारिक रूप में पति-पत्नी नहीं बनेंगे।

51. **पांवटा** : गुरु गोविन्दसिंह के पाँव पाँवटा आकर टिक गए, अतः उनके भक्त

राजा मेदिनी प्रकाश ने यह नामकरण कर दिया। एक कवि ने भी कहा है - 'पाँव टिकिए सतगुरु के आई। नाम पड़ियो 'पावटा' सब देश प्रगटाई॥'

52. **गुरुमत्ता** : गुरु गोविन्दसिंह द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के अनुसार पाँच सिक्ख एक स्थान पर श्रद्धा-भक्ति से एकत्रित होकर जो प्रस्ताव तैयार करते हैं उसे 'गुरुमत्ता' कहा जाता है। चमकौर नामक स्थान पर गोविन्दसिंह को उनके शिष्यों ने इस गुरुमत्ता के कारण ही भागने को मजबूर किया था।

53. **निहंग सम्प्रदाय** : ऊँच के फकीर बनकर गुरु गोविन्दसिंह ने नीले परिधान धारण किये थे। उस नीले परिधान जलाते समय अंतिम टुकड़े को मानसिंह ने मांगकर सिर पर बाँध लिया। निहंग सम्प्रदाय का आरम्भ यहाँ से माना जाता है।

54. **बेदाना** : चालीस लोग गुरु गोविन्दसिंह को आनन्दपुर में कागज लिखकर दे आए थे कि अब से उनका गुरु-शिष्य का नाता नहीं रहा। उस कागज को बेदाना कहा गया है ।

55. **मुक्तसर** : चालीस लोग गुरु गोविन्दसिंह को बेदाना लिखकर आनन्दपुर छोड़ गए थे। 'माझा युद्ध' में गुरु का साथ देकर शहीद हो गए थे। वे प्रायश्चित कर अपने पापों से मुक्त हो गए थे। इसीलिए जहाँ वे शहीद हुए वहाँ पास के तालाब का नाम मुक्तसर हो गया।

56. **दमदमा साहिब** : गुरु गोविन्दसिंह ने यहाँ दम लिया इसलिए 'दमदमा साहिब' नाम पड़ गया।

57. **लिखनसर** : गुरु गोविन्दसिंह ने आदिग्रंथ लिखने में प्रयुक्त की गई कलमों और बची-खुची स्याही को पास में स्थित एक तालाब में विसर्जित कर दिया। इस तालाब को तब से 'लिखनसर' नाम से जानते हैं। [237]

58. **गिरमिटिया** : जब अंग्रेजों ने अफ्रीका की इस धरती पर कब्जा किया तो उन्होंने आदिवासी हब्शियों को खेत-खलिहान से खदेड़ दिया। भारत की अंग्रेज सरकार से अफ्रीकी सरकार ने एक एग्रीमेन्ट के तहत पाँच-पाँच वर्षों के लिए मजदूर लेने शुरु किये। भारतीय मजदूर जहाजों में भरकर आने लगे। वे पाँच वर्ष की मजदूरी के एग्रीमेन्ट पर आते थे। यह 'एग्रीमेन्ट' अपभ्रंश होकर 'गिरमिट' बन गया और वे भारतीय मजदूर 'गिरमिटिया' कहलाने लगे।

59. **पीलवान** :

60. **सेवाग्राम** : प्राचीन नाम 'सेगांव'[238]

61. **कृष्ण** : कर्षयति इति कृष्णः ।

'क्' है कमलाकान्त अर्थात् साक्षात् लक्ष्मीपति का प्रतीक।

'ऋ' अर्थात् रकार, सूचक है राम का (त्रेता के ईश्वरावतार)

'ष्' षष्ट ऐश्वर्यपति विष्णु का वाचक है।

'ण' अथवा 'न' नृसिंह का द्योतक है।

'अ' अग्नि तत्व का द्योतक है।

':' (विसर्ग) ये दो नर-नारायण के प्रतीक हैं।

62. **श्याम** : नीलकमल की तरह नीले प्रकाश से युक्त श्याम रंग के कारण कृष्ण का एक नाम श्याम भी है।

63. **वासुदेव, हरि** : वसु का अर्थ है इन्द्रिय। वासुदेव बना वसुदेव से। वसुदेव अर्थात् इन्द्रियों का देवता, उनका अधिष्ठाता। वसुदेव का अर्थ है चित्त। 'वसुदेव' हुआ वह जो इस चित्त में स्थित हो। साक्षात् भगवान अर्थात् हरि। इसलिए वासुदेव का एक नाम 'हरि' है।

64. **बलराम, हलायुध, संकर्षण** : ऋषि, योगिजन और ज्ञानी पुरुष बलराम के प्रताप और प्रभाव के कारण उनमें रमण करते थे और उनसे प्रेरणा प्राप्त करते थे अतः उनका नाम 'राम' था। वे अद्भूत बलशाली थे। रणांगण में कोई उनके बल के सामने टिक नहीं पाता था। चाहे तो अपने प्रिय आयुध हल से पृथ्वी को उलट दे, अतः उनका नाम बल तथा कुछ लोग दोनों नामों को मिलाकर 'बलराम' भी कहते थे। हल उनका आयुध होने के कारण उनको 'हलायुध' नाम से भी पुकारते थे। उनमें अद्भूत संगठन शक्ति थी तथा लोगों को अपनी ओर आकृष्ठ करने के कारण उनका नाम 'संकर्षण' भी था।

65. **अघ या अघासुर** : वह सर्पों को वश में करने की विद्या जानता था। वह बीन पर इतना अच्छा राग छेड़ता कि साधारण से साधारण विशाल अजगर तक उसके पास झूमने लगते थे। अतः उसका नाम अघ पड़ा। शायद उसके विशाल शरीर को देखकर लोगों ने उसका नाम अघासुर रखा होगा।

66. **पर्यंक** : पलंग

67. **राज्यक्ष्मा** : तपेदिक

68. **प्रातरात** : कलेवा

69. **वृक** : भेड़िया

70. **वर्तिका** : बाती

71. **अपूप** : पुआ

72. **उत्कोच** : घूस

73. **इक्षु-दण्ड** : ईख

74. **प्रदोत** : प्रहार

75. **कपोती** : कबूतर

76. **शिशुहन्ता**

77. **गोमय** : गोबर

78. **उष्ट्र** : ऊँट

79. **बृहत्सानुपुर** : बरसाना[239]

80. **जामाता** : श्याला

81. **वृन्दा** :तुलसी

82. **कृतान्त** : यमराज

84. **मातुल** : मामा

85. **भल्लूक** : भालू

86. **उरू** : जंघा

87. **सद्यः** प्रसूता

88. **पद्मगन्धा** : द्रौपदी के लिए[240]

89. **द्रोण** : दोना

90. **हनु** : ठुड्डी

91. **सूची** : सूई

92. **भूमिजा** : सीता के लिए

93. **श्मश्रु** :दाढ़ी-मूंछ

94. **जृम्भण** : जम्हाई

95. **कंडूयन** : खुजली

96. **श्रृगालिका** : लोमड़ी

97. **हिलिंग पावर** : रोग निवारण शक्ति को आंग्ल भाषा-भाषी 'हिलिंग पावर' की संज्ञा देते हैं।

98. **इस्लामबाड़ी** : इस्लामबाड़ी का नाम पहले कभी हनुमानबाड़ी था। किन्तु

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

आज से 600 वर्ष पूर्व बख्तियार खिलजी ने इसका नाम इस्लामबाड़ी कर दिया।

99. अलीगंज : नवाब वाजितअली शाह की दादी आलिया बेगम ने एक बार बिस्तर पकड़ा। बेगम ने अलीगंज के हनुमान की मनौती की और रोगमुक्त हो गई तो बहु बड़ा उत्सव आयोजित किया हनुमानजी के मन्दिर पर। फकीरों, दरवेशों और साधु-संतों को छककर खिलाया। गरीबों-भिखमंगों को निढ़ाल किया। तभी से चल पड़ी है मेले की परम्परा जो आज तक वर्तमान है। और तभी से पड़ गया इस मुहल्ले का नाम आलिया बेगम के नाम पर ही अलीगंज पड़ा।

100. निशाचर : निशायां चरति इति निशाचरः।

101. सासाराम और बिहार : सासाराम कभी का सहस्त्राराम। बौद्धों के बहुत सारे विहार-आराम बने थे बिहार में, तभी उसका नाम बिहार पड़ा और सहस्त्र आराम निर्मित थे सासाराम में, अतः वह हो गया सहस्त्राराम और फिर सहसराम और अंततः सासाराम।

102. मरुतामलै पहाड़ी : कन्याकुमारी से तिरुअनन्तपुर की ओर आगे सड़क के किनारे एक नन्हीं पहाड़ी मरुता मलै। इस पहाड़ी पर अनेक प्रकार की, रोग-निवारक जड़ी-बूटियाँ उपलब्ध हैं। पहाड़ी की इसी विशेषता ने लोगों को यह मानने के लिए बाध्य किया कि वह पहाड़ी द्रोणागिरि का ही अंश है जिसे हनुमान सौमित्र के शक्ति-पीड़ित होने पर ले जा रहे थे। द्रोणगिरि का एक अंश यहाँ टूट गिरा था और यह अंश भी प्राणदायिनी बूटियों से भरा था। मारुति का स्पर्श पाने के कारण ये जड़ीबूटियाँ अमर हो आईं और वे अब तक इस पर वर्तमान हैं। यही मान्यता है लोगों की, इसीलिए इस पहाड़ी का नाम रख दिया लोगों ने - मरुता मलै अर्थात् मारुति की पहाड़ी।

103. मुंबई : मुम्बादेवी की प्रसिद्ध नगरी, जो बम्बई के नाम से भी ख्यात है।

104. दरभंगा : द्वारभंग का अपभ्रंश दरभंगा हो गया।

105. औरस पुत्र :पत्नी का अपने पति द्वारा पुत्र न प्राप्त करने की स्थिति में किसी अन्य पुरूष से प्राप्त पुत्र को औरस पुत्र कहा जाता है।

106. भुवनेश्वर : लिंगराज के कारण ही भुवनेश्वर नगर को यह नाम प्राप्त हुआ। संस्कृत में कहा भी गया है भुवनस्य ईश्वरः यः स भुवनेश्वरः जो भुवन का ईश्वर हो वह भुवनेश्वर अर्थात् शिव।[241]

107. कुलीन : 'कुलीन' का कोशगत या अभिधागत अर्थ तो ऊँचे कुलवाला या खानदानी होता है किन्तु उत्तरी बिहार में श्रोत्रीय ब्राह्मण होते हैं उनको कुलीन ब्राह्मण कहा जाता है। जिन गरीब ब्राह्मण माँ-बापों की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं होती कि वे अपनी पुत्रियों का विवाह दहेज या तिलक देकर कर सकें, तो ऐसे माँ-बाप अपनी पुत्रियों का विवाह कुलीन ब्राह्मणों से कर देते हैं। ये कुलीन ब्राह्मण कई-कई विवाह करते हैं। विवाह के उपरान्त पत्नी को अपने साथ न ले जाकर पितृगृह में ही छोड़ जाते हैं और वे ही लोग समय-समय पर अपनी ससुराल में आते हैं।

108. पाहुना : 'पाहुना' शब्द का शाब्दि अर्थ तो अतिथि या मेहमान होता है। किन्तु इस उपन्यास में कुलीन दामाद के लिए इसका प्रयोग मिलता है।

109. पत्तल फिंकवाना : 'पत्तल फिंकवाने' का शाब्दि अर्थ होगा भोजनोपरांत जूठी पत्तलों को बाहर फिंकवा देना। परन्तु प्रस्तुत उपन्यास में उसका एक दूसरा ध्वन्यार्थ मिलता है। कुलीन दामाद श्वसुर-गृह बार-बार तो आते नहीं है, कभी छठ्ठे-छमाहे आते हैं। ऐसी स्थिति में किसी कुलीन-विवाहिता स्त्री को किसी अन्य पुरूष से गर्भ रह जाता है तो उसके अभिभावक कुछ-कुछ दिनों के अन्तराल मे बाहर पत्तल फिंकवा देते हैं और लोगों को जताते हैं कि 'पाहुने' आए थे ताकि किसी तरह उनकी इज्जत-आबरू बच जाए।[242]

110. द्विरागमन : हिन्दी भाषी प्रदेशों में लड़की की प्रथम प्रसूति अपने ससुराल में होती है। अतः प्रसूति के पहले लड़की को एक बार उसके मायके भेजा जाता है और फिर मायके से विदा करके उसके ससुराल वाले उसे अपने यहाँ ले जाते हैं। इस रस्म को द्विरागमन कहते हैं।

111. अहल्यापन

112. मुद्रा-मोचन

113. व्यालिनी

114. दीर्घसूत्री[243]

115. शरहुल : बिहार का छोटानागपुर के वनों में जब बसंत उतरता है तो इधर के आदिवासी एक विशेष पर्व मनाते हैं उसे 'शरहुल' कहते हैं।

116. शिखर पुरूष[244]

117. इलायची दाना : चीनी से बनी बुंदिया जैसी चीज तीर्थों पर प्रसाद के रूप में बिकती है।

118. **वाक्‌युद्ध**[245]

119. **तर्काचार्य**

120. **मरणकंडिका**[246]

आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्द

सभ्यता का जैसे-जैसे विकास होता जाता है नए-नए शब्द भी उसमें जुड़ते चले जाते हैं। उदाहरणतया पहले देशी घी ही होता था परन्तु बाद में वनस्पति घी या डालडा आया। उसी तरह पहले खाद्य तेलों में तिल का तेल, मूँगफली का तेल, सरसों का तेल आदि होता था परन्तु अब सफोला, सनफ्लावर, मारूति, तिरूपति जैसे विशिष्ट ब्राण्ड के तेल भी निकले हैं। पहले लोग दातून करते थे। अब नगरों में और नगरों से प्रभावित ग्रामीण विस्तारों में लोग टूथपेस्ट करने लगे हैं तो स्वाभाविक होगा कि उससे जुड़ी शब्दावली भी भाषा में प्रयुक्त होगी। डॉ. भगवतीशरण मिश्र के 'सूरज के आने तक', 'एक और अहल्या', 'नदी नहीं मुड़ती', 'लक्ष्मण-रेखा' जैसे सामाजिक उपन्यासों तथा 'शान्तिदूत' और 'बंधक आत्माएँ' जैसे उपन्यासों में सुशिक्षित समाज का परिवेश मिलता है, अतः उसमें आधुनिक सभ्यता से संपृक्त शब्दावली का प्राप्त होना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। इनमें अधिकांश शब्द अंग्रेजी के हैं क्योंकि आधुनिक सभ्यता से जुड़ी हुई बातों का सीधा संबंध इस भाषा से है। यहाँ हमने आधुनिक सभ्यता से संपृक्त कुछ शब्दों को सूचीबद्ध किया है। यथा - कैलेन्डर, होर्न, कॉलर, चप्पल, पैंट, ब्लाउज़, आनर्स, बालकोनी, फार्वड, लाउड़ स्पीकर, ग्लेशियर, पार्क, ग्रैंड कॉर्ड, कॉलेज, एक्स रे, बॉस, माइक्रोस्कोप, रेड़ियो, काम्बिनेशन, टेलीपेथी, टेलीविजन, प्राइवेट, स्टैंडर्ड, एसेम्बली, वोट, वार्ड, मूड़, सूट;[247] मिसेज़, ट्रांडिस्टर, क्रिम्सन, विमेन्स होस्टल, पेंटिंग्स, गैस-पेपर, अप टू डेट, पार्टी, कोचिंग,लॉन, जूनियर, की-बोर्ड, बाथरूम, सूटकेस, क्लब, स्टडी रूम, स्टडी टेबल, हैंड बेग, रोमांटिक मूड़, रीकार्ड कीपर, डबल स्टैंडर्ड;[248] ग्रीटिंग कार्ड, पुअर स्टूडेंटस, मिस स्टिक, न्यू इयर्स डे, सोफासेट, अप डाउन, पिक्चर कार्ड, किचन, सिनेमा हॉल, पिक्चर, सिनेमा, ड्राइंग रूम, ग्लैमर, टॉनिक, टी.वी. कल्चर, पॉप, जॉक, टेलीफोन, इडियट बॉक्स, चैनल, हीरोइन, इंटरव्यू, बोर्ड, फुलपैंट, टी-शर्ट, फ्रॉक, एयर कूल्ड, रॉक एण्ड रॉल, वी.डी.ओ. रेकर्डर, एम्बेसडर कार, ट्रे, रेडियोग्राम, कैरमबोर्ड, बोर, पार्टनर, विमेन्सलिब, फोटोग्राफी, मोर्निंग वाक, ऑक्सफोर्ड,

कैम्ब्रिज, हेरोइन, रजिस्टर्ड मैरिज, डायवोर्स, कॉल गर्ल, कॉल, फ्लैट, डिनर, लंच, फेयरवेल, कार्डीगन, चीपनेस, विज्ञापनदाता, उद्योगपति, अनाचार (रीगिंग);[249] फिलोमिना (प्रस्तावना), क्रोमीन, अंटिबाइटिक्स, सूट-बुट, नाइट-सूट, लीप-रीडर, पिकनिक, साइन बोर्ड, नेम-प्लेट, लेन्स, कैश बॉक्स, कैमरा, टू इन वन, जे.एन.यू., ब्रेन वाश, हॉस्टल, बोट क्लब, रूममेट, टाई, कॉमन रूम, सिगरेट, ड्रिंक, माइंड रीडर, मैरेज रजिस्ट्रेशन, फ्लैट, होटल; ऐयर कंडिशंड सिनेमा हॉल, होस्टल वार्डन, परमानेंट सेक्रेटरीज, लैंप, स्मोक, पास बुक, बैडरूम, स्मोकिंग, मेंटल शोक, नर्सिंग होम, लाइसेंस, पासपोर्ट, वीसा, थियेटर;[250] स्मार्ट, कॉल बेल, स्मगलर, मार्निंग शो, कैप्सटन सिग्रेट, ब्रांड, टॉर्च, लाइटर, टाउन हॉल, क्लाथ मार्केट, फिंगर-प्रिंटस, रील, मैग्जीन एडिटर;[251] ओवरकोट, जाकेट, फैशन, पेइंग-गेस्ट, लॉन्च, पायनियर (पत्र), स्टैट्समैन (पत्र), इंगलिशमैन (पत्र), स्ट्रेचर, टाइपिस्ट, ब्रांडी, ऑपरेशन, प्रेस, सैंडल, मार्च आउट, स्ट्राइक, डेक, यंग इंडिया (पत्र), टेलीग्राफ, फायर, हॉस्पिटल, जनरल, गोल्डन हेयर्स, शेव्ड आदि-आदि।[252]

प्रकीर्ण

इस अध्याय में हमने शब्द के विविध आयामों को लेकर गवेषणात्मक दृष्टि से अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस शीर्षक के अन्तर्गत उपर्युक्त अध्ययन में जो छूट गया है ऐसे कुछ आयामों पर विचार हुआ है। जिससे हमें डॉ. मिश्र की प्रतिभा और प्रगाढ़ पांडित्य का परिचय होता है।

व्यक्तिवाचक नाम

डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने विभिन्न प्रकार के उपन्यासों की रचना की है - सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, पौराणिक उपन्यास और चमत्कारप्रधान उपन्यास - उपर्युक्त कोटि के उपन्यासों में परिवेश के अनुसार पात्र आए हैं। पात्रों के नाम से भी देशकाल का पता चलता है। डॉ. मिश्र के सामाजिक उपन्यासों में बिहार के भोजपुर और मिथिला प्रदेश के पात्रों की बहुतायत पाई जाती हैं। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में 'शान्तिदूत' को छोड़कर बाकी सारे उपन्यासों मे मुगलों के शासनकाल के समय का परिवेश होने के कारण मुसलमान पात्रों का आना स्वाभाविक ही है। डॉ. मिश्र ने ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना किसी-न-किसी ऐतिहासिक चरित्र को लेकर की है। 'का के लागूं पांव' और 'गोबिन्द गाथा' में गुरु तेगबहादुर

और गुरु गोविन्दसिंह के जीवन-संघर्ष का चित्रण किया गया है अतः इन उपन्यासों में पंजाबी पात्र मिलना स्वाभाविक ही है। इसी प्रकार 'पीतांबरा' और 'पहला सूरज' क्रमशः मीराबाई और शिवाजी के जीवन पर आधारित उपन्यास है अतः इन उपन्यासों में भी राजस्थानी और महाराष्ट्रीयन पात्रों की बहुतायत मिलती है। 'शान्तिदूत' राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पर आधारित उपन्यास है। देश की स्वाधीनता के समय का चित्रण होने के कारण इसमें विभिन्न देश, धर्म, जाति, व्यवसाय के पात्र हमें दृष्टिगोचर होते हैं। 'बंधक आत्माएँ' उपन्यास में लेखक ने अपने अनुभवों का चित्रण किया है। इसमें अधिक्तर बिहार के उच्च्व पदों पर स्थापित पात्र आए हैं। 'पवनपुत्र', 'प्रथम पुरूष' और 'पुरूषोत्तम' डॉ. मिश्र के पौराणिक उपन्यास हैं। 'पवनपुत्र' हनुमानजी के चरित्र का चित्रण है। अतः उसमें रामायणकालीन पात्र मिलते हैं। 'प्रथम पुरूष' और 'पुरूषोत्तम' उपन्यास श्रीकृष्ण के जीवन को उद्घाटित करते हैं। उसमें महाभारतकालीन पात्रों का समायोजन मिलता है। इस प्रकार डॉ. मिश्र के उपन्यासों में प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक समय के पात्र तो हमें उपलब्ध होते ही हैं साथ ही विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग, व्यवसाय, प्रदेश और भाषा के पात्र भी प्राप्त होते हैं। जिसकी चर्चा हम तृतीय अध्याय के अन्तर्गत कर चुके हैं। यहाँ पर पात्रों की नामावली प्रस्तुत हैं। यथा -

नदी नहीं मुड़ती : सुषमा, सागर चौधरी, अरुणा, पण्डित गोकुल झा, केशव झा, मुरारी पण्डित, विपिन, गोविन्द झा, पियुष, कमला, कुन्दनलाल कपाही, बैजू मिश्र, मोती प्रसाद, वेद पाठक, नगरसेठ सीताराम केजरीलाल।

सूरज के आने तक : नूनूबाबा, शतरूपा बुआ, लाल मोहर, राधा, मुहम्मद सत्तार, महादेव, नारायण, पं. देवीशरण शास्त्री, गोवर्द्धन पण्डित, निरंजन ठाकुर, मनोहर राय, कमला, रूपा, लालजी मिश्र, सुदामा पंडित, बदनसिंह, वीरू भगत, भीष्म ठाकुर, भूलनसिंह, मदन, कुबेर, शिवशंकर, मोहन रजवार, पियाजी महतो, हलवाहा रोझन चमार, रामलोचन कुम्हार, पंडित विष्णुदत्त।

लक्ष्मण रेखा : विश्वंभर, गीतिका, नवीन, विश्वास मुखर्जी, इस्माइल, पं. सुन्दरलाल बहुगुणा, अब्दुल करीम, ठाकुर विक्रमसिंह।

एक और अहल्या : पृथा, विश्वास, मनीष, विश्वमोहन, सुदर्शन, सावित्री, जयश्री, श्रीधर, अशोक, प्रमोद, डॉ. रघुराज पांडेय।

बंधक आत्माएँ : ओमकाली बाबा (अग्निसिंह), अक्षयवट मिश्रा, गुरुदयाल, शशिभूषण झा, सत्यानन्द, विश्वनाथ प्रसाद, महेन्द्रनारायण झा, हरेराम झा, डॉ.

श्यामनन्दन किशोर, शरण साहब, श्री चुनमुन झा, श्री लक्ष्मणप्रसाद, आर. सी. प्रसाद, पी.सी. सरकार, श्री यू.डी. चौबे, चैन परी, चन्दू परी, डॉ. सीताशरण गुप्त।

पहला सूरज : शिवाजी, शाहजी, मालोजी, रेवरेंड स्मिथ, दादा कोंडदेव, जीजाबाई, गुरु रामदास, अफजल खां, बाजी प्रभु, औरंगजेब, जयसिंह, केशोपंत, संभाजी, गांगा भट्ट, विमलेश पंत।

पीतांबरा : रतनसिंह, राव दूदा, मीराबाई, तुलसीदास, उर्वरीबाई, भोजराज, विक्रमसिंह, जोधासिंह, रानी चम्पादेवी, बीरुसिंह, मेघा सबल, मल्लू खाँ, सातलदेव, वीरमसिंह, रतनसिंह राठोर, पंडित रामदास, धातृ अर्पणा, जयमल, ललिता, राणा सांगा, कुंअर भोज, राणा रत्नसिंह, राणा विक्रमाजीत, राणा उदयसिंह, विष्णुदत्त, मधु मल्लिका, सुवर्णा, सुरुचि, सुरेखा, कुसुम, कुंअरबाई, कर्मावती, धनबाई, उदा, मंगला, सुदर्शना, कृष्णकांत, सूरजमल, कुटनी, कामिनी, मोहन, महाजन बीजावर्गी, पांडे दयाराम, मालदेव, बाबर।

देख कबीरा रोया : कबीर, लोई, धनिया, कमाल, रामानंद, नीरू, नीमा, श्रुतिगोपाल, पद्मनाथ, सिकंदर लोद्री, पूर्णानंद, अजीतसिंह, कालदेव, बिजुली खां।

का के लागूं पांव : गुरू तेगबहादुर (बाबा अकाले), गोविन्दराय, औरंगजेब, रामसिंह, नानकीदेवी, गूजरीदेवी, किरपालचंद, भीखनशाह, राजा चक्रध्वज, पण्डित शिवदत्त, राजा फतहचंद मैनी, रहीम बख्श, करीम बख्श, पीर आरिफदीन,साहिबचन्द, काजी पीर मुहम्मद, इफ्तिखार खां, मतिदास, दयालदास, सतिदास, लखीदास, जैता, नवाब, कश्मीरी पंडित।

गोबिन्द गाथा : गोविन्दसिंह, दूनीचन्द, राजा रामराय, रतनराय, भीमचन्द, रामशरण, सुन्दरी, गूजरीदेवी, सुकेत नरेश, अजमेरचन्द, फतेहशाह, मेदिनीप्रकाश, जीतोजी, पीर बुद्धशाह, दीवान नवचन्द,पंजाब कौर, सांगोशाह, जीतमल, महन्त किरपालचन्द, मुगल सरदार खां, मियां खा, अलिफ खां,दयाल, दिलावर खां, रुस्तम खां, हुसैन खां, गोपाल, रामसिंह, भाई संगीता, जुझारसिंह, मुअज्जम, मिर्झा बेग, भाई नन्दलाल, भाई मनीसिंह, दयाराम, धरमदास, मोहकमचन्द छिम्बा, साहिबचन्द, हिम्मतराय, कुवरेश, जोगासिंह, बीबी देवां (साहिबा कौर), पं. शिवदत्त, बलियाचन्द, आलमचन्द, अजितसिंह, विचित्तरसिंह, घमण्डचन्द, वजीर खां, सलाहीचन्द, मदनलाल, सईद बेग, अलिफ खां, सैद खां, हरिचन्द, मेमू खां, जबरदस्त खां, दिलावर खां, आजिम खां, कन्हैया, जुझारसिंह, धरमसिंह, दयासिंह, मानसिंह, संतसिंह, संगतसिंह, जोरावरसिंह, फतहसिंह, गनी खां, नबी खां, काजी पीर मुहम्मद, सरदार रायकल्ला,

शमीरा, लखमीरा, तख्तमल, धरमसिंह, परमसिंह, सौढ़ी कौल, कपुरसिंह, माई भागो, महानसिंह, दल्लसिंह, वजीर मुनइम खां, चोबेदार मुहम्मद बेग, दानसिंह, रामसिंह, गुरु बख्शसिंह, आजम, कामबख्श, अकबर, माधोदास।

शान्तिदूत : मोहनदास (गाँधीजी), करमचंद, मावजी दवे, पुतलीबाई, डॉ. मेहता, प्रो. लेली, ममी बाई, बाला सुन्दरम्, कस्तूरबा, फिरोजशाह, मि. इस्कंब, लक्ष्मीचंद, अल्बर्ट, कार्टराईट, मीर, स्मट्स, मदनलाल ढींगरा, रतनशी जमशेदजी टाटा, केलनलाख, विंस्टन चर्चिल, नरोत्तम मोरारजी, लोर्ड विलिंगडन, भुपेन्द्र बसु, जीवराम, गोंडल के राजा, मुंशीराम, वल्लबभाई पटेल, श्री महादेवभाई देसाई, अनसूया बहन, मोहनलाल, डायर, लोर्ड मोंटेग्यू, लोर्ड चेम्सफोर्ड, बूम फील्ड, चित्तरंजनदास, मेडलिन, लाला लाजपतराय, भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, रोमारोलां, मुसोलनी, गणेश शंकर विद्यार्थी, अम्बेडकर, मेकडोनेल्ड, रवीन्द्रनाथ, रविशंकर महाराज, स्वामी आनन्द, फीजी गुरु, डॉ. जाकिर हुसैन, जिन्ना, सुभाषचन्द्र बोस, नाथूराम गोडसे।

पवनपुत्र : हनुमान, भारद्वाज, शिव, केसरी, अंजना, पवनदेव, इन्द्र, राम, लक्ष्मण, विश्वामित्र, सुग्रीव, सीता, वाली, विभीषण, त्रिजटा, अक्षयकुमार, मेघनाद, कुंभकर्ण, अहि रावण, शनिदेव, भीम, रुक्मिणी।

प्रथम पुरुष : देवकी, वसुदेव, कंस, रोहिणी, नंद, यशोदा, कृष्ण, बलराम,पूतना,तृणावर्त, राधा, वृषभानु, इन्द्र, चाणुर, मुष्टिक, अक्रूर, दुर्धष, उग्रसेन।

पुरुषोत्तम : उग्रसेन, अस्ति, प्राप्ति, कृष्ण, बलराम, जरासंध, कालयवन, रुक्मिणी, बाणासुर, नग्नजित, सत्या, भौमासुर, जाम्बवान, जाम्बवती, सुदामा, सत्राजित, सत्यभामा, उषा, अनिरुद्ध, द्रौपदी, भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल,सहदेव, कुंती, गांधारी, धृतराष्ट्र, शिशुपाल, उत्तरा, अभिमन्यु, दुर्योधन, भीष्म, कर्ण, विदुर, सात्यकि, शिखंडी, जयद्रथ, घटोत्कच, द्रोण, अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य, कृतवर्मा।

विभिन्न स्थलों के नाम

डॉ. मिश्र ने अपने उपन्यासों में अनेक स्थलों की चर्चा की है तो कुछ स्थलों का उल्लेख विषय-वस्तु के सन्दर्भ में किया है। इस दृष्टि से डॉ. मिश्र के उपन्यासों मे भौगोलिक-यथार्थ का यथार्थ परक चित्रण मिलता है। नीचे हम उपन्यास के अन्तर्गत आए हुए कुछ स्थलों का निर्देश कर रहे हैं साथ ही कोष्ठक में पृष्ठ संख्या भी अंकित की गई है। यथा -

सूरज के आने तक : बाजीतपुर, बेनसागर (पृ.6), सासाराम (पृ.10), मुर्शिदाबाद , बिहार शरीफ, अलीगढ़ (पृ.11), कैमूर की पहाड़ियाँ (पृ.20), दुर्गापुर, बोकारो, भिलाई, हीराकुंड (पृ.24), इंग्लैंड, फ्रांस (पृ.24), गढ़नोखा (पृ.81), दिल्ली, लंडन, अमरीका (पृ.87), भोजपुर (पृ.98), संझोली (पृ.146), गौलक्षनी (पृ.147), उदयपुर (पृ.162)।

नदी नहीं मुड़ती : अजमेर (पृ.6), माउंट आबू (पृ.10), दरभंगा जिला (पृ.14), सीतामढ़ी (पृ.14), जनकपुर (पृ.50), कलकत्ता (पृ.53), कामेश्वर भवन (पृ.69), सुन्दर पुर (पृ.70), जगदीश पुर गाँव-बिहार भोजपुर जिले (पृ.73), मुजफ्फरपुर, पटना, बरौनी, कलकत्ता, दिल्ली (पृ.184)।

एक और अहल्या : झांसी (पृ.71), सुखवन्त नगर (पृ.169), तिरूपति (पृ.245) ।

लक्ष्मण-रेखा : नैनीताल (पृ.18), चाईना पीक (पृ.29), रानी खेत, भीमताल, अल्मोड़ा, इंगलैंड, कनाड़ा (पृ.109), नैनीताल का डाक बंगला (पृ.83)।

बंधक आत्माएँ: मुजफ्फरपुर (पृ.9), बिहार के सीवान जिले का गंगपुर, सिसवन गाँव (पृ.13), बिहार का घोर जंगली इलाका - पलामू (पृ.26), बुन्देलखंड (पृ.74)।

प्रथम पुरुष : नन्दग्राम (पृ.38), गोकुल (पृ.124), वृन्दावन (पृ.200), चांडील वन (पृ.222), भांडीर वन (पृ.347)।

पुरुषोत्तम : मथुरा (पृ.45), गिरिब्रज (आज का राजगृह), हस्तिनापुर, चेदि, अवन्तिका, काशी (पृ.50), कुंडिनपुर (पृ.78), द्वारावती (पृ.185), वारणावर्त (पृ.189), वाराणसी, मिथिला, कलिंग, कम्भोज, कर्नाटक, द्रविणप्रदेश, गुर्जर प्रदेश, मालवा, सिंध, पंचनद (पृ.195), प्राग्ज्योतिषपुर, उत्तराखण्ड (पृ.216)।

पवनपुत्र : साकेत (अयोध्या) (पृ.29), पुष्पवाटिका (पृ.42), ऋष्यमूक शिखर (पृ.47), हनुमानगढ़ी (पृ.226), लखनऊ, फैजाबाद (पृ.229), अलीगंज (पृ.233), लखनऊ की मंडी सआदतगंज (पृ.233), सासाराम (पृ.234), बिहार (पृ.234), वैष्णवदेवी (पृ.240), घाटा मेहंदीपुर-राजस्थान (पृ.248), सालासार (पृ.249), भुवनेश्वर (पृ.250), मुम्बई (पृ.252), द्वारभंग (दरभंगा) (पृ.253), अमरकंटक, अमरावती (पृ.327), द्वारिकावती (पृ.357)।

पीतांबरा : मेड़ता (पृ.17), मंदराचल पर्वत (पृ.18), जोधपुर (पृ.21), मेड़ता का कोसाना ग्राम (पृ.29), कुड़की, बाजोली (पृ.32), रामेश्वर, पुरी, द्वारिका, बद्रिकाश्रम (पृ.65), चित्तौड़गढ़ (पृ.232), मलयगिरि (पृ.272), वाराणसी (पृ.500), वृन्दावन (पृ.505), मथुरा, द्वारिका (पृ.608), गोकुल, नन्दगाँव, गोवर्द्धन, बरसाना

(बृहत्सानुपुर) (पृ.609)।

पहला सूरज : अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा (पृ.41), हिमाचल (पृ.84), तुलजापुर (पृ.101), पूना (पृ.143), बंगलौर (पृ.153), प्रतापगढ़ (पृ.189), पंढरपुर (पृ.191), जबाली (पृ.206), पन्हाला (पृ.231), चाकन का किला (पृ.243), सूरतनगर (पृ.249), काबुल (पृ.288)।

का के लागूं पांव : पंचनद प्रदेश (पृ.13), कुरुक्षेत्र, दिल्ली, आगरा, इटावा, कानपुर, प्रयाग, वाराणसी (पृ.15), बंगप्रदेश का ढाका (पृ.31), असम (पृ.36), गुवाहाटी (पृ.49), सदिया, डिब्रूगढ़, गोपाल, पाड़ा, धुबड़ी (पृ.50), लखनऊ (पृ.318), लखनौर (पृ.347)।

गोबिन्द गाथा : ईरान, ताशकंद, गजनी, काबुल (पृ.11), तिब्बत, लंका, अफगानिस्तान (पृ.12), जसवाल, गढ़वाल, गुलेर, नादोन, मंडी, सकेत, चम्बा, कहलूर (पृ.18), करतारपुर, गोयंदवाल, तरनतारन, अमृतसर, आनन्दपुर (पृ.54), श्रीनगर (गढ़वाल) (पृ.65), विलासपुर (पृ.69), पांवटा (पृ.78), गोलकुंडा (पृ.103), सधौरा, रायपुर (पृ.133), चमकौर (पृ.276), कच्ची गढ़ी (पृ.277), लिखनसर (पृ.312)।

शान्तिदूत : अफ्रीका के नेटाल प्रदेश की राजधानी मेरित्सबर्ग (पृ.7), गुजरात, तमिलनाडु, आंध्र (पृ.83), राजकोट, पोरबंदर (पृ.92), काठियावाड़ का वीरमगाँव (पृ.93), हरिद्वार (पृ.96), बिहार का चम्पारण जिला (पृ.102), अमहदाबाद, खेड़ा (पृ.112)।

डॉ. मिश्र के उपन्यासों में वर्णित विविध विधि-विधान एवं पूजा-सामग्री

डॉ. भगवतीशरण मिश्र हिन्दू धर्म में पूर्ण आस्था रखते हैं। हिन्दू धर्म की विभिन्न परिभाषाओं का विवेचन करते हुए डॉ गोविन्द त्रिगुणायत ने हिन्दू धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी है कि - "हिन्दू धर्म का अभिधान भारत में प्रचलित उस विचारधारा को दिया जाता है जिसमें वेद, वर्ण-व्यवस्था, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, पुरोहितवाद, आस्तिकता, गो-ब्राह्मण आदि में विश्वास, स्मृत्याचारों का पालन, पौराणिक तथ्यों में विश्वास आदि को विशेष महत्व दिया जाता है।"[253] इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दू धर्म एक जीवन-दर्शन है, केवल साम्प्रदायिक पूजा पद्धति का निर्देशक नहीं। डॉ. मिश्र ने हिन्दू धर्म को इसी व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है साथ ही वे हिन्दू धर्म में व्याप्त जादि-वाद के विरोधी हैं। यह तो हम अनेक

बार बता चुके हैं कि डॉ. मिश्र संस्कृत के विद्वान हैं। उन्होंने संस्कृत के विभिन्न ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया है। अतः उनके उपन्यासों में यह प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। उनके उपन्यासों में विभिन्न तीर्थ स्थानों, मंदिरों, देवी-देवताओं का वर्णन तो मिलता ही है साथ ही अनेक विधि-विधान, मंत्र, देवी-देवताओं की स्तुति तथा पूजन सामग्री का चित्रण भी प्राप्त होता है। उदाहरणतया 'पहला सूरज' उपन्यास में शिवाजी के अभिषेक-चित्रण मिलता है तो 'पीतांबरा' उपन्यास में षष्ठी पूजा, नामकरण संस्कार, अन्न प्राशन्न, यज्ञोपवीत संस्कार, षोडषोपचार आदि विधि का भी वर्णन किया गया है। इसी उपन्यास में पूंगी फल, आम्र-पल्लव, हल्दी, दूर्वा, कदली-स्तंभ, जावा-कुसुम, गंध, असगंध, सुगंध, रोली, अक्षत, चन्दन, अबीर, गुलाल, दूध, दही, मधु, मखाना, कलश, धूप, दीप, नैवेद्य-गंगा, यमुना, गोमती, नर्मदा, गोदावरी नदियों का जल - चार तीर्थ रामेश्वर, पुरी, द्वारिका, बद्रिकाश्रम की पवित्र मिट्टी, कर्पूर, आरती, पुष्प, अक्षत आदि पूजन-सामग्रियों का भी विवरण मिलता है। इस प्रकार डॉ. मिश्र के उपन्यासों में देवी-देवताओं की स्तुति, मंत्र, विधि-विधान आदि का आलेखन हमें उपलब्ध होता है। स्तुति-मन्त्रों आदि की चर्चा हम अपने अगले अध्याय 'उद्धरण' के अंतर्गत करेंगे।

विभिन्न मंदिरों के नाम

डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने स्थलों की चर्चा करते हुए विभिन्न देवी-देवताओं के मन्दिरों का उल्लेख ही नहीं किया है अपितु उपन्यास में कई स्थानों पर मंदिर-निर्माण की कहानी बताना भी नहीं चुके हैं। ऐसा लगता है कि लेखक देवी-देवताओं की चर्चा में रम गए हैं, यह स्वाभाविक भी है। क्योंकि लेखक स्वयं देवी-देवताओं में आस्था रखते हैं। अतः उनके कतृत्व में उनके विचारों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। यहाँ पर उनके उपन्यासों में आए हुए कुछेक मन्दिर एवं तीर्थों का उल्लेख किया जा रहा है। कोष्ठक में पृष्ठ संख्या बताई गई है। यथा-

सूरज के आने तक : गौलक्षणी का महादेव मंदिर ((पृ.75), ताराचंडी का मंदिर(पृ.79), दशाश्वमेघ (पृ.107), चरण मणिकर्णिका घाट (पृ.137), भूतेश्वर भगवान विश्वनाथ का मन्दिर (पृ.108),

नदी नहीं मुड़ती : आरा शहर का आरण्य देवी का मन्दिर (पृ.137), सौराठ का महादेव मंदिर (पृ.149), कामेश्वर भवन (पृ.156), नरगौना पेलेस के बीच हनुमान का मन्दिर (पृ.156)।

लक्ष्मण-रेखा : नैना देवी का मन्दिर (पृ.112), हैड़ाखान का प्रसिद्ध मन्दिर (पृ.112), मुजफ्फरपुर में गरीबनाथ का शिव मन्दिर (पृ.131), रमना का दुर्गास्थान (पृ.131)।

पवनपुत्र : निकुम्भिला मन्दिर (पृ.180), कन्याकुमारी की कुमारिका देवी (पृ.241), पूर्वांचल की कामाख्या देवी (पृ.241), गन्धमादन पर्वत पर हनुमत्कुंड (पृ.242), मणिपुर का महाबलि आश्रम (पृ.243), जम्मू की वैष्णोदेवी (पृ.244), ओंकारेश्वर तीर्थ (पृ.244), राजस्थान का नाथ मन्दिर (पृ.249),सिद्ध हनुमान, उड़ता हनुमान (पृ.250), भुवनेश्वर के लिंगराज (पृ.250), महालक्ष्मी मंदिर, अलबेला हनुमान, पूना का पार्वती मन्दिर, गणेश का मन्दिर, डोल्या, सोन्या मारूति (पृ.253), कनक मन्दिर (पृ.258), नागेश्वर मन्दिर (पृ.288)।

का के लागूं पांव : काशी का कालभैरव मन्दिर, संकटमोचन मंदिर (पृ.283), काशी का गोपाल मंदिर, दुर्गाकुंड (पृ.300), तुलसीघाट, कबीरचौरा (पृ.301), अयोध्या की हनुमानगढ़ी (पृ.302), अलीगंज का हनुमान मंदिर (पृ.318)।

इसके अलावा लेखक ने अपने उपन्यासों में वाराणसी की गंगा, अयोध्या की सरयू, गोकुल की कालिन्दी, असम की ब्रह्मपुत्र, आनन्दपुर की सतलज आदि अनेक नदियों के सुन्दरतम चित्र प्रस्तुत किये हैं।

देवी-देवताओं अथवा परमेश्वर के विविध नाम :

डॉ. मिश्र ने अपने उपन्यासों में देवी-देवताओं के विविध एवं प्रचलित नामों का प्रयोग किया है। नामों के पुनरावर्तन को टाला गया है। कोष्ठक में पृष्ठ संख्या दर्शायी गई है। यथा-

सूरज के आने तक : कंस विदारक, राधा वल्लभ, कालीय नाशक, कृष्ण (पृ.12), लीलाधर, हनुमान, गिरिधारी (पृ.15), बांके बिहारी (पृ.19), जगज्जननी, भुवनमोहिनी, कृष्णवल्लभा, कृष्णप्रिया (पृ.31),राम, राधा-कृष्ण, काली, गणेश, मुरलीधारी (पृ.48), नन्द नन्दन, मन-मोहक, गीतागायक कन्हैया (पृ.56), श्याम सलौने (पृ.60), गोपाल (पृ.64), मुरारी (पृ.64), अंजनीनंदन, पवनसुत, बजरंगबली, पवन-तनय (पृ.77), पवनकुमार (पृ.86), ईश्वर (पृ.88), भगवान (पृ.92), गोवर्द्धनधारी (पृ.95), नटवर-नागर (पृ.124), बनवासी राम (पृ.118), औघड़दानी, पशुपति, आशुतोष (पृ.111), पार्वती, चन्द्रशेखर, गंगाधर (पृ.113), भूतभावन भगवान विश्वनाथ (पृ.107), बजरंगबली (पृ.109), सदाशिव (पृ.108), शिव, दुर्गा, लक्ष्मी (पृ.150)।

नदी नहीं मुड़ती : नरसिंह, गणेश, शिव, काली, दुर्गा (पृ.136)।

एक और अहल्या : विष्णु (पृ.27), बुद्ध, अल्लाह, क्राइस्ट (पृ.28)।

बंधक आत्माएँ : विंध्यवासिनी, कांगडा देवी, चिन्त्यपूर्णी, श्यामा, राधा, सीता, पार्वती, लक्ष्मी (पृ.131)।

प्रथम पुरुष : गोपाल, नन्दलाल (पृ.39), श्मशान-देवी शिव (पृ.56), परब्रह्म, परमेश्वर (पृ.79), चित्तचोर (पृ.102), श्याम (पृ.125), त्रिभुवन सुन्दर (पृ.126), राधेश्याम (पृ.201), प्राण-वल्लभ (पृ.231)।

पुरुषोत्तम : माखनचोर (पृ.132), औंकालेश्वर (पृ.110), द्वारिकापति, योगेश्वर (पृ.118), पीताम्बरधारी (पृ.120), द्वारिकाधीश (पृ.121), विघ्नराज, विनायक (पृ.219), चराचरपति (पृ.238), मधूसूदन (पृ.268), जनार्दन (पृ.282), मोक्षप्रदाता (पृ.285), त्रैलोक्यपति, त्रैलोकाधीश्वर (पृ.290), जगदीश्वर (पृ.299), गुणाकेश (पृ.330), जग-पालक (पृ.347), वासुदेव (पृ.349), ऋषीकेश (पृ.361), महेश्वर (पृ.373), भूतेश (पृ.375)।

पवनपुत्र : मारूति (पृ.21), भास्कर, प्रकाश-प्रदाता आदित्य (पृ.22), अंशुमाली (पृ.23), त्रिभुवनपति पशुपति (पृ.28), सविता (पृ.29), देवाधिदेव महादेव, शंकर सुवन (पृ.30), ब्रह्मांडपति (पृ.37), त्रिपुरारि (पृ.56), मातेश्वरी (पृ.136), भगवती (पृ.137), अनन्त ब्रह्मांडपति परात्पर ब्रह्म (पृ.150), अखिल भुवनरंजक श्रीराम (पृ.155), सीतापति (पृ.159), पवनात्मज (पृ.159), अशरण-शरण श्रीराम (पृ.170), पातालेश्वरी भगवती चामुंडा (पृ.193), निखिल ब्रह्मांडाधीश्वर (पृ.194), मर्यादा पुरुषोत्तम (पृ.205), बजरंगबली (पृ.235), तिरुपति (पृ.241), भगवान वेंकटेश्वर (पृ.242), विघ्न-विनाशक गणपति (पृ.243), जानकी अम्बा, शिव-प्रिया पार्वती, काली, नटराज भगवान शिव (पृ.244), भीमा-शंकर (पृ.245),, भगवान जगन्नाथ (पृ.250), त्रिपुरारि (पृ.309), विरूपाक्ष विद्युन्माली (पृ.342)।

पीतांबरा : जनार्दन, मोरपिच्छधारी (पृ.20), जटाजूटधारी, धनुर्धारी राम (पृ.130), नरसिंह, वामन (पृ.130), गिरिधर नागर (पृ.160), जगन्नियन्ता (पृ.177), जगत्पति (पृ.282), त्रैलोक्यपति (पृ.362), भवानी (पृ.356), गोविन्द (पृ.611)।

पहला सूरज : शिवशंकर, जगदम्बा, तुलजा (पृ.11), जगद्धात्री (पृ.12), आदि शक्ति, महिषासुर मर्दिनी, ब्रह्मा (पृ.16), कामारि (पृ.34), लीलाधर (पृ.92), भोलेनाथ, मायापति (पृ.93), शिवा (पृ.115), नीलकंठ, दिगंबर शिव, ईश, महेश,

सच्चिदानन्द, परब्रह्म परमेश्वर (पृ.141), जगदीश्वरी, जगदीश्वर (पृ.226), म्लेच्छमर्दिनी (पृ.236), विश्व नियन्ता (पृ.347)।

का के लागूं पांव : यशोदा नन्दन (पृ.222), काशी का कोतवाल (पृ.283)।

गोबिन्द गाथा : अकाल, अनादि, अविनश्वर, अनंत शक्ति (पृ.90), अकाल पुरुष (पृ.132)।

पेड़-पौधों के नाम

सूरज के आने तक : कुश (पृ.108)।

नदी नहीं मुड़ती : आम, बरगद, पुदीना, तिलकोड़ (पृ.14), कदली-पपीता (पृ.15), नारियल (पृ.57), चन्दन, पलाश, जामून (पृ.159)।

एक और अहल्या : बबूल (पृ.7), युकलिपटस (पृ.153)।

लक्ष्मण-रेखा : कुकुरमुत्ता (पृ.117), अश्वत्थ (पृ.177), तुलसी (पृ.178), शाल, शीशम (पृ.195)।

प्रथम-पुरुष : वट-वृक्ष (पृ.195), तमाल (पृ.153), नीम, महुआ, पलाश, पीपल (पृ.169), ताल-तमाल (पृ.173), बिल्व वृक्ष (पृ.183), ताम्र वृक्ष (पृ.184), करील (पृ.191), कुष्मांड का पेड़ (पृ.265), यमलार्जुन (पृ.83)।

पुरुषोत्तम : हरसिंगार (पृ.147), कनक (धतूरा) - (पृ.215)

पवनपुत्र : कुटज (पृ.9), अशोक, करवोर, नागकेसर, वकुल, भंडीर, छितवन, शीशम, अर्जुन, हिंताल, तिलक, सेमल, चन्दन (पृ.45)।

पीतांबरा : पनस (पृ.21), दाड़िम वृक्ष (पृ.65), कदम्ब (पृ.75), वृन्दा (पृ.113), लवंग-लता (पृ.208), तन्वंगी (पृ.229)।

देख कबीरा रोया : नीम (पृ.23), बोधि वृक्ष (पृ.230)।

का के लागूं पांव : नारिकेल वृक्ष (पृ.31), सुपारी के वृक्ष (पृ.49), ताड़ (पृ.129), अरंड का पेड़ (पृ.449)।

पुष्पों के नाम

सूरज के आने तक : अमलतास (पृ.20), मोगरा (पृ.47), पाटल पुष्प (पृ.70)।

प्रथम पुरुष : कमल (पृ.41), सेमल के फूल (पृ.43), गुलाब (पृ.49), कदम्ब पुष्प (पृ.144)।

पुरुषोत्तम : हरसिंगार(पृ. 147), कमल (पृ.122), पारिजात पुष्प (पृ.199), पलाश के फूल (पृ.219)।

पवनपुत्र : मालती, मल्लिा, माधवी (पृ.45)।

पीताम्बरा : पद्म पुष्प (पृ.24), हरसिंगार (पृ.61), जावा कुसुम (पृ.65), काश-जवास के फूल (पृ.202), तनोबा (पृ.307)।

पहला सूरज : अड़हुल के फूल (पृ.327)।

खाद्य-सामग्री में उपयोगी फल-कंदमूल एवं अन्य चीजों के नाम

ऊपर हम कुछेक फूलों का उल्लेख कर चुके हैं। यहाँ हम डॉ. मिश्र के उपन्यासों में मिलनेवाले कुछेक फल-कंदमूल और खाद्य-सामग्री में उपयोगी चीजों का उल्लेख कर रहे हैं। यथा-

सूरज के आने तक : प्याज (पृ. 23), लौंग (पृ. 24), तरबूज (पृ. 93)।

नदी नहीं मुड़ती : मूंगफली (पृ. 11)।

एक और अहल्या : दाड़िम (पृ. 23), सरसों (पृ. 129), आंवला (पृ. 171), कस्तूरी (पृ. 233), बदरी फल (पृ. 243)।

पीतांबरा : लवण (पृ. 49), मिश्री, मक्खन (पृ. 50), पूंगी फल (पृ. 65), हल्दी (पृ. 65), केशर (पृ. 178), नारियल (पृ. 272)।

डॉ. मिश्र के उपन्यासों में खाने के विविध पकवानों के नाम भी मिलते हैं। जिनमें से कुछेक का हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं। यथा-

सूरज के आने तक : खीर पुड़ी (पृ. 10), मालपुए, गुरगुजिये (पृ. 78), मठिया (पृ. 150)।

एक और अहल्या : जलेबी (पृ. 63), बेगन के चोखे, सत्तू भीरी लिट्टी (पृ. 63), बताशा (पृ. 77), दाल-भात (पृ. 161), खोचे की बेलगरामी (पृ. 160), सेव-दालमोठ(पृ. 239)।

बंधक आत्माएँ : खिचड़ी, आलू का भुर्ता अथवा चोबा (पृ. 51), चूरा दहीं अथवा हलुआ (पृ. 61), लड्डू, मेवा (पृ. 50), पुआ-पूरी (पृ. 248)।

का के लागूं पांव : मालपुआ, हलवा (पृ. 55), रसगुल्ला (पृ. 71)।

लड़ाई अथवा युद्ध में उपयोगी साधन-सामग्री

डॉ. मिश्र के सामाजिक, ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यासों में युद्ध विषयक

सामग्रियाँ भी आधुनिक, मध्यकालीन और पौराणिक परिवेश के अनुसार उपलब्ध होती है। जैसे सामाजिक उपन्यासों में जहाँ गाँव के पात्रों में दो जातियों के बीच की छोटी-मोटी लड़ाई होती है वहाँ पर उसी परिवेश के अनुसार साधन-सामग्री का उपयोग होता है। अंग्रेजकालीन समय में पिस्टल, मशीनगन, बम, दारूगोला आदि का उपयोग बताया गया है। नीचे हम डॉ. मिश्रजी के कुछेक उपन्यासों में से कुछ ऐसे ही शब्दों का उल्लेख कर रहे हैं। यथा -

सूरज के आने तक : भाले-गंडासे, लाठी (पृ. 6), एटम बम (पृ. 10)।

प्रथम पुरुष : खड्ग, खप्पर, पाश, परीघ, परशु, तलवार (पृ. 43), धनुष (पृ. 138), गदा (पृ. 144), लकुटी (पृ. 151), खंजर (पृ. 164), मृदुगल (पृ. 144), शर (पृ. 228)।

पुरुषोत्तम : शारंग धनुष, स्यन्दन (पृ. 46), प्रष्ठ पाश, भल्ल, परिघ (पृ. 48), त्रिशूल, मुद्गर, पाश, तलवार, तोमर, पट्टिश, बाण, नराच (पृ. 96)।

देख कबीरा रोया : लाठी, भाले, भुजाली, तीर, गंडासे (पृ. 147), शमशीर (पृ. 149), बल्लम, कटार (पृ. 341)।

गोबिन्द गाथा : नगाड़ा (पृ. 18), सेहली (भुजाली) (पृ. 31)।

इसके अलावा डॉ. मिश्र के उपन्यासों मे उस्तरा, मथानी, बाँसुरी, लोहे की बड़ी बंसी (मछली फँसाने का औजार), कुल्हाड़ी, करघा आदि चीज-वस्तुओं का उल्लेख भी मिलता है।

विविध पक्षियों के नाम

सूरज के आने तक : कौंच (पृ. 72)

एक और अहल्या : सुग्गा (पृ. 171), सुरसा (पृ. 172)

प्रथम पुरुष : गृद्ध, सुखौद्य (पृ. 19), कपोती (पृ. 21), मयूर (पृ. 100), बक (पृ. 119), पीक, चक्रवाक, कल हंस (पृ. 164), कारण्डव, सारस, हंस (पृ. 168), कपोत, कोयल (पृ. 265), पपीहा (पृ. 323)।

पुरुषोत्तम : द्विरेफ भ्रमर (पृ. 21), काक (पृ. 28), पतंगा (पृ. 49), बगुला (पृ. 195)।

पवनपुत्र : चील (पृ. 11), जलकुक्कुट, बक (पृ. 44), कौआ (पृ. 97)।

पीतांबरा : सुग्गा (पृ. 37), दादुर, मोर, पपीहा (पृ. 228)।

पहला सूरज : मैना तोता (पृ. 124)।

का के लागूं पांव : मयूर (पृ. 38)।

विभिन्न प्राणियों एवं अन्य जीवों के नाम

सूरज के आने तक : बाघ, भालु (पृ. 79), हाथी (पृ. 80), भेड़िया, मेमने (पृ. 128)।

एक और अहल्या : मछली (पृ. 25), गर्दभ (पृ. 154), सर्प (पृ. 154), श्रृगाल (पृ. 44)।

लक्ष्मण-रेखा : शेर, चीते, चित्तल, वनविलाव, शुतुर्मुग (पृ. 30), तीतर (पृ. 45), खरगोश (पृ. 45), मृग, मृगशावक, सिंह, व्याघ्र (पृ. 159), वृक-भेड़िया (पृ. 163)।

प्रथम पुरुष : मगरमच्छ (पृ. 16), वृषभ (पृ. 30), गजराज, अजगर(पृ. 33), तक्षक नाग (पृ. 34), व्याघ्रा (पृ. 35), बंदरी (पृ. 36), हिरण-शावक (पृ. 41), जलकुम्भी (पृ. 41), साँप (पृ. 51), भ्रमरी, नागिन, हथिनी, चींटी (पृ. 52), नाग (पृ. 58), मधुमक्खी, जौंक (पृ. 60), गज-शावक (पृ. 63), अश्व, टट्टू (पृ. 64), मूषक (पृ. 68), चमगादड़ (पृ. 71), केसरी (पृ. 75), गौएं (पृ. 78), कपि (पृ. 120), बन्दर (पृ. 135), वानरी (पृ. 135), शशक-शावक (पृ. 183), विच्छू, शाखामृग (पृ 205), शार्दूल (पृ. 227), हिरण, चित्तल (पृ. 240) बधूटियाँ (पृ. 257), उस्ट्र-ऊँट (पृ. 257), विषधर (पृ. 265), सर्प (पृ. 318), बकरा (पृ. 322), कालिय नाग (पृ. 334)।

पुरुषोत्तम : सिंहनी (पृ. 17), सर्पिणी (पृ. 18), बछड़ा, गाय, वृषभ (पृ. 19), व्याल (पृ. 21), मीन (पृ. 38), बिलाड़ (पृ. 59), हस्ती (पृ. 72), सिंहिका-सुत (पृ. 81), श्वान (पृ. 86), भल्लूक (पृ. 165), रींछराज (पृ. 169), भुजंग (पृ. 197), मत्स्य, केसरी (पृ. 254), करी (पृ. 444), मक्खी, मच्छर (पृ. 448)।

पवनपुत्र : कूर्म (पृ. 44), महिष (पृ. 63), विषधर व्याल (पृ. 107), डायनोसोर (पृ. 102), भैंस, बकरी, भालु (पृ. 147), सिंहिका (पृ. 148), स्यारिन (पृ. 126), रींछ (पृ. 149), गिलहरी (पृ. 156), अज-अजा (पृ. 173)।

पीतांबरा : शेर-शावर, गज-युथप (पृ. 22), घोड़ी (पृ. 59), गो-वत्स (पृ. 76), व्याघ्रिणी (पृ. 388), कच्छप (पृ. 393), मार्जार (पृ. 512)।

पहला सूरज : छागल-बकरी (पृ. 79), गधा (पृ. 177), गीदड़ (पृ. 235)।

देख कबीरा रोया : श्वान (पृ. 29), कीड़े-मकोड़े (पृ. 173)।

का के लागूं पांव : शूकर (पृ. 298), बनगाय, रोझ (पृ. 439)।

कला एवं संगीत से सम्बन्धित शब्द

नदी नहीं मुड़ती : हारमुनियम (पृ. 25), मधुबनी पेंटिंग्स (पृ. 14), अल्पना (पृ. 14)।

एक और अहल्या : नृत्यकला, कत्थक, भरतनाट्यम, पॉप (पृ. 93)।

पीतांबरा : नगाड़ा, दुंदुभी, गोमुख, मृदंग, झाल, मंजीरा (पृ. 206)।

पुरुषोत्तम : तालचित्र (पृ. 46), भैरव तांडव (पृ. 438)।

प्रथम-पुरुष : भैरवी अथवा सारंग राग (पृ. 323)।

लक्ष्मण-रेखा : छायाचित्र (पृ. 109)।

पर्यावरण से सम्बन्धित शब्द

डॉ. मिश्र ने पर्यावरण की समस्या को ध्यान में रखकर ही 'लक्ष्मण-रेखा' नामक उपन्यास लिखा है। अतः इस उपन्यास में पर्यावरण सम्बन्धी शब्द मिलना स्वाभाविक ही है। ऐसे शब्दों को हम नीचे संगृहीत कर रहे हैं। कोष्ठक में पृष्ठ संख्या अंकित है। यथा - पर्यावरणशास्त्री (पृ. 109), प्रदूषणशास्त्री (पृ. 163), प्रकंपित, प्रदूषित (पृ. 163), उपयोगिता ह्रास नियम - अर्थशास्त्र का नियम (पृ. 142), पर्यावरण, अरण्य-जंगल (पृ. 154), डायनामाइट, परजीवी (पृ. 158), वृक्ष-पक्षी (पृ. 159), प्राणवायु-ऑक्सीजन, विषाक्त गैस-कार्बन डाइऑक्साइड (पृ. 177), कारखाने की चिमनियाँ (पृ. 179), वनों का विनाश (पृ. 185), वृक्षों की अपूरणीय कटाई (पृ. 185), भूकंप, वृक्ष संतुलन, भूगर्भ (पृ. 185), चिपको आंदोलन (पृ. 186), प्रदूषण की समस्या (पृ. 190), वनों के ठेकेदार (पृ. 190), संरक्षक (पृ. 191), पर्यावरण संतुलन, प्रकृति (पृ. 192), वनों का कटाव (पृ. 194), सामाजिक वानिकी, खाद-पानी, जमीन, वृक्षारोपण (पृ. 195), वृक्ष संकुल, अभयारण्य (पृ. 196), वन विध्वंसक (पृ. 197), पर्यावरणीय प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, अंतरिक्ष प्रदूषण, नाईट्रोजन, परिवहन, ध्वनि विस्तारक यंत्र, जेट विमान, वायु मंडल, श्रवण शक्ति, अणु, परमाणु बम, परीक्षण, ओजोन, रासायणिक खाद, कीटनाशक दवा (पृ. 202), भू-क्षरण, भूमि की उर्वरा शक्ति, बाढ़ की समस्या, वर्षा जल, वन्य जंतु (पृ. 203), पर्यावरण प्रेमी, पर्यावरण सम्मेलन (पृ. 206) आदि-आदि।

शैक्षणिक क्षेत्र से सम्बन्धित शब्द

लक्ष्मण-रेखा : कॉलेज, सेमिनार (पृ. 164), कॉमन-रूम (पृ. 129), पाठ्यक्रम (पृ. 154), शोध-अन्वेषण (पृ. 155), फीस (पृ. 101), जे.एन.यू. (पृ. 84), हॉस्टल (पृ. 118), रूममेट (पृ. 119), कॉमन रूम (पृ. 129), दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (पृ. 201)।

सूरज के आने तक : क्लास, एम.ए. (पृ. 20), आनर्स (पृ. 21)।

नदी नहीं मुड़ती : स्टड़ी रूम (पृ. 122), स्टड़ी टेबल (पृ. 123), डिस्टिंक्शन (पृ. 133), युनिवर्सिटी कम्पाउंड (पृ. 156), वाइस चान्सलर (पृ. 161), डि.लिट् (पृ. 163), लाइब्रेरी (पृ. 163),

एक और अहल्या : पुअर स्टूडेंटस (पृ. 14), कोर्स (पृ. 14), जी.के.-जेनरल नॉलेज (पृ. 119), कापी (पृ. 176), ब्लेकबोर्ड (पृ. 177), परीक्षा-विभाग (पृ. 176)।

विज्ञान एवं टेकनोलॉजी तथा रोग, दवा औषधियों से सम्बन्धित शब्द

सूरज के आने तक : डाबर की जूड़ी-ताप (पृ. 148)।

एक और अहल्या : आस्प्रिन, कोरामिन - गोलियों के नाम (पृ. 83), धमनी (पृ. 7), पिस्टल (पृ. 19), पोस्टमोर्टम (पृ. 205), हार्ट-एटैक (पृ. 206), एड्स (पृ. 206), रक्तातिसार (पृ. 207), रक्तचाप - ब्लड़ प्रेशर, पक्षाघात (पृ. 217)।

लक्ष्मण-रेखा : चाईना - 30 - गोली का नाम (पृ. 100), एलोक्ट्रोनिक्स (पृ. 83), कैमरे, टू-इन-वन, ओटोमेटिक घड़ियाँ (पृ. 83), बम, डायनामाईट (पृ. 158), पारासाइट (पृ. 159), टेक्सी, हवाई जहाज (पृ. 179)।

बंधक आत्माएँ : अणु - एटम, इलैक्ट्रोन, न्यूट्रोन, प्रोटोन, एनर्जी, फिंगर - प्रिन्टस (पृ. 111)

पीतांबरा : आसव और अवलेह का आयुर्वेदिक लेप (पृ. 434)

पुरुषोत्तम : गुरुत्वाकर्षण केन्द्र (पृ. 15), अणु-परमाणु (पृ. 237)।

पहला सूरज : डिसैंट्री, डायरिया, कालरा, फर्टिलाइजर (पृ. 64)।

शान्तिदूत : पेट की कब्ज़, कुनैन (पृ. 11), मलहम, कॉलेरा (पृ. 112), बायस्कोप (पृ. 18), मशीनगन (पृ. 123)।

इसके अतिरिक्त ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित कुछ शब्द मिलते हैं। जैसे -

जीवनरेखा, हृदय-रेखा, भाग्यरेखा, मस्तिष्करेखा, ग्रह-गणना, जन्मकालीन ग्रह, शुभ मुहूर्त आदि-आदि। व्यावसायिक शब्दों का हम अलग से उल्लेख नहीं कर रहे हैं क्योंकि अनूदित तथा अंग्रेजी शब्दों के अन्तर्गत उनका उल्लेख हो ही चुका है।

निष्कर्ष

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्षों तक सहजतया पहुँच सकते हैं।

(01) डॉ. मिश्र के उपन्यासों में यद्यपि तत्सम, तद्‌भव, देशज आदि सभी प्रकार के शब्द मिलते हैं परन्तु उसमें प्राचुर्य तत्सम शब्दों का है।

(02) डॉ. मिश्र के उपन्यासों में अरबी-फारसी या उर्दू शब्द, अंग्रेजी के शब्द, अंग्रेजी से हिन्दी में परिवर्तित शब्द, अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित शब्द, पंजाबी शब्द, बंगाली शब्द, भोजपुरी शब्द, राजस्थानी शब्द, अवधी शब्द, मैथिली शब्द, गुजराती शब्द आदि विभिन्न भारती भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं।

(03) मिश्रजी के उपन्यासों में ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं जो अंग्रेजी के कारण हिन्दी में अनूदित होकर आए हैं। यथा - परियोजना (प्रोजेक्ट), प्रौढ़ शिक्षा शिविर (एडल्ट ऐज्यूकेशन कैम्प) आदि-आदि।

(04) डॉ. मिश्र के उपन्यासों में वर्ण-मैत्री के शब्दों के कारण ध्वन्यात्मक चमत्कार की सृष्टि हुई है। उनके उपन्यासों में अनेक ध्वन्यात्मक, दृश्यात्मक शब्द भी उपलब्ध होते हैं।

(05) हमने यहाँ डॉ. मिश्र के उपन्यासों में कुछ विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं को , नामधातु क्रियाओं को तथा क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों को भी लिया है। कुछ विशिष्ट प्रकार की भाववाचक संज्ञाओं, ध्वनि पुनरावर्तनवाले शब्द तथा युग्म शब्दों को भी सूचीस्थ किया है।

(06) डॉ. मिश्र के उपन्यासों मे नए रूपक, नए विशेषण, विशेषण पदबंध, नए उपमान आदि पाए जाते हैं। जिसके कारण उनके औपन्यासिक गद्य में काव्य का-सा आनंद प्राप्त होता है।

(07) इसके इतिरिक्त यहाँ हमने डॉ. मिश्र के उपन्यासों में पाए जाने वाले कुछ

विशिष्ट शब्दों को भी रेखांकित किया है तथा आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए जो शब्द मिलते हैं उनका उल्लेख भी किया है।

(08) प्रकीर्ण शीर्षक के अन्तर्गत हमने कुछ व्यक्तिवाचक नाम, विभिन्न स्थलों के नाम, पूजन-सामग्री, विभिन्न मंदिरों के नाम, देवी-देवताओं के नाम, पेड़-पौधों के नाम, पुष्पों के नाम, खाद्य-सामग्री में उपयोगी फल-कंदमूल एवं अन्य चीजों के नाम, लड़ाई या युद्ध में उपयोगी साधन-सामग्री के नाम, पक्षियों के नाम, विभिन्न प्राणियों और जीवों के नाम, कला एवं संगीत से सम्बन्धित शब्द, विज्ञान-टेकनोलॉजी-रोग-औषधियों से सम्बन्धित शब्द तथा कुछ ज्योतिषशास्त्र के शब्दों को भी रेखांकित किया है जिससे हमें डॉ. मिश्र की बहुज्ञता का परिचय होता है।

******

सन्दर्भानुक्रम

1. पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 11, 11, 17, 19, 19, 21, 22, 29,30,33, 33, 30, 40, 39, 40, 41, 41, 42, 47, 47, 48, 52, 54, 63, 66, 72, 100, 120, 128, 135, 139, 156, 156, 173, 190, 193, 194, 242, 260, 275, 278, 311, 342
2. प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 13, 13, 14, 15, 15, 15, 18, 28, 33, 44, 47, 61, 67, 72, 73, 78, 82, 82, 96, 103, 142, 174, 177, 182, 183, 186, 221, 258, 265, 298, 300, 308, 300, 358, 365, 355, 367
3. पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 13, 14, 15, 15, 17, 17, 18, 20, 21, 21, 22, 23, 23, 25, 23, 24, 26, 28, 30, 29, 33, 35, 36, 39, 44, 45, 46, 48, 48, 60, 62, 66, 69, 71, 115, 110, 133, 142, 152, 161, 152, 165, 167, 165, 182, 182; 185, 193, 201, 216, 221, 224, 226, 225, 234, 234, 242, 268, 360, 425, 416, 496
4. पीताम्बरा : पृ. सं. क्रमश : 17, 20, 21, 24, 27, 29, 39, 49, 52, 71, 78, 91, 93, 93, 100, 107, 126, 129, 131, 140, 137, 142 ,141, 148, 163, 167, 168, 202, 210, 239, 2 49, 275, 295, 312, 352, 397, 425, 528, 556, 549, 575, 608
5. सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 6, 6, 7, 9, 18, 27, 27, 28, 32, 35, 96
6. एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 3, 38, 51, 65, 193
7. नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 26, 33, 34, 137
8. बन्धक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमश : 33, 50, 75, 77, 163, 20
9. देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 11, 12, 27, 33, 36, 39, 54, 53, 56, 56, 56, 126, 63, 64, 70, 71, 96, 121, 123, 141, 124, 148, 147, 152, 161, 164, 175, 184, 196, 197, 267, 310, 310, 312, 315, 342, 344, 345, 345, 20, 46
10. गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 16, 203, 281, 38, 251, 87, 198,

203, 203, 203, 320, 313

11. का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 41, 41, 307

12. प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 17, 38, 76, 101, 107, 28, 13, 123, 227, 291, 374

13. पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 48, 73, 140, 147, 156, 171

14. पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 48, 63, 69, 91, 106, 122, 42

15. शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 104, 104, 106, 106, 105, 106, 109, 170

16. सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 28,29,33

17. बंधक आत्माएँ : पृ. 22

18. देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 317,339

19. हिन्दी में देशज शब्द : डॉ. पूर्णसिंह डबास : पृ. 79

20. सूरज के आने तक : : पृ. सं. क्रमश : 7, 8, 13, 9, 8, 8, 17, 27, 27, 28, 30, 13, 26, 27, 31, 41, 42, 109, 43, 44, 51, 45, 48, 76, 84, 102

21. नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 10, 34, 34, 50, 57, 74, 92, 109, 125

22. लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 17, 19, 57, 30, 182

23. पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 31, 104, 186, 173, 174, 178, 179, 189, 196, 205, 210, 211, 233, 241, 244, 247, 288, 312, 314

24. पीताम्बरा : पृ. सं. क्रमश : 44, 63, 140, 165, 176, 236, 295, 89, 552, 581

25. देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 15, 15, 25, 28, 40, 42, 44, 46, 50, 50, 54, 58, 66, 115, 129, 156, 166, 184, 184, 188, 223, 256, 289, 306, 337, 369, 344

26. का के लागूं बांव : पृ. सं. क्रमश : 54, 79, 98, 181, 90, 100, 131, 148, 329, 349

27. गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 10, 34, 126, 139, 281, 286

28. शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 8, 78, 92, 118, 129, 141, 41, 153, 42, 45, 123

29. पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 33, 125, 131, 132, 143, 147, 356, 153

30. प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 32, 54, 59, 64, 172, 146, 205, 214, 304

31. दृष्टव्य : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त सुगम इतिहास : डॉ. पारुकांत देसाई : पृ. 10

32. दृष्टव्य : हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. हृदयेश मिश्र तथा डॉ. शिवलोचन पांडेय : पृ. 38

33. दृष्टव्य : बिहारी का नया मूल्यांकन : डॉ. डॉ. बच्चन सिंह : दोहा संख्या -2

34. पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 11, 24, 39, 42, 44, 54, 99, 98, 103, 158, 164, 162, 163, 172, 172, 173, 174, 174, 174, 176, 177, 178, 179, 184, 186, 187, 212, 257, 257, 268, 278, 278, 278, 278, 279, 279, 280, 281, 282, 287, 286, 280, 290, 295, 297, 297, 302, 304, 304, 305

35. देख कबीरा रोयगा : पृ. सं. क्रमश : 11, 11, 11, 12, 12, 14, 14, 14, 16, 16, 17, 17, 21, 30, 37, 38, 38, 38, 40, 42, 49, 52, 57, 58, 66, 74, 76, 81, 82, 111, 123, 123, 143, 145, 145, 173, 188, 195, 200, 206, 209, 219, 257,258, 272, 277, 281, 282, 285, 289, 297, 297, 302, 302, 304, 305, 372, 386

36. का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 14, 27, 27, 15, 18, 27, 27, 23, 28, 30, 28, 23, 28, 24, 28, 38, 66, 39, 39, 74, 75, 40, 79, 46, 42, 42, 82, 43, 46, 48, 65, 97, 127, 127, 104, 115, 115, 128, 117, 128, 128, 156, 129, 157, 130, 147, 169, 171, 171, 180, 233, 266, 280, 330, 339, 337, 355, 357, 378, 446, 448, 448, 458, 459, 460, 458, 459, 469, 476

37. गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 9, 21, 42, 108, 64, 77, 107, 115, 115, 125, 131, 137, 141, 141, 142, 144, 144, 144, 144, 144, 144, 144, 145, 147, 151, 155, 155, 155, 155, 160, 162, 162, 163, 163, 163, 164, 164, 165, 165, 174, 190, 219, 222, 228, 228, 231, 244, 245, 245, 245, 248, 248,

258, 259, 293, 294,295, 294,296, 300, 300, 313, 314, 314, 322, 314, 316

38. शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 11, 12, 12, 12, 12, 13, 19, 19, 24, 24, 28, 33, 36, 37, 37, 37, 37, 39, 49, 52, 53, 67, 77, 92, 93, 100, 102,103, 103, 110, 125, 133, 136, 143, 154, 165, 176, 177, 177, 178, 189, 179

39. एक और अहल्या : : पृ. सं. क्रमश : 6, 9, 11, 17, 18, 18, 33, 38, 39, 45, 41, 43, 59, 73, 75, 77, 78, 85, 99, 107, 113, 121, 134, 134, 151, 160, 165, 181, 184, 172, 184, 186, 204, 215, 243, 246

40. नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 5, 7, 10, 13, 17, 19, 19, 24, 24, 36, 37, 38, 38, 38, 38, 45, 46, 47, 52, 64; 68, 75, 80, 81, 101, 107, 112, 130, 184, 144

41. सूरज के आने तक : : पृ. सं. क्रमश : 9, 12, 13, 15, 52, 16, 18, 20, 21, 23, 23, 24, 24, 25, 28, 29, 30, 31, 35, 67, 75, 78, 79, 79, 79, 79, 87, 88, 98, 99, 100, 104, 105, 128, 133, 133, 135, 141, 141, 141, 149, 150, 153, 155, 163, 166, 166, 165, 78, 83, 140, 152, 101, 14, 148, 24, 34, 30, 33, 54, 120, 76, 70, 83, 145, 114, 116, 133, 144, 149, 66, 77, 80, 68

42. वही : पृ. सं. क्रमश : 9, 9, 9, 9, 10, 10, 12, 15, 16, 17, 20, 20, 20, 21, 21, 21, 21, 25, 25, 25, 29, 33, 34, 34, 35, 35, 40, 43, 43, 45, 45, 55, 56, 59, 63, 65, 65, 66, 67, 67, 67, 67, 69, 69, 70, 72, 75, 76, 76, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 81, 81, 82, 84, 84, 84, 87, 87, 87, 88, 88, 88, 88, 90, 90, 90, 90, 90, 91, 91, 92,98,98, 99, 99, 101, 101, 102, 103, 103, 105, 107, 107, 107, 107, 108, 114, 119, 121, 123, 127, 129, 130, 131, 131, 131, 132, 133, 133, 133, 134, 134, 138, 142, 146, 146, 147, 147, 149, 151, 159, 162, 162, 162, 166, 100, 103

43. नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 6, 10, 13, 13, 25, 11, 13, 29, 38, 41, 41, 43, 50, 51, 54, 54, 54, 57, 59, 60, 63, 72, 77, 78, 78, 79, 79, 79, 79, 80, 79, 85, 89, 89, 89, 89, 89, 89, 89, 90, 90, 89, 90, 95, 96, 100, 103, 120, 108, 122, 122, 122, 122, 122, 122, 133, 145, 149, 158, 161, 163, 164, 164

44. एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 9, 14, 17, 18, 19, 19, 22, 22, 32, 37, 51, 52, 64, 80, 81, 88, 100, 100, 101, 102, 104, 119, 119, 119, 130, 130, 130, 130, 130, 133, 146, 153, 164, 165, 171, 175, 176, 177, 178, 198, 205, 214, 215, 218, 219, 221, 221, 222, 224, 224, 224, 235, 241, 242

45. लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 10, 14, 14, 15, 19, 24, 24, 24, 28, 29, 31, 36, 54, 100, 100, 100, 104, 104, 104, 104, 104, 104, 104, 105, 83, 85, 84, 86, 87, 88, 119, 121, 122, 122, 121, 142, 149, 149, 158, 159, 163, 167, 182, 197, 201, 201, 202, 202, 202, 112

46. बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमश : 14, 14, 16, 18, 18, 18, 18, 18, 19, 22, 24, 29, 37, 40, 46, 48, 65, 65, 65, 65, 68, 111, 114, 127, 133, 10, 10, 122, 133

47. पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 6, 6, 6, 9, 25, 26, 26, 28, 29, 29, 29, 29, 30, 30, 30, 30, 31, 31, 61, 62, 62, 63, 63, 63, 64, 64, 64, 64, 64, 64, 64, 64, 64, 65, 65, 65, 65, 66, 66, 68, 68, 69, 69, 71, 72, 105, 105, 107, 108, 109, 109, 109, 350, 350

48. शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 7, 7, 7, 8, 8, 8, 8, 8, 8, 8, 9, 9, 9, 10, 10, 10, 11, 11, 11, 11, 11, 12, 14, 17, 23, 27, 28, 29, 35, 29, 29, 30, 30, 30, 31, 38, 38, 39, 39, 39, 39, 39, 39, 39, 39, 42, 42, 43, 43, 44, 44, 46, 46, 46, 46, 50, 51, 53, 53, 53, 55, 60, 60, 69, 69, 76, 84, 90, 90, 109, 109, 109, 109, 116, 116, 118, 120, 123, 130, 139,

141, 147, 147, 169, 175, 176

49. सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 88, 88, 74, 76, 81, 98, 102, 144, 125, 88, 75, 76, 102, 102, 134
50. नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 11, 96, 115, 11, 91, 108, 131
51. एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 53, 99, 100, 130, 176, 99, 100, 177, 196, 223
52. शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 40, 83, 123, 38, 10, 32, 40, 46, 49, 118, 165, 165
53. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 25, 144, 34
54. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 29, 123, 121
55. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 19, 53, 177, 63, 176
56. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 24, 44, 44, 46, 48, 92, 22, 44, 57, 81, 164
57. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 18, 20, 32, 32, 32, 32, 32, 32, 32, 44, 56, 63, 63, 61, 192, 192, 257, 257, 349
58. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 11, 16, 132, 142, 30, 30, 30, 31, 31, 31, 38, 42, 56, 56, 57, 57, 87, 89, 93, 143, 152, 154, 156, 181, 181, 187, 187, 196, 196, 187, 196, 198, 198, 198, 200, 201, 202, 202, 203, 203, 203, 203, 241, 278, 297, 297, 297, 297, 297, 299, 307, 309, 309, 320, 321, 322
59. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 100, 100, 101, 101, 101, 101, 101, 101, 101, 101, 102, 102, 102, 103, 103, 103, 103, 103
60. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. 33
61. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. 53
62. दृष्टव्य : वही : पृ. 54
63. दृष्टव्य : वही : 104
64. दृष्टव्य : वही : 107

65. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 53, 56, 56, 64, 71, 164, 310, 220, 315, 31, 39, 53, 56, 65, 65, 63, 70, 76, 121, 124, 124, 147, 150, 157, 175, 185, 220, 267, 310, 312, 339, 361, 73, 342, 383

66. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 6, 8, 18, 27, 27, 27, 28, 29, 96, 25, 27, 27, 27, 27, 27, 27, 29, 66, 70, 66, 106

67. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमश : 20, 20, 23, 23, 24, 47, 48, 54, 89, 86, 89, 96, 125, 94, 97

68. दृष्टव्य : वही : पृ. सं. क्रमश : 20, 20, 23, 24, 40, 47, 47, 47, 48, 63, 64, 64, 93, 94, 94, 97, 130

69. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 342, 344, 344, 344, 344, 344, 344, 344, 345, 345, 345, 345, 345, 345, 345, 345, 345

70. वही : पृ. 342

71. वही : पृ. 344

72 वही : पृ. 345

73. पीतांबरा : पृ. 157

74. दृष्टव्य : वही : पृ. सं. क्रमश : 133, 151, 151, 151, 158, 158, 158, 158, 158, 158, 158, 159, 160, 160, 160, 160, 160, 160, 160, 161, 161, 161, 161, 161, 161, 161, 170, 170, 173, 173, 173, 173, 173, 181, 181, 181, 181, 181, 181, 181, 182, 182, 185, 185, 217, 217, 217, 241, 241, 242, 242, 268, 268, 351, 392, 392, 552, 552, 591, 601, 601, 602, 602, 625, 625

75. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 38, 46, 46, 50, 50, 54, 54, 54, 62, 69, 75, 110, 110, 110, 110, 110, 110, 121, 121, 133, 145, 177, 177, 172, 207, 207, 214, 225, 253, 261, 261, 309, 309, 310

76. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 11, 11, 17, 15, 15, 15, 20, 20, 20, 22, 26, 27, 27, 27, 35, 39, 39, 40, 40, 41, 43, 43, 43, 44, 44, 44, 48, 48, 51, 52, 59, 60, 61, 62, 62, 63, 64, 64, 64, 64, 69, 69, 70, 70, 71, 71, 71, 74, 81, 81, 81, 81, 83, 83, 91, 94, 94, 97, 98, 98, 98, 124, 135, 146, 147, 148, 148, 152, 156, 156, 174, 175, 176, 181, 189, 191, 193, 196, 203, 215, 215, 224, 226, 243, 262, 329, 371

77. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमश : 145, 145, 145, 145, 145, 145, 145, 145, 145, 145, 146, 146, 148, 148, 148, 148, 148, 148, 149, 149, 149, 149, 149, 149, 149

78. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 16, 18, 20, 25, 25, 33, 36, 37, 103

79. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 117, 117, 117, 118, 118, 118, 118, 118, 118, 134, 134, 134, 134, 134, 134, 134

80. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 334, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 335, 336, 336, 336, 336, 337, 337, 337, 337, 337, 337, 337, 337, 337

81. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 14, 22, 32, 38, 54, 72, 76, 100, 100, 109, 85, 85, 85, 85, 123, 162, 192, 196, 198, 199, 199, 202, 202, 202, 202, 202, 203, 202, 202, 202

82. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 9, 10, 13, 12, 13, 16, 18, 19, 21, 21, 21, 21, 24, 43, 43, 44, 59, 60, 67, 83, 87, 119, 120, 127, 127, 135, 135, 136, 143, 144, 148, 153, 153, 162, 166, 166, 119, 7

83. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 18, 18, 18, 18, 18, 18, 27, 32, 31, 32, 32, 32, 42, 44, 49, 59, 88, 103, 132, 133, 170, 176, 176, 176, 177, 189, 189, 192, 192, 192,

193, 194, 198, 198, 198, 220, 220, 220, 222, 223, 224, 224, 226, 227, 227, 228, 229, 229, 231, 231

84. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 14, 15, 15, 53, 55, 59, 96, 114, 147, 172, 14, 15, 15, 53, 54, 57, 146, 167

85. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 9, 11, 22, 24, 28, 31, 31, 31, 31, 31, 32, 32, 32, 32, 33, 35, 36, 36, 36, 38, 40, 40, 40, 41, 41, 41, 41, 41, 42, 44, 47, 47, 47, 47, 47, 47, 47, 47, 47, 48, 48, 49, 49, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 50, 51, 51, 52, 58, 58, 60, 59, 64, 64, 66, 66, 67, 69, 70, 70, 72, 72, 73, 73, 73, 75, 75, 75, 75, 75, 79, 79, 80, 83, 87, 90, 91, 92, 92, 93, 93, 93, 94, 96, 98, 112, 112, 112, 112, 114, 121, 121, 124, 125, 126, 126, 126, 135, 138, 140, 142, 148, 151, 156, 164, 164, 166, 167, 168, 168, 169, 173, 173, 176, 184, 184, 184, 186, 186, 186, 187, 187, 189, 189, 191, 192

86. दृष्टव्य : बंधक आत्माएं : पृ. सं. क्रमश : 68, 10, 74, 10, 94, 98, 18, 19, 103, 74, 108, 114, 114, 118, 134, 137, 164, 120, 12, 125, 124, 126, 133, 133

87. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 17, 20, 34, 36, 41, 47, 55, 66, 70, 74, 74, 76, 79, 88, 90, 98, 109, 110, 117, 131, 41, 151, 163, 202, 204, 206, 222, 229, 230, 232, 236, 266, 260, 283, 285, 289, 296, 303, 303, 303, 303, 304, 304, 306, 331, 347, 354, 365, 384, 384, 409, 410, 414, 414, 414, 418, 464, 468, 520, 521, 529, 537, 542, 544, 550, 546, 575, 576, 580, 590, 606, 607, 623

88. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 12, 15, 15, 15, 18, 20, 23, 32, 32, 33, 37, 39, 39, 40, 41, 54, 77, 80, 88, 94, 122, 137, 141, 145, 147, 173, 187, 198, 230, 242, 269, 320, 320, 323, 324, 327, 333, 339, 348, 351

89. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 11, 11, 12, 13, 14, 23,

25, 25, 26, 29, 31, 32, 33, 38, 42, 66, 75, 78, 78, 84, 85, 89, 90, 96, 117, 144, 146, 148, 166, 169, 181, 186, 200, 242, 265, 348।

90. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : : पृ. सं. क्रमश : 22, 33, 55, 58, 60, 61, 66, 71, 72, 90, 90, 94, 114, 116, 142, 157, 166, 178, 199, 206, 207, 208, 208, 221, 227, 237, 246, 256, 267, 284, 294, 315, 319, 363, 389, 412

91. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 10, 13, 26, 51, 59, 74, 74, 84, 89, 98, 106, 119, 141, 155, 155, 208, 220, 266, 270, 284, 286, 287, 298

92. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 13, 16, 21, 21, 23, 30, 31, 34, 35, 39, 40, 41, 41, 60, 67, 74, 79, 89, 102, 128, 132, 134, 147, 150, 181, 184

93. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 13, 13, 13, 14, 15, 16, 17, 17, 18, 24, 40, 41, 48, 50, 62, 71, 73, 83, 86, 88, 88, 91, 94, 98, 101, 132, 136, 136, 151, 163, 165, 168, 174, 175, 178, 183, 188, 191, 193, 199, 203, 226, 253, 254, 261, 265, 313, 331, 334, 368

94. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 13, 14, 17,21,21,24, 31, 31, 33, 40, 40, 45, 49, 68, 68, 72, 73, 83, 83, 84, 84, 93, 95, 108, 122, 133, 135, 137, 140, 145, 152, 154, 161, 172, 192, 193, 196, 202, 205, 210, 211, 212, 230, 232, 234, 235, 236, 236, 238, 240, 258, 274, 297, 298, 306, 308, 329, 339, 355, 372, 380, 403, 414, 431, 434, 453, 461, 466, 474, 475, 476, 477, 481, 486, 465

95. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 9, 9, 10, 16, 19, 23, 25, 34, 39, 39, 41, 45, 48, 54, 66, 68, 75, 76, 76, 83, 84, 85, 86, 92, 95, 109, 113, 128, 146, 155, 168, 171, 193, 217, 247, 250, 256, 265, 280, 326, 339, 342, 346, 356

96. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 95, 96, 111, 111, 112,

113, 107, 108, 130, 156, 166

97. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 10, 5, 6, 13, 27, 40, 41, 43, 45, 52, 53, 56, 64, 67, 79, 100, 114, 114, 116, 129, 132, 135, 138, 147, 159, 164, 164, 165, 168, 172, 173, 183

98. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 6, 7, 9, 13, 25, 106, 124, 125, 157, 168, 173, 209, 209, 221

99. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 21, 22, 26, 46, 48, 50, 50, 54, 61, 71, 79, 109, 93, 114, 127, 128, 131, 143, 158, 169, 192।

100. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमश : 26, 41, 59, 62, 100, 147, 149, 149

101. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 18, 96, 108, 124, 147, 160, 166, 175, 176, 177, 188, 217, 282, 276; 283, 283, 284, 284, 339, 364, 384, 446, 446, 454, 513, 513, 544, 555, 581, 622

102. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 22, 30, 61, 82, 119, 127, 133, 241, 193, 245, 245, 246, 276, 296, 301, 348

103. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 26, 38, 42, 96, 107, 109, 137, 153, 286, 362

104. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 15, 41, 66, 72, 96, 100, 126, 163, 208, 376, 477, 482

105. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 99, 100, 178, 288

106. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 8, 18, 10, 10, 19, 44, 45, 46, 112, 192

107. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 18, 20, 24, 55, 60, 105, 112, 157, 173, 135, 193, 291, 228, 261, 288, 337, 351, 31, 34।

108. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 103, 194, 195, 202, 213, 247,

203, 359, 424, 439, 492

109. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 132, 31, 28, 34, 45

110. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 5, 29, 76, 80, 87, 100, 103, 161, 56

111. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 14, 16, 21, 28, 28, 70, 105, 109

112. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 8, 20, 38, 40, 57, 58, 83, 95, 105, 109, 122, 122, 124, 132, 142, 212

113. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 16, 24, 113, 197

114. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 27, 86, 113

115. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 10, 16, 17, 34, 83

116. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 8, 12, 83, 120, 125, 140, 219।

117. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 38, 44, 39, 62, 71, 71, 82, 162, 165, 172

118. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 90, 112, 124, 157, 176, 236, 236, 249, 284, 294, 296, 334, 362, 377, 450, 555, 572

119. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 22, 30, 31, 82, 119, 169, 251, 275

120. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 14, 16, 81, 103, 109, 114, 204, 188, 207

121. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 16, 32, 61, 66, 82, 121, 182, 465

122. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 16, 31, 34, 58, 140, 146, 156, 265, 286, 323

123. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 216, 237, 246, 252, 292, 298

124. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 216, 237, 246, 252, 292, 298

125. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 41, 73, 38, 319

126. दृष्टव्य : : पृ. सं. क्रमश : 16, 28, 103, 212, 221

127. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 19, 37, 105, 131, 133, 146, 152, 171, 180, 228, 228, 239, 263, 277, 279, 286, 293, 299, 299, 300, 300, 300, 301, 301, 303, 304, 307, 319, 322, 338, 350, 354, 357, 367, 370, 370, 382, 386, 430, 468, 495, 513, 551, 551, 606

128. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 13, 32, 33, 35, 52, 102, 116, 239, 244, 246, 136

129. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 14, 20, 26, 34, 50, 54, 78, 103, 137, 144, 179, 196, 369

130. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 32, 39, 39, 51, 85, 152, 190, 221, 352, 355, 361, 422, 459, 476

131. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमश : 26, 40, 165, 238, 257

132. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 7, 8, 8, 9, 9, 16, 40, 165

133. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 32, 33, 95, 100, 103, 143, 147, 169, 179, 194, 210, 232, 233, 273

134. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमश : 16, 19, 61, 110, 131, 256

135. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 106, 110, 128, 144, 156, 245, 450

136. सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 5, 8, 31, 37, 36, 38, 47, 52, 56, 65, 77, 78, 80, 98, 99, 125, 114, 111, 142, 144

137. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 18, 35, 41, 24

138. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 9, 14, 37, 55, 148, 181

139. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 19, 43, 45, 100, 82, 157, 205, 29, 84, 68

140. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमश : 5, 79, 113, 31, 38, 144

141. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमश : 14, 14, 34, 105, 106, 38

142. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमश : 57, 58, 168, 212

143. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 90, 124, 166, 283, 276, 283, 284, 304, 334, 386, 551

144. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 581, 35, 35, 246

145. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 78, 103,68,20,196

146. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 16,32,15,61,182,163,376,476

147. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमश : 20,20,72,72,78,105,279,228,375

148. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमश : 8, 22, 22, 26, 66, 146, 348

149. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमश : 6, 128, 141, 169, 193, 392, 197, 329, 392

150. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमश : 41, 72, 125, 167, 211, 221, 317, 352, 459, 482, 483

151. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमश : 16, 28, 77, 79, 79, 79, 145, 153, 195

152. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमश : 273, 145, 130, 177, 217, 225, 255, 259, 260, 292

153. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमश : 17, 28, 40, 296, 370, 331, 450

154. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशे : 8, 40, 41, 49, 54, 76, 152, 56, 78

155. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमश : 15, 15, 155, 60

156. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 24, 66, 66, 67, 119, 125, 156

157. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 8, 10, 17, 92, 44, 88, 134, 134, 169, 160

158. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 38, 39, 67, 68, 95, 95, 121, 169, 178

159. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 173, 178, 193, 228, 268

160. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 38, 41, 40, 94, 94, 160, 178,

202, 281, 243

161. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 27, 89, 91, 92, 128, 152, 156, 221, 213, 265, 265

162. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 90, 120, 153, 168, 168, 174, 195, 555

163. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 118, 169, 199, 279, 286, 291, 44, 183, 280

164. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 58, 78, 88, 93, 129, 137, 153, 285, 289, 303

165. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 51, 73, 72, 97, 84, 105, 105, 112, 117, 156, 129, 184, 185, 451

166. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमशः 99, 174, 162, 174, 149, 161, 162, 300

167. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 12, 32, 33, 56, 125, 160, 152

168. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 18, 20, 21, 22, 24, 30, 30, 32, 32, 33, 44, 59, 62, 73, 124, 126, 144, 165, 179, 189, 190, 208, 210, 221, 239, 294, 332, 367, 418, 520, 529, 586, 592, 597, 599, 612

169. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 11, 17, 25, 37, 45, 125, 143, 143, 143, 151, 151, 180, 208, 209, 247, 306

170. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 14, 83, 92, 92, 93, 101, 109, 109, 153, 154,177,178, 181, 182, 194, 225, 236, 268, 279, 310, 356, 368, 389

171. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 26, 54, 56, 68, 68, 172, 175, 185, 190, 243, 285, 398, 404, 427

172. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमशः 119, 120, 124, 142, 268, 272, 279, 282

173. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 8, 17, 18, 19, 25, 25, 36, 79, 80, 87, 104, 107, 107, 110, 111, 136, 149, 165, 168,

172

174. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 186, 188, 205, 212, 217, 228, 247, 258, 268, 271, 275, 284, 287, 319

175. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 39, 93, 127, 259

176. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 13, 52, 77, 319, 368, 490

177. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमशः 56, 70, 85, 108

178. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 5, 7, 12, 14, 15, 24, 29, 40, 41, 46, 50, 51, 51, 59, 60, 81, 113, 107, 149, 156, 164।

179. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 15, 15, 17, 18, 20, 30, 34, 44, 58, 119, 125, 138, 157, 173

180. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 5, 9, 15, 32, 78, 176, 221, 229

181. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 15, 19, 32, 93, 120, 205, 63, 166, 54

182. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 19, 19, 19, 93, 93, 93, 93, 156, 162

183. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 10, 17, 22, 99, 100, 100

184. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 12, 12, 13, 13, 13, 16, 18, 74, 103

185. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 93, 93, 148, 155, 154, 177, 177

186. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 48, 90, 91, 133, 143, 171, 171, 171, 172, 262, 265, 279

187. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 21, 34, 34, 77, 48, 91, 93, 96, 127, 140, 146, 159, 175, 179, 182, 187, 222, 254, 257, 258, 261, 263, 271, 272, 237, 239, 274, 277, 277, 277, 280, 283, 283, 283, 283, 293, 296, 313, 326, 343, 420, 465, 471, 488, 488, 24, 43, 48, 113, 188, 257, 258,

272, 277, 277, 277, 277, 277, 284, 292, 295, 326, 327, 331, 340, 340, 352, 440, 449

188. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 15, 19, 36, 50, 81, 83, 84, 106, 200, 230, 230, 9, 9, 12, 15, 18, 18, 25, 27, 29, 33, 38, 44, 44, 45, 45, 46, 50, 51, 54, 58, 65, 107, 113, 127, 155, 174, 202, 218, 219, 230, 232, 240, 278, 281

189. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 29, 36, 54, 48, 57, 64, 85, 93, 139, 340, 342, 386, 386, 566, 20, 22, 25, 33, 33, 129, 29, 33, 41, 74,75,79,120,131,139,194, 198, 215, 226, 271, 338, 504, 545

190. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 43, 46, 52, 59, 59, 68, 114, 122, 145, 155, 158, 197, 198, 244, 252, 329

191. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 14, 37, 68, 85, 107, 107, 107, 107, 107, 107, 107, 107, 235, 259, 19, 21, 25, 25, 33, 34, 40, 68, 106, 70, 75, 13, 143, 160, 160, 169, 171, 199, 228, 360, 360, 384

192. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 123, 123, 170, 12, 18, 19, 19, 170, 184, 194, 227, 252, 273, 273, 260, 364

193. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 7, 11, 42, 44, 47, 56, 56, 89, 68, 68, 81, 103, 119, 100, 114, 131, 131, 134, 135, 163, 108।

194. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 7, 8, 9, 10, 20, 34, 38, 40, 59, 59, 72, 79, 94, 99, 102, 141, 169, 184

195. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 5, 11, 11, 14, 19, 23, 34, 43, 44, 57, 82, 82, 83, 100, 103, 124, 126, 149, 155, 155, 171, 178, 211, 234, 243, 246

196. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 15, 21, 27, 46, 50, 13, 14, 15, 17, 30, 59, 55, 61, 75, 89, 58, 61, 84, 128, 135, 143, 132, 135, 143, 164, 165, 166, 166, 170, 172, 185, 190

197. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमशः 8, 10, 12, 19, 38, 83, 83, 84, 143, 149, 152, 70

198. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 9, 9, 7, 11, 13, 15, 16, 16, 21, 22, 18, 22, 24, 30, 31, 30, 38, 41, 44, 44, 64, 61, 65, 66, 68, 73, 84, 88, 100, 107, 110, 113, 110, 125, 130, 132, 123, 123, 138, 137, 156, 146, 149, 163, 161, 166, 171, 172, 192, 189, 196, 217, 231, 254, 265, 280, 287, 288, 307, 313, 314, 317, 317, 332, 351

199. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 13, 13, 16, 16, 18, 24, 27, 58, 62, 67, 110, 209, 216, 253, 266, 277, 292, 357, 378

200. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 14, 30, 28, 36, 40, 64, 74, 77, 85, 121, 133, 186, 211, 239, 275, 313, 359, 482, 496

201. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 17, 26, 42, 47, 90, 92, 109, 110, 117, 140, 163, 198, 202, 220, 240, 255, 266, 270, 279, 292, 293, 307, 326, 338, 366, 374, 378, 396, 466, 514, 534, 571, 576, 590

202. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 6, 15, 37, 20, 120, 122, 144, 124, 159, 173, 193, 174, 179, 259, 220, 281, 291, 318, 329, 125

203. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 11, 12, 16, 16, 17, 21, 23, 26, 36, 38, 42, 85, 103, 134, 141, 147, 193, 376, 381

204. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 292, 305, 317, 325, 11, 15, 28, 31, 39, 50, 110, 127, 114, 128, 130, 157, 176, 185, 197, 201, 209, 209, 229, 232, 263, 354, 389, 401

205. दृष्टव्य : गोबिन्द-गाथा : पृ. सं. क्रमशः 27, 74, 83, 106, 106, 106, 107, 119, 147, 209, 215, 266, 295, 322, 328, 269

206. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 8, 24, 38, 70, 101, 109, 111, 139, 153, 163, 188, 191, 12, 193

207. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 16, 12, 134
208. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 10, 29, 42, 116
209. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 6, 139, 220
210. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 69, 162, 171, 172
211. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 34, 44, 72, 124, 126, 127, 142, 146, 167, 249, 337, 354
212. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 17, 88, 172, 259
213. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 21, 24, 36, 26, 269, 381, 460
214. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 27, 71, 139, 200, 158, 297, 355, 428, 580, 587
215. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 43, 52, 52, 52, 93, 99, 326
216. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 20, 224, 308, 381
217. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 16, 34, 72, 118, 245, 247, 302, 327
218. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमशः 15, 29, 37, 51, 90, 200
219. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 12, 43, 69, 172
220. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 83, 149, 71, 131
221. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 5, 5, 13, 116
222. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 7, 7, 8, 9, 11, 16, 28, 30, 38, 42, 43, 46, 87, 108, 156, 168, 173, 220, 223
223. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 117, 16, 118, 188
224. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 26, 65, 93, 93, 117, 127, 131, 136, 132, 147, 174, 186, 291, 305, 328
225. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 16, 17, 19, 23, 32, 32, 32, 36, 43, 44, 46, 49, 51, 51, 51, 52, 53, 60, 60, 61, 62, 63, 64, 64, 70, 75, 84, 84, 91, 100, 124, 126, 126, 136, 144, 149, 160, 167, 172, 183, 183, 185, 214, 230, 244, 248, 248, 252, 257, 265, 265, 265, 265, 265, 266, 267, 270, 269, 277, 272, 287, 291, 302, 351

226. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 15, 17, 28, 30, 30, 33, 34, 40, 42, 44, 54, 57, 59, 70, 73, 85, 86, 87, 88, 98, 110, 113, 121, 133, 141, 141, 142, 147, 154, 155, 173, 186, 206, 213, 221, 231, 253, 253, 254, 259, 261, 262, 262, 280, 282, 282, 284, 293, 295, 297, 308, 314, 314, 319, 320, 338, 339, 339, 345, 366, 372, 388, 420, 429, 431, 433, 434, 434, 436, 436, 436, 438, 440, 444, 458, 476, 478, 481, 491

227. दृष्टव्य : पीतांबरा: पृ. सं. क्रमशः 19, 19, 27, 29, 33, 40, 64, 81, 82, 93, 137, 142, 149, 155, 157, 157, 169, 169, 180, 195, 220, 243, 243, 243, 246, 247, 250, 271, 282, 283, 284, 284, 297, 319, 323, 355, 372, 391, 392, 396, 408, 416, 424, 428, 435, 452, 495, 541, 605

228. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 52, 191, 278, 282, 293, 312, 319, 320, 22, 61, 169, 172

229. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 39, 59, 60, 107, 110, 112, 156, 159, 162, 175, 208, 211, 213, 217, 218, 278, 287, 326, 367, 412, 428, 447

230. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमशः 46, 60, 82, 83, 115, 223, 236, 242, 249, 261, 293

231. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 57, 106, 106, 107, 167, 196, 332

232. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 7, 82, 88, 122, 122, 181, 188

233. दृष्टव्य : पीतांबरा : पृ. सं. क्रमशः 21, 70, 165, 70, 443, 30, 142, 107, 42, 46, 155, 308, 388, 393, 348, 422, 154

234. दृष्टव्य : पहला सूरज : पृ. सं. क्रमशः 12, 22, 132, 241

235. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 53, 28, 279, 280

236. दृष्टव्य : का के लागूं पांव : पृ. सं. क्रमशः 20, 20, 50, 51, 52, 53, 52, 52, 318, 94, 90, 62, 200

237. दृष्टव्य : गोबिन्द गाथा : पृ. सं. क्रमशः 30, 31, 131, 170, 170, 181, 89, 183, 184, 186, 205, 78, 278, 302, 307, 307, 308, 312

238. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 44, 109, 173

239. दृष्टव्य : प्रथम पुरुष : पृ. सं. क्रमशः 82, 82, 82, 80, 318, 28, 72, 142, 183, 298, 300, 308, 358, 365, 21, 45, 78, 257, 186

240. दृष्टव्य : पुरुषोत्तम : पृ. सं. क्रमशः 17, 21, 21, 18, 25, 164, 263, 416, 194

241. दृष्टव्य : पवनपुत्र : पृ. सं. क्रमशः 11, 16, 63, 87, 249, 299, 318, 199, 231, 232, 233, 119, 234, 242-243, 252, 15, 190, 250

242. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 28, 34, 36

243. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 107, 8, 43, 52, 107

244. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 196, 53

245. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमशः 20, 67

246. दृष्टव्य : देख कबीरा रोया : पृ. सं. क्रमशः 236, 308

247. दृष्टव्य : सूरज के आने तक : पृ. सं. क्रमशः 16, 43, 43, 44, 63, 44, 21, 72, 33, 108, 119, 121, 88, 88, 90, 127, 90, 91, 131, 91, 92, 146, 159, 162, 162, 164, 100, 103

248. दृष्टव्य : नदी नहीं मुड़ती : पृ. सं. क्रमशः 10, 11, 11, 13, 14, 41, 54, 89, 89, 90, 89, 100, 103, 109, 121, 122, 123, 125, 134, 149, 158

249. दृष्टव्य : एक और अहल्या : पृ. सं. क्रमशः 11, 14, 16, 18, 20, 26, 30, 37, 51, 51, 52, 80, 88, 90, 93, 93, 93, 95, 100, 100, 102, 103, 104, 104, 115, 130, 133, 133, 146, 164, 164, 165, 165, 165, 175, 198, 218, 221, 221, 222, 224, 224, 224, 224, 224, 224, 224, 235, 241, 242, 133, 220, 229

250. दृष्टव्य : लक्ष्मण-रेखा : पृ. सं. क्रमशः 10, 14, 14, 16, 24, 24, 38, 100, 100, 100, 102, 83, 83, 84, 88, 118, 118, 119, 120, 129, 130, 130, 137, 139, 141, 142, 142, 142, 149, 157, 163, 163, 163, 167, 174, 175, 197, 201, 201, 112

251. दृष्टव्य : बंधक आत्माएँ : पृ. सं. क्रमशः 14, 16, 40, 22, 65, 65, 65, 65, 68, 10, 111, 147, 133

252. दृष्टव्य : शान्तिदूत : पृ. सं. क्रमशः 9, 27, 27, 29, 35, 53, 53, 53, 60, 68, 69, 80, 81, 83, 123, 90, 95, 119, 121, 123, 123, 124, 147, 147

253. विवेचनात्मक अध्ययन जायसी : भारतभूषण 'सरोज' एवं डॉ. कृष्णदेव शर्मा : पृ. 161

******